नराकास, गांधीनगर

गांधीनगरी

अंक–5, मार्च–2026

25वीं छमाही बैठक की झलकियां

:: संरक्षक ::

श्री सुनील सिन्हा
अध्यक्ष, नराकास गांधीनगर एवं
मुख्य शिक्षण अधिकारी
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

:: प्रधान संपादक ::

श्री वी सी जैन
प्रमुख-बड़ौदा एपेक्स अकादमी एवं
उपाध्यक्ष, नराकास गांधीनगर

:: संपादक मंडल ::

डॉ. जया शर्मा
होटल प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद

डॉ. संध्या दवे
प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान

श्री मनीष शर्मा
राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान

श्री कुणाल देराश्री
राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र

श्री राकेश शर्मा
बड़ौदा एपेक्स अकादमी

श्री विनोद कुमार पांडे
राष्ट्रीय न्यायालयिक विज्ञान
विश्वविद्यालय

सुश्री रूमी देसवाल
बैंक ऑफ इंडिया

दिनेश गहलोत
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय-3

:: संपादक ::

सर्वेश कुमार तिवारी
मुख्य प्रबंधक - राजभाषा
बड़ौदा एपेक्स अकादमी, गांधीनगर
सदस्य सचिव - नराकास, गांधीनगर

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank of Baroda
भारत का अंतर्राष्ट्रीय बैंक

इस अंक में

नराकास गांधीनगर की पत्रिका — अंक 5, मार्च 2026

संदेश	2
अध्यक्ष का संदेश	3
उपाध्यक्ष का संदेश	4
स्वास्थ्य के क्षेत्र में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस	5-6
बैंकिंग चेक प्रणाली : एक मार्गदर्शिका	7-8
हिंदी प्रेमी की कलम से	9-10
कविता - भाषाई विविधता और समावेशन	10
पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला	11
भारत के समावेशी और सतत विकास में सहकारी समितियों की भूमिका	12-13
कविताएं - प्रकृति सिखाती है / नवाचार से आत्मनिर्भर भारत	14
आलेख - दो दिवसीय अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी	15
गतिविधियां - कवि सम्मेलन का आयोजन	16
आलेख - खुशी	17
आलेख - कृत्रिम बुद्धिमता आधारित ई-गवर्नेंस	18-20
छमाही गतिविधियां	21-23
आलेख - जेनरेशन-Z	24-25
आलेख - तृणमूल नवप्रवर्तन और रोजगार-समृद्धि की ओर कदम	26
तकनीकी - डाटा सेंटर का महत्व	27-29
आलेख - प्राचीन पारंपरिक ज्ञान द्वारा रोगाणुरोधी प्रतिरोध का समाधान	30-31
आलेख - मानव गति का विज्ञान	32-33
आलेख - जीवन में अनुशासन का महत्व	34-35
आलेख - पढ़ने की घटती आदत	36-37
सदस्य मानकीकरण : गुणवत्ता नियंत्रण और आधुनिक संगठनों में निरंतर सुधार की नींव	38-39
आलेख - विद्यालयी शिक्षा : जीवन का अहम पड़ाव	40
आलेख - सचेतना बनाम निर्णायकता:जीवन की रस्सी पर संतुलन	41-42
कार्यालयों की सूची	43-44

पत्रिका में प्रकाशित विचार संबंधित लेखकों के अपने विचार हैं,उनसे समिति का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

संदेश...

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम)
केंद्रीय सदन, छठा तल, 'ए' विंग, सेक्टर-10, सीबीडी बेलापुर, नवी मुंबई 400 614
Government of India, Ministry of Home Affairs.
Deptt. Of Official Language
Regional Implementation Office (W) Kendriya Sadan,
6th Floor, A-Wing Sector-10, CBD' Belapur, Navi Mumbai - 400 614

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गांधीनगर द्वारा **गांधीनगरी पत्रिका** के **पांचवें अंक** का प्रकाशन किया जा रहा है। यह सराहनीय कदम है। यह इस बात का प्रतीक है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति अपने दायित्वों के प्रति सजग है। हमारा यह संवैधानिक दायित्व भी है कि हम कार्यालयों में हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार करें। पत्र-पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में और नई प्रतिभाओं को उजागर करने में अहम भूमिका निभाती हैं। हिंदी संघ की राजभाषा है जो कि राष्ट्र की एकता को एक सूत्र में बांधने में सक्षम है। संविधान में उल्लिखित राजभाषा के प्रावधानों के अनुरूप राजभाषा नियम / अधिनियम के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी हम सभी की है।

मैं इस शुभ कार्य के लिए समिति के अध्यक्ष एवं पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय,

(हरीश सिंह चौहान)
उप निदेशक (कार्यान्वयन)
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम),मुंबई

अध्यक्ष का संदेश...

प्रिय साथियो,

गांधीनगर नराकास की पत्रिका **'गांधीनगरी'** के **पांचवे अंक** के माध्यम से आपको संबोधित करने का अवसर पाकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इस पत्रिका के प्रथम अंक से ही आपसे जुड़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। आप सभी जानते है कि 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने सर्वसम्मति से हिंदी को राजभाषा दर्जा देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया था । इस दिन के महत्व को ध्यान में रखते हुए हम प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं। इसी उपलक्ष्य में सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा भी हिंदी दिवस हर साल धूमधाम से मनाया जाता है।

हमारे लिए यह गौरव का विषय है कि समिति ने अभी तक बहुत ही अच्छे तरीके से कार्य किया है जिसके फलस्वरूप हमारी समिति को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 'ख' क्षेत्र में नराकास भाषा सम्मान द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार 13, सितंबर, 2025 को गांधीनगर में आयोजित पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर भारत के वर्तमान केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल के कर कमलों से आप सब की उपस्थिति में प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। साथ ही इस अवसर पर हमें सर्वश्रेष्ठ नराकास के रूप में भी सम्मानित किया गया । यह सम्मान इस बात का प्रतीक है कि नराकास गांधीनगर के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन को लेकर पूरी सजगता है और सदस्य कार्यालय आपसी समन्वय में अच्छा कार्य कर रहे हैं।

आप सभी सदस्य कार्यालय प्रमुखों से अनुरोध है कि आप अपने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को इसी तरह से बढ़ावा दें तथा समिति की छमाही बैठकों में अवश्य उपस्थित होने का कष्ट करें ताकि नराकास गांधीनगर के मंच से समग्र रूप से राजभाषा को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करने के लिए सार्थक चर्चा की जा सके।

पत्रिका का यह पांचवां अंक समकालीन रचनाओं के साथ-साथ पठनीय सामग्री से परिपूर्ण है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित,

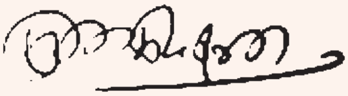

सुनील सिन्हा
अध्यक्ष -नराकास गांधीनगर एवं
मुख्य शिक्षण अधिकारी
बैंक ऑफ बड़ौदा

उपाध्यक्ष का संदेश...

प्रिय साथियो,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गांधीनगर द्वारा गृह पत्रिका **'गांधीनगरी'** के **पांचवें अंक** का प्रकाशन किया जा रहा है। नराकास गांधीनगर की पत्रिका के माध्यम से जुड़ने का अवसर मुझे प्राप्त हो रहा है यह मेरे लिए हर्ष का विषय है ।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने में गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन एक सराहनीय कदम है। यह पत्रिका नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग-प्रसार को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों में अपना दैनिक कार्य राजभाषा हिंदी में करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी।

पत्रिका के इस अंक में हमने स्वास्थ्य, बैंकिंग, सहकारी समिति, कार्य जीवन संतुलन, तकनीकी, नवोन्मेषिता और ज़ेन जी पर ध्यान केन्द्रित करते हुए विविधतापूर्ण आलेख पाठकों के लिए शामिल किया है। इस अंक में पिछली छमाही के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों का भी सचित्र चित्रण भी किया गया है। आशा है यह अंक आप सभी को पसंद आएगा । पत्रिका को और गुणवत्तापूर्ण बनाने की दिशा में मुझे आप सभी की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी ।

मैं इस पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई देता हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

(वी सी जैन)
प्रमुख- बड़ौदा एपेक्स अकादमी

स्वास्थ्य के क्षेत्र में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस

डॉ. मनिका शर्मा एवं एआई एण्ड डिजिटल ट्विन टीम
प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान, गांधीनगर

स्वास्थ्य के क्षेत्र में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI) बड़ी क्रांति लाने की क्षमता रखता है। AI का इस्तेमाल बड़ी तेज़ी से बढ़ता जा रहा है। इस तकनीक की मदद से रोगों की पहचान, निदान और उपचार में पहले से कहीं अधिक सटीकता और गति हासिल की जा रही है।

वर्तमान में स्वास्थ्य सेवा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रमुख अनुप्रयोग

निदान और उपचार : कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) स्वास्थ्य सेवा में नैदानिक इमेजिंग के परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से बदल रही है। यह तकनीक, जो परिष्कृत एल्गोरिदम और मशीन लर्निंग को एकीकृत करती है, एआई में चिकित्सा छवियों (एक्स-रे, एमआरआई, आदि) का बहुत ही सटीकता से विश्लेषण करने की क्षमता है। इस वजह से बीमारी का पता, पहले से ज्यादा सही ढंग से और जल्दी लग सकता है।

दवाओं की खोज : एआई आधारित तरीके बड़े-बड़े जैविक डेटा का विश्लेषण करने और संभावित दवाओं की पहचान करने में मदद करते हैं। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करके, दवा खोजने की प्रक्रिया अब पहले से ज्यादा तेज और बेहतर हो गई है। दवा बनाने वाली कंपनियाँ अब एआई का इस्तेमाल, दवाओं के विकास को आसान बनाने और सही दवा अणुओं को खोजने में कर रही हैं। इसके अलावा, एआई की मदद से नैदानिक परीक्षणों के लिए सही मरीजों की पहचान करने के लिए पूर्वानुमानात्मक विश्लेषण का उपयोग किया जा सकता है।

चिकित्सा अनुसंधान : बड़ी मात्रा में उपलब्ध डेटा से महत्वपूर्ण जानकारी निकालना चिकित्सा अनुसंधान में एआई का एक बहुत महत्वपूर्ण और मौलिक अनुप्रयोग है। डिजिटल स्वास्थ्य से जुड़ा डेटा, चिकित्सा विज्ञान के लिए एक सोने की खान है, जहाँ मशीन लर्निंग की मदद से इलाज के तरीके, बीमारी का पता लगाने और रोग की बढ़ौतरी को समझने में मदद मिलती है। इससे दवाओं की परस्पर क्रिया और उनके दुष्प्रभाव क्या हो सकते हैं, इसे भी पहचाना जा सकता है। उदाहरण के तौर पर, यूनाइटेड किंगडम में उनके इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड्स ने ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर और टाइप 2 मधुमेह जैसी बीमारियों के समूहों में सह-रुग्णता (एक साथ दो या अधिक बीमारियाँ) की पहचान की है।

इसके अलावा, एआई का इस्तेमाल भविष्यवाणी करने वाले विश्लेषण, प्रशासनिक कार्य और रोबोटिक्स जैसे क्षेत्रों में भी हो रहा है।

स्वास्थ्य सेवा में एआई की चुनौतियाँ

डेटा की गुणवत्ता और पक्षपात: एआई सिस्टम की कामयाबी इस बात पर निर्भर करती है कि उसे सिखाने के लिए इस्तेमाल किया गया डेटा कितना सही और पूरा है। अगर डेटा में गलतियाँ या झुकाव (पक्षपात) होंगे, तो AI के परिणाम भी सही नहीं होंगे। इसलिए, सटीक और पूर्वाग्रह-मुक्त डेटा का इस्तेमाल करना और गलत जानकारी से बचना बहुत जरूरी है।

नैतिकता और नियम-कानून : स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई का इस्तेमाल करते समय सही नियम और नैतिक मानक बनाना जरूरी है ताकि मरीजों की सुरक्षा हो, उनका डेटा सुरक्षित रहे, और एआई सिस्टम जिम्मेदारी से काम करें ।

नैतिकता और नियामक ढांचे : स्वास्थ्य सेवा में एआई का सही इस्तेमाल सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट नैतिक नियम और सरकारी दिशा-निर्देश बनाना बहुत जरूरी है। ये नियम मरीज की सुरक्षा, डेटा की गोपनीयता और एआई सिस्टम के जिम्मेदार इस्तेमाल को सुनिश्चित करते हैं।

गोपनीयता और सुरक्षा : स्वास्थ्य सेवा में एआई का उपयोग करते समय रोगी के डेटा की सुरक्षा और उसकी गोपनीयता और सुरक्षा सुनिश्चित करना सर्वोपरि है।

भारत में AI क्यों ? स्वास्थ्य, विश्व स्तर पर मानव जीवन के रखरखाव और उसकी स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है। एक राष्ट्र तभी फल-फूल सकता है, जब उसकी जनसंख्या स्वस्थ हो। भारत दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश है, जहाँ क्षेत्रीय, व्यावसायिक और जलवायु परिस्थितियाँ विविध हैं, इसलिए एक मज़बूत स्वास्थ्य सेवा प्रणाली का होना एक बड़ी चुनौती है।

भारत स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों की कमी से जूझ रहा है, उदाहरण के लिए, रेडियोलॉजिस्टों की उपलब्ध संख्या की तुलना में मरीजों की संख्या बहुत अधिक है। यह असंतुलन निदान के लिए प्रतीक्षा समय बढ़ा देता है, जिससे समय पर इलाज शुरू नहीं हो पाता और मरीजों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर पड़ता है।

पिछले कुछ वर्षों में हुए कई शोध अध्ययनों से यह तथ्य सामने आया है कि डिजिटल और कम्प्यूटेशनल तकनीक के साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतर पहुंच सुनिश्चित करने और इस क्षेत्र में मौजूद अंतर को पाटने की अपार क्षमता है।

एआई, भारत में बेहतर स्क्रीनिंग, रोग की पहचान और निदान के लिए एक उपयोगी निर्णय लेने वाला उपकरण बन सकता है। यह दृष्टिकोण भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था को इस तरह बदलने के उद्देश्य से जुड़ा है कि वह सिर्फ शहरों में ही नहीं, बल्कि गांवों और छोटे कस्बों में भी लोगों को सस्ती और आसान इलाज की सुविधा दे सके।

एनटीईपी इंडिया (The National Tuberculosis Elimination Program of GOI) के लिए प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान (IPR) का एआई समाधान

एनटीईपी इंडिया (भारत सरकार का राष्ट्रीय तपेदिक उन्मूलन कार्यक्रम) के लिए प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान (IPR) ने एक एआई समाधान बनाया है। इसमें डीप कन्वोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क (CNN) नाम की खास तकनीक का इस्तेमाल किया गया है, जो छाती के एक्स-रे में असामान्यताओं को अपने आप पहचानने और उनका पता लगाने में बहुत प्रभावी है। यह तकनीक सामान्य और बीमार दोनों तरह के मामलों में सही पहचान करती है और इसकी सटीकता इतनी है कि यह फेफड़ों की बीमारियों का पता लगाने में विशेषज्ञ रेडियोलॉजिस्ट के बराबर है।

छाती रेडियोलॉजी में हाल की उपलब्धियाँ मुख्य रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) द्वारा संचालित हैं, खासकर कन्वोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क (CNN) तकनीक पर। ये तकनीकें छाती के एक्स-रे से वक्ष क्षेत्र की असामान्यताओं को अपने आप बहुत अच्छी तरह से पहचान सकती हैं। इन गहन शिक्षण मॉडल्स ने तपेदिक, फेफड़ों के कैंसर, निमोनिया और अंतरालीय फेफड़ों की बीमारी जैसी स्थितियों की पहचान में विशेषज्ञ रेडियोलॉजिस्टों के बराबर सटीकता का प्रदर्शन किया है।

(AI) द्वारा संचालित हैं, खासकर कन्वोल्यूशनल न्यूरल नेटवर्क (CNN) तकनीक पर। ये तकनीकें छाती के एक्स-रे से वक्ष क्षेत्र की असामान्यताओं को अपने आप बहुत अच्छी तरह से पहचान सकती हैं। इन गहन शिक्षण मॉडल्स ने तपेदिक, फेफड़ों के कैंसर, निमोनिया और अंतरालीय फेफड़ों की बीमारी जैसी स्थितियों की पहचान में विशेषज्ञ रेडियोलॉजिस्टों के बराबर सटीकता का प्रदर्शन किया है।

बड़े डेटा सेट पर प्रशिक्षित AI मॉडल पैटर्न और असामान्यताओं को उच्च सटीकता और विशेषता के साथ पहचान सकते हैं, जिससे रेडियोलॉजिस्ट को रोग का शीघ्र पता लगाने और नैदानिक त्रुटियों को कम करने में मदद मिलती है। हालांकि, AI आधारित असामान्यता पहचान में अभी भी कुछ चुनौतियाँ हैं, जैसे कि डेटा में असंतुलन, शुरुआती चरण के क्षति का पता लगाना और समान दिखने वाली बिमारियों के बीच अंतर करना।

प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान (IPR) ने **भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद** (ICMR), दिल्ली और भारत के 10 राज्यों के 20 चिकित्सा संस्थानों के साथ मिलकर एक एआई टूल **डीपसीएक्सआर** विकसित किया है। यह एक डीप लर्निंग आधारित प्रणाली है, जिसे छाती के एक्स-रे (CXR) चित्रों की मदद से **फेफड़ों की बीमारियों** जैसे **तपेदिक, गांठें और फेफड़ों का कैंसर** पहचानने के लिए तैयार किया गया है। यह एआई टूल वयस्कों और बच्चों-दोनों के एक्स-रे का विश्लेषण कर सकता है। यह तकनीक भारत सरकार के **राष्ट्रीय तपेदिक उन्मूलन कार्यक्रम** (NTEP) से भी जुड़ी है और उसमें तकनीकी सहायता देती है। डीपसीएक्सआर ने कठोर प्रशिक्षण, परीक्षण और सत्यापन किया है। डीपसीएक्सआर को देश के सभी चार प्रमुख क्षेत्रों (उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम) के 10 से अधिक राज्यों, 18 अस्पतालों और 50 से ज़्यादा रोग श्रेणियों से जुटाए गए बड़े एक्स-रे डेटा सेट पर प्रशिक्षण दिया गया है। इस प्रणाली को कई बार परीक्षण और मूल्यांकन की प्रक्रिया से गुज़ारा गया है, जिसमें **भारत के सरकारी सर्वेक्षण डेटा** का भी इस्तेमाल हुआ है।

राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम (एनटीईपी), जिसे पहले संशोधित राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम (आरएनटीसीपी) के रूप में जाना जाता था, भारत सरकार की एक राष्ट्रीय पहल है जिसका उद्देश्य देश से **क्षय रोग (टीबी)** को पूरी तरह खत्म करना है। यह कार्यक्रम टीबी के निदान, उपचार और रोकथाम के लिए व्यापक रणनीतियों पर केंद्रित है, जिसका लक्ष्य टीबी से होने वाली बीमारी और मृत्यु दर दोनों को कम करना है।

डीपसीएक्सआर में सभी अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में रोगी और डॉक्टर के अनुपात के मौजूदा अंतर को भरने के लिए व्यापक रूप से उपयोग किए जाने की क्षमता है। इसे स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्क्रीनिंग टूल के रूप में उपयोग हेतु स्वीकृति मिल गई है, जो भारत में व्यापक रूप से अपनाने के लिए उपयुक्त है। एनटीईपी (भारत का राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम) के अंतर्गत भारत की बड़ी आबादी की स्क्रीनिंग के लिए इसका उपयोग करने हेतु केंद्रीय टीबी प्रभाग (सीटीडी), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को भी इसकी अनुशंसा की गई है।

आईपीआर ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से जनता के लिए एनटीईपी (medcloud.ipr.res.in) के लिए एक 'सॉफ्टवेयर-ए-सर्विस' (SaaS) सिस्टम, यानी क्लाउड सर्वर आधारित डीपसीएक्सआर समाधान, शुरू किया है। इससे स्कैन किए गए एक्स-रे की व्याख्या करके मिनटों में, यानी व्यक्ति के स्वास्थ्य सेवा केंद्र छोड़ने से पहले, एआई द्वारा तैयार रिपोर्ट प्राप्त की जा सकती है। वर्तमान में यह तकनीक विभिन्न राज्यों के 40 से अधिक केंद्रों में इस्तेमाल हो रही है, जहां 40,000 से ज्यादा एक्स-रे की जांच की गई है।

यह एआई सभी प्रकार की सीएक्सआर छवियों (डिजिटल छवियों के अलावा स्कैन की गई जैव रासायनिक फिल्में) को समझ सकता है, जो इस उपकरण के प्रदर्शन को बढ़ाता है और यह खास बात इसे अन्य उपकरणों से अलग बनाती है।

बड़े डेटासेट पर कई स्वतंत्र सत्यापन, स्क्रीनिंग टूल के रूप में WHO लक्ष्य उत्पाद प्रोफ़ाइल के अनुसार स्वीकार्य संवेदनशीलता और विशिष्टता के संदर्भ में इसके सुसंगत प्रदर्शन को दर्शाते हैं। इस उपकरण को बड़े डेटा पर कई बार परखा गया है और इसकी जांच विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के मानकों के अनुसार बहुत सटीक और भरोसेमंद पाई गई है। यह एआई टूल ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से काम करता है और विस्तृत रिपोर्ट तैयार करता है, इसलिए इसे ग्रामीण इलाकों और सीमित संसाधन वाले स्थानों के लिए भी आसानी से इस्तेमाल किया जा सकता है।

बैंकिंग चेक प्रणाली: एक मार्गदर्शिका

डॉ. कुमार विकास
मुख्य प्रबंधक
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

समय के साथ बैंकिंग व्यवस्था निरन्तर परिवर्तित एवं आधुनिक होती रही है। आज जबकि डिजिटल भुगतान की विविध विधियाँ प्रचलित हो चुकी हैं, तब भी चेक एक महत्वपूर्ण एवं विश्वसनीय भुगतान साधन के रूप में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। भारत में प्रतिदिन लाखों चेक प्रचलन में आते हैं और उनका निपटान (क्लियरिंग) किया जाता है।

इस प्रक्रिया को तीव्र, सुरक्षित तथा पारदर्शी बनाने हेतु भारतीय रिज़र्व बैंक ने चेक ट्रंकेशन प्रणाली (सीटीएस) का आरम्भ किया। इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य चेक के भौतिक आदान-प्रदान को समाप्त करना तथा उसकी इलेक्ट्रॉनिक छवि के आधार पर निपटान करना है। इससे न केवल ग्राहकों को शीघ्र भुगतान की सुविधा प्राप्त होती है, अपितु बैंकों एवं संपूर्ण वित्तीय तंत्र की कार्यक्षमता और विश्वसनीयता भी बढ़ती है।

वर्ष 2010 में लागू किए गए सीटीएस-2010 मानक इस दिशा में एक ऐतिहासिक पहल सिद्ध हुए। इन मानकों के अन्तर्गत वॉटरमार्क, सूक्ष्म अक्षरांकन, यूवी इंक, वॉइड पैंटोग्राफ आदि जैसी सुरक्षा विशेषताओं का समावेश किया गया है, जिससे धोखाधड़ी एवं जालसाजी की संभावनाएँ न्यूनतम हो जाती हैं।

हाल ही में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा घोषित सतत समाशोधन प्रणाली (Continuous Clearing System) इस दिशा में एक और महत्त्वपूर्ण कदम है, जिसके परिणामस्वरूप निकट भविष्य में ग्राहकों को चेक भुगतान की सुविधा लगभग वास्तविक समय (Real-Time) में उपलब्ध होगी।

चेक का महत्त्व: चेक वित्तीय लेन-देन का एक महत्वपूर्ण और पारंपरिक साधन है। डिजिटल युग में भी चेक का उपयोग अग्रलिखित कारणों से प्रासंगिक है:

कानूनी मान्यता : चेक परक्राम्य लिखत अधिनियम, 1881 (Negotiable Instruments Act, 1881) के तहत कानूनी मान्यता प्राप्त है । यह एक लिखित आदेश है जिसमें बैंक को किसी निर्दिष्ट व्यक्ति को धनराशि भुगतान करने का निर्देश होता है।

सुविधाजनक: विशेषकर बड़ी राशि के भुगतान या संस्थागत (Corporate/Institutional) लेन-देन में चेक अत्यंत सुविधाजनक है। नकदी लेन-देन की तुलना में सुरक्षित और प्रमाणिक साधन है।

विश्वसनीय: चेक एक हस्ताक्षरित और दिनांकित आदेश है जिसे बैंक पालने के लिए बाध्य है। यह नकद के बजाय डिजिटल और लिखित रिकॉर्ड प्रदान करता है। रिटेल भुगतान प्रणाली में उपयोग: भारत में लाखों चेक प्रतिदिन बैंकिंग चैनलों से क्लियर होते हैं। व्यापार, व्यक्तिगत और सरकारी भुगतान में चेक की भूमिका महत्वपूर्ण है।

सीटीएस (चेक ट्रंकेसन सिस्टम) क्या है? सीटीएस का पूरा नाम है चेक ट्रंकेशन सिस्टम इसका अर्थ है: चेक के भौतिक प्रवाह (Physical Movement) को रोकना और उसकी इलेक्ट्रॉनिक इमेज को क्लियरिंग हाउस तथा देयक बैंक तक भेजना। यानी अब चेक को भौतिक रूप में शाखाओं के बीच भेजने की आवश्यकता नहीं होती। यह प्रक्रिया तेज, सुरक्षित और पारदर्शी है।

सीटीएस प्रक्रिया का चरणबद्ध विवरण : चरण 1: ग्राहक द्वारा चेक जमा करना, **चरण 2:** इमेजिंग और एमआईसीआर (MICR) डेटा कैप्चर, **चरण 3:** डेटा को क्लियरिंग हाउस को भेजना, **चरण 4:** देयक बैंक की जाँच और भुगतान, **चरण 5:** इलेक्ट्रॉनिक निपटान (Settlement)

सीटीएस और इलेक्ट्रॉनिक चेक के लिए संशोधन: अधिनियम में यह स्पष्ट किया गया कि इलेक्ट्रॉनिक रूप में प्रस्तुत चेक और इमेज बेस्ड क्लियरिंग को भी कानूनी मान्यता है। इससे भौतिक चेक की बाध्यता समाप्त हो गई और डिजिटल माध्यम से भुगतान कानूनी रूप से वैध माना गया। यदि देयक बैंक (Drawee Bank) को किसी चेक की वैधता या प्रमाणीकरण पर संदेह है, तो वह भौतिक चेक की मांग कर सकता है। इसका उद्देश्य धोखाधड़ी और फर्जी चेक की संभावना को कम करना। इलेक्ट्रॉनिक इमेजिंग के बावजूद सुरक्षा और सत्यापन सुनिश्चित करना।

4.3 भुगतान और निपटान प्रणाली अधिनियम, 2007 यह अधिनियम भारत में सभी भुगतान और निपटान प्रणालियों को विनियमित करता है। सीटीएस और इलेक्ट्रॉनिक चेक इस अधिनियम के अंतर्गत संचालित होती हैं। अधिनियम के प्रमुख बिंदु: आरबीआई को सिस्टम ऑपरेटर और भुगतान नेटवर्क की निगरानी का अधिकार।

एनपीसीआई (नेशनल पेमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया) जैसे संस्थानों को सुरक्षित और तेज़ डिजिटल लेन-देन संचालित करने की अनुमति। निपटान (Settlement) और भुगतान की प्रक्रिया को वैधानिक रूप से वैध बनाना।

सीटीएस प्रणाली में इसका योगदान: इलेक्ट्रॉनिक चेक और इमेज क्लियरिंग को कानूनी मान्यता और सुरक्षा प्रदान करना। लेन-देन को प्रभावी, तेज़ और धोखाधड़ी मुक्त बनाना।

4.4 आरबीआई और एनपीसीआई के दिशानिर्देशन: भारतीय रिजर्व बैंक सीटीएस के संचालन और मानकीकरण के लिए दिशानिर्देश जारी करता

है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी बैंक सुरक्षा, डेटा गुणवत्ता और समयबद्ध क्लियरिंग का पालन करें।

एनपीसीआई (नेशनल पेमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया): इलेक्ट्रॉनिक क्लियरिंग हाउस के रूप में काम करता है। चेक की इमेज और एमआईसीआर डेटा को सत्यापित करके भुगतान और निपटान प्रक्रिया पूरी करता है।

5. सीटीएस 2010 चेक की सुरक्षा विशेषताएँ : सीटीएस-2010 मानक को भारतीय रिज़र्व बैंक ने लागू किया ताकि चेक धोखाधड़ी को रोका जा सके और इलेक्ट्रॉनिक क्लियरिंग (सीटीएस) प्रणाली के लिए सुरक्षा बढ़ाई जा सके।

5.1 प्रमुख सुरक्षा फीचर्स

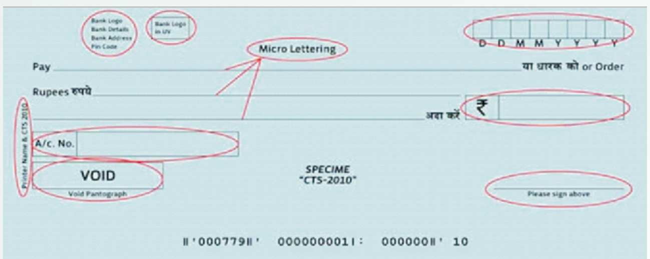

सीटीएस इंडिया वॉटरमार्क (CTS India Watermark): विशेषता: 1- प्रकाश में चेक को झुकाकर देखने पर एक सुरक्षा चिन्ह दिखाई देता है। **2-VOID पैंटोग्राफ (Pantograph): विशेषता:** यदि चेक की फोटोकॉपी या गलत स्कैन किया जाए, तो **VOID** शब्द दिखाई देता है। **3-UV** इंक में बैंक लोगो **(UV Ink Logo): विशेषता:** बैंक का लोगो अल्ट्रावायलेट **(UV)** प्रकाश में दिखाई देता है। **4-**सूक्ष्म अक्षर (Micro-lettering): **विशेषता:** चेक पर बहुत छोटे अक्षर या शब्द छपे होते हैं। **5-**फील्ड का मानकीकरण **(Standardized Fields): विशेषता:** चेक पर नाम, खाता संख्या, तारीख आदि का मानकीकृत फॉर्मेट। **6-**का नया प्रतीक (Rupee Symbol): **विशेषता:** चेक में नया भारतीय प्रतीक शामिल। **7-**हल्के रंग का बैकग्राउंड (Light Background): **विशेषता:** चेक का बैकग्राउंड हल्का रंग का होता है। **8-संशोधन वर्जित (Alteration Restriction) : विशेषता:** चेक में संशोधन नहीं किया जा सकता, केवल दिनांक में सुधार स्वीकार्य। **9-**पाँच अंकों का अल्फा-न्यूमेरिक कोड **(Five Digit Alpha-Numeric Code) : विशेषता**: यह प्रत्येक चेक को दिया गया एक विशिष्ट पहचान संख्या होता है जो चेक की सत्यापन और प्रोसेसिंग के लिए किया जाता है।

सीटीएस 2010 **चेक के लाभ** : धोखाधड़ी रोकथाम: वॉटरमार्क, यूवी इंक, माइक्रो लेटरिंगऔर VOID पैंटोग्राफ से। **तेज़ और सुरक्षित इलेक्ट्रॉनिक क्लियरिंग:** हल्के बैकग्राउंड और फील्ड मानकीकरण से। **मानकीकरण:** सभी बैंकों में समान डिज़ाइन और सुरक्षा फीचर। **ग्राहक और बैंक दोनों के लिए विश्वसनीय:** संशोधन वर्जित और सुरक्षा चिन्हों के कारण।

चेक के सुरक्षित उपयोग के उपाय: चेक धोखाधड़ी और गलतियों से बचने के लिए सुरक्षित प्रथाओं का पालन करना आवश्यक है। सीटीएस प्रणाली और सीटीएस-2010 मानक चेक के साथ यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है।

ग्राहकों के लिए सुरक्षा उपाय : ग्राहक अपने चेक और चेकबुक के सुरक्षित उपयोग के लिए निम्नलिखित उपाय कर सकते हैं: अनुशंसित प्रथाएँ: केवल सीटीएस-2010 मानक चेक का उपयोग करें। यह सुनिश्चित करता है कि चेक सुरक्षा मानकों के अनुरूप है। इलेक्ट्रॉनिक क्लियरिंग और धोखाधड़ी रोकथाम सक्षम है। बॉल पेन से लिखें और रिक्त स्थान न छोड़ें। लेन-देन में सुधार और फर्जी हस्ताक्षर की संभावना कम होती है। Account Payee चेक का ही प्रयोग करें। यह सुनिश्चित करता है कि भुगतान केवल नामांकित खाते में ही जाएगा। नकली हस्तांतरण और धोखाधड़ी कम होती है। नाम और राशि के बाद रेखा खींचें। अतिरिक्त राशि या नाम जोड़ने की संभावना समाप्त होती है। चेकबुक सुरक्षित स्थान पर रखें। चोरी, हानि या अनधिकृत उपयोग से बचाव। समय-समय पर बैंक स्टेटमेंट मिलान करें। किसी भी अनधिकृत भुगतान या त्रुटि का शीघ्र पता चलता है।

7. **सीटीएस के लाभ : ग्राहकों के लिए लाभ:** तेज़ क्लियरिंग और शीघ्र भुगतान। चेक की इलेक्ट्रॉनिक इमेजिंग के कारण भुगतान पहले से कहीं तेज़ होता है। लंबी भौतिक क्लियरिंग प्रक्रिया समाप्त। धोखाधड़ी से सुरक्षा। सीटीएस-2010 सुरक्षा फीचर्स (यूवी इंक, वॉटरमार्क, VOID पैंटोग्राफ) धोखाधड़ी कम करते हैं। चेक का स्कैन तुरंत उपलब्ध। ग्राहक और बैंक दोनों के लिए चेक की डिजिटल छवि आसानी से उपलब्ध होती है।

भारतीय रिज़र्व बैंक ने अगस्त 2025 में घोषणा की है कि सीटीएस अब बैच प्रोसेसिंग से सतत समाशोधन (Continuous Clearing) और प्राप्ति परनिपटान (On-Realization Settlement) में परिवर्तित होगा। मुख्य चरण: अक्टूबर 2025: सभी चेक की पुष्टि प्रातः 10:00 बजे से सायं 7:00 बजे तक होने लगी है। जनवरी 2026: टी+3 घंटे का नियम - प्रत्येक चेक 3 घंटे में अनिवार्य रूप से पुष्टि। सतत समाशोधन प्रणाली के चरण २ के क्रियान्वयन को अगली सूचना तक स्थगित किया गया है।

निष्कर्ष : चेक ट्रंकेशन सिस्टम ने चेक क्लियरिंग की पारंपरिक प्रक्रिया को पूरी तरह बदलकर उसे समय की दृष्टि से तेज़, लागत की दृष्टि से किफ़ायती और सुरक्षा की दृष्टि से अत्यधिक मजबूत बनाया है। पहले जहाँ चेक की भौतिक प्रति एक शाखा से दूसरी शाखा तक ले जाई जाती थी, वहीं अब उसकी इलेक्ट्रॉनिक इमेज के माध्यम से कुछ ही घंटों में क्लियरिंग संभव हो जाती है। ग्राहकों के लिए यह आवश्यक है कि वे चेक का प्रयोग करते समय साफ-सुथरी एंट्री, सही हस्ताक्षर और सुरक्षा नियमों का पालन करें, ताकि उनकी राशि सुरक्षित रहे और अनावश्यक विलंब न हो। दूसरी ओर, बैंकरों की जिम्मेदारी है कि वे हर चेक की सावधानीपूर्वक जाँच करें और ग्राहकों को समय-समय पर सतर्कता से जुड़े निर्देश देते रहें। इस प्रकार, सीटीएस केवल तकनीकी उन्नति ही नहीं है बल्कि यह ग्राहक विश्वास, बैंकिंग सुरक्षा और आधुनिक वित्तीय प्रणाली की मजबूती का भी आधार है, जो आने वाले समय में सतत क्लियरिंग और डिजिटल बैंकिंग को और अधिक विश्वसनीय बनाएगा।

हिन्दी प्रेमी की कलम से

हरीश चन्द्र खंडूरी
प्रशासनिक अधिकारी-I
प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान

मुझे याद है वो दिन जब अंग्रेजी भाषा को एक संभ्रात दर्जे के लोग बड़े चाव से बोलने की कोशिश करते थे। चाहे वह टूटी-फूटी ही क्यों न हो। अंग्रेजी बोलने मात्र से ही आदमी को समाज में शिक्षित और प्रतिष्ठित समझा जाता था। चाहे उसकी भाषा में व्याकरण की दृष्टि से कई त्रुटियाँ विधमान हों। अंग्रेजी भाषा की फिल्मे देखना उच्च वर्ग के लोगों की प्रतिष्ठा का सवाल था। हम आज़ाद तो हो गए थे पर अंग्रेजी भाषा ने हमारी मानसिकता को गुलाम बना कर रखा था। लोगों के मन में यह भावनाएँ जन्म ले रही थीं कि अगर वे अंग्रेजी भाषा नहीं बोल पाते हैं तो वे न तो शैक्षिक प्रतियोगिताओं में सफल हो पाएँगे और न ही समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर सकेंगे।

अतः जरूरत थी कि लोगों की सोच को बदला जाए जिसके लिए हिन्दी के अधिक से अधिक प्रसार की जरूरत महसूस की गई। लोगों को यह समझाने की आवश्यकता थी कि हिन्दी एक सशक्त माध्यम है जो हम भारत वासियों को एक सूत्र में पिरोकर रख सकती है। स्वतंत्रता संग्राम में भी हिन्दी का बड़ा योगदान रहा है जिसने सभी प्रान्तों में आज़ादी की लहर को सुदूर कोने-कोने तक पहुंचाया था। इसलिए हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार जरूरी था। अतः सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थानों द्वारा यह प्रयास शुरू किया गया।

आज भारत बदल गया है। 14 सितंबर हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाने लगा है। इसी दिन 1949 में संविधान सभा ने अनुच्छेद 343 के तहत देवनागरी लिपि में हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। हिन्दी को आज राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। केन्द्रीय सरकार के संस्थानों में कार्य द्विभाषी रूप में हो रहे हैं । हिन्दी में कार्य करने एवं इसका प्रचार करने पर विभिन्न पुरस्कारों का प्रावधान है। लोग जागरूक हो रहे हैं। आज भारतीयों में हिन्दी के प्रति आकर्षण होना हमारे लिए सम्मान की बात है।

मुझे याद है उन शुरुआती दिनों की, जब मैंने नौकरी शुरू की थी। मेरे कार्यालय में हिन्दी भाषी लोग कम थे। सरकार द्वारा हिन्दी के उत्थान के लिए प्रयास किए जा रहे थे। समय-समय पर सरकार द्वारा हिन्दी को प्रोत्साहित करने के लिए दिशा-निर्देश आते रहते थे। कार्यालय में कोई अलग हिन्दी प्रकोष्ठ नहीं था। अतः प्रशासन विभाग के पास इस प्रकार के पत्र प्रेषित कर दिए जाते थे। मेरे बॉस इन पत्रों को मुझे प्रेषित कर दिया करते थे। मैं इन्हें समय मिलने पर पढ़ता रहता था। चूंकि मैं एक हिन्दी प्रेमी हूँ और इस भाषा पर मेरी पकड़ है, तो मेरे मन में हमेशा विचार आते थे कि क्यों न हिन्दी में कार्य करने का प्रयास किया जाए। सरकार के दिशा-निर्देश थे कि कार्य हिंदी/द्विभाषी में होना चाहिए। अतः पहले दैनिक कार्यों को अँग्रेजी में ड्राफ्ट करो, साथ-साथ उन्हें हिन्दी में अनूदित करो और टाइप करो । यह एक जटिल समस्या प्रतीत हो रही थी। उस समय कंप्यूटर की शुरुआत ही हुई थी। पूरे विभाग में एक कंप्यूटर और प्रिंटर था। कंप्यूटर के लिए अलग से एक कमरा था और कार्य करने की अपनी बारी का इंतजार करना पड़ता था। अगर बारी आ भी जाए तो हिन्दी में टाइप करना और भी जटिल कार्य था । परंतु मुझे कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी जी की वो पंक्तियाँ याद थीं जिसमें उन्होने लिखा था:

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

अतः मैंने ठान लिया कि बॉस से इस बारे में जरूर वार्तालाप किया जाए। मन में संशय यह भी था कि अगर बॉस को कार्यालय में हिन्दी भाषा को कार्यान्वित करना होता तो वे इस बारे में पहले से ही दिशा-निर्देश दे सकते थे। बहरहाल कुछ अन्य कार्यों के साथ और बॉस के मूड को टटोलने के बाद, मैंने उन्हें अपनी मंशा बता दी। बॉस ने मेरी तरफ एक व्यंग्यात्मक नज़र से देखा और फिर अन्य पत्रों में अपनी नजर गड़ा दी। असल में बॉस का हिन्दी में ज्ञान कम था, ऊपर से रिटायरमेंट नजदीक था। हिंदी में काम सही तरीके से नहीं हुआ, तो परेशानी हो सकती है। अतः वे हिचक रहे थे। कुछ अनमने मन से उन्होने कहा, देख लो, अगर तुम अपने दैनिक काम के अलावा यह कार्य भी कर सकते हो तो ठीक है। बॉस के ये वचन मेरे लिए आशीर्वाद से कम नहीं थे। मैंने निश्चय कर लिया था कि अब दौड़ शुरू करनी है, पर कछुवे की चाल से।

स्थिति यह हो गई थी कि अब अनुवादक भी मैं था और जांच करने वाला भी मैं। क्योंकि बॉस से तो सहयोग की उम्मीद नहीं के बराबर थी और कोई अन्य ज्ञानी व्यक्ति उस समय मेरी नजरों में नहीं था जो मेरे कार्य की जांच कर सके। अतः धीरे-धीरे अपने दैनिक कार्यों के साथ, हर माह में कुछ कार्य हिन्दी में अनुवाद कर द्विभाषी में टाइप करने लगा। कानूनी तौर पर यह प्रावधान है कि हिन्दी में अगर कोई त्रुटि पायी जाए तो अँग्रेजी अनुवाद को सही माना जाता है, अतः बॉस अँग्रेजी भाषा के आधार पर पेपर पर हस्ताक्षर कर देते थे। कभी-कभी खीज कर कह भी देते थे कि द्विभाषी में नोट की जरूरत नहीं है। परंतु मैंने हार नहीं मानी और धीरे-धीरे नोट से पत्राचार तक पहुंचा और कार्यालय के फॉर्म आदि का द्विभाषी में मुद्रण कराना शुरू कर दिया। कार्यालय की रबड़ की मुहरों को द्विभाषी बनाने का प्रयास करने लगा। इस तरह कार्यालय में हिन्दी भाषा ने अपने पैर पसारने शुरू कर दिये थे। यह मेरे लिए खुशी के पल थे। धीरे-धीरे कार्यालय में केन्द्रीय सरकार के आदेश का पालन करने के लिए हिन्दी दिवस का आयोजन आरंभ होने लगा।

हिन्दी दिवस की सफलता के कारण, कार्यालय में गैर हिन्दी भाषी लोग भी हिन्दी के प्रति आकर्षित होने लगे और वे भी हिन्दी में कार्य करने के लिए समय निकालने लगे। सरकार के दिशा-निर्देश पर, हिन्दी प्रकोष्ठ में

कर्मचारियों की नियुक्ति की गयी जिसके कारण हिन्दी प्रकोष्ठ सुचारू रूप से अस्तित्व में आ गया और हिन्दी में अधिक वेग से कार्य होने लगा। कार्यालय में आज हिन्दी के प्रसार के लिए बहुत कार्य हो चुका है। गैर हिन्दी भाषी कर्मचारियों को हिन्दी का मूलभूत ज्ञान दिया जाता है। इसके अलावा सरकार द्वारा इनके लिए अधिसूचित परीक्षाओं द्वारा इन्हें हिन्दी भाषा में पारंगत किया जाता है, विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के तहत पुरस्कार एवं एक वेतन वृद्धि प्रदान की जाती है। समय-समय पर कार्यशालाओं, सेमिनार, व्याख्यानों आदि का आयोजन किया जाता है। हिन्दी दिवस आज एक पखवाड़े के रूप में मनाया जाने लगा है जिसमें श्रुत लेखन, निबंध, टिप्पण, मुहावरों का अर्थ, पत्र लेखन, वाद-विवाद, काव्य पाठ आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन कर पुरस्कार वितरित किए जाते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि हिन्दी भाषी लोगों के अलावा बड़ी संख्या में गैर हिन्दी भाषी वर्ग इसमें भाग लेने के लिए उत्साहित रहता है।

हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य के लिए समय-समय पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा पुरस्कृत भी किया जाता है। कर्मचारीगण विभिन्न हिन्दी भाषा संबंधी प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं और पुरस्कृत होते रहते हैं। सरकारी कार्यालयों में हिन्दी एक नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ रही है।

वर्तमान में हिन्दी की स्थिति काफी मजबूत है और इसमें विकास के कई अवसर भी हैं । यह भारत की एक महत्वपूर्ण भाषा है और सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है जिसे लोगों ने व्यापक रूप से अपना लिया है। यह विश्व के लगभग 130 देशों में बोली जाने वाली भाषा भी है। यह न केवल साहित्य के कारण बल्कि भाषा की सुंदरता से भी सुशोभित है। यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मीडिया एवं मनोरंजन जगत में हिन्दी का अधिक उपयोग किया जाता है जिससे यह और अधिक लोकप्रिय हो गई है।

हिन्दी भाषा का व्याकरण सरल और सहज है। अतः इसे आसानी से समझा, सीखा और बोला जा सकता है। इसमें छोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक के लिए सुंदर एवं सम्मानित शब्दों का अलग-अलग समावेश है जो अन्य भाषाओं में कम पाया जाता है। हिन्दी पूरे देश में बोली जाने वाली एकमात्र भाषा है। हिन्दी भाषा में विज्ञापन देने से विषय की जानकारी अधिकांश लोगों तक आसानी से पहुँच जाती है। चाहे बिक्री, उत्पादन, हो या ग्राहकों के विचार आदि जानने के लिए सर्वेक्षण करना हो, हिन्दी भाषा में यह कार्य आसानी से पूर्ण हो जाते हैं। यूपीआई एवं इंटरनेट आदि डिजिटल प्लेटफोरमों में लोग बड़ी मात्रा में हिन्दी भाषा का उपयोग करके लाभान्वित हो रहें हैं।

आप अपने बच्चों को अँग्रेजी माध्यम में पढ़ाएँ इससे किसी को कोई परेशानी नहीं है, परंतु साथ ही साथ उन्हें हिन्दी का ज्ञान भी अवश्य दें जैसा कि आप अपनी प्रादेशिक भाषा पढ़ने के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं । बच्चों को अन्य भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करने में कोई मुश्किल नहीं होती है। ऐसा करके आप अपने बालक का भविष्य उज्वल बना सकेंगे।

हिन्दी भारतवर्ष में लोगों के बीच विश्वास और आपसी परिचय की भावना का निर्माण करती है। हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि यह भारतवर्ष की जीवनरेखा और एकता की आवाज़ है।

भाषाई विविधता और समावेशन

अर्पण बाजपेयी
वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

शब्दों की धरती पर खिलते अनेक रंग,
हर बोली में बसता है अपनापन और ढंग ।
कहीं हिंदी की सरिता मधुर गान सुनाए,
कहीं गुजराती गरबा बन लय में झूम जाए।

पंजाबी की धड़कन में जोश की है बात,
बंगाली की कविता में भावों की बरसात ।
मराठी का मान, तमिल की प्राचीन धारा,
उर्दू की नज़ाकत, संस्कृत का उजियारा ।

हर भाषा एक दीप, रोशनी अलग-अलग,
पर मिलकर बनती है उजली सुबह प्रखर ।
अक्षरों के आंगन में भेद नहीं कोई,
सबको मिले स्थान यहां, पराया न हो कोई ।

जब हम सुनते हैं दिल से हर एक जुबान,
टूट जाते हैं दूरी के ऊँचे-ऊँचे मकान ।
समावेशन का अर्थ केवल साथ होना ही नहीं होता,
हर स्वर को सम्मान मिले, इतना भर काफी नहीं ।

आओ मिलकर ऐसा भारत गढें महान,
जहाँ हर भाषा पाए बराबर का स्थान ।
न कोई छोटा समझा जाए, न कोई हो कमतर,
हर बोली का मान बढे, हर हदय हो समृद्धतर।

विविधता हमारी शक्ति, समावेशन हमारी राह,
इसी से सजेगी, भविष्य की सुनहरी चाह ।
जब शब्द मिलेंगे, दिल भी मिल जाएंगे,
भिन्न स्वर मिलकर एक गीत बन जाएंगे।

भाषाएं नहीं दीवारें, ये सेतु हैं प्यारे,
इनसे जुड़ते हैं दिल, बनते रिश्ते प्यारे ।
आओ करें प्रण आज, यही हो संकल्प महान-
भाषाई विविधता से ही खिलेगा हिंदुस्तान ।

पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला

नराकास गांधीनगर, जनगणना कार्य निदेशालय एवं राष्ट्रीय न्यायालयिक विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 30 अक्तूबर, 2025 को किया गया. इस कार्यशाला में कुल 140 स्टाफ सदस्यों की सहभागिता रही. इस कार्यशाला में कुल पाँच सत्र आयोजित किए गए थे जिसमें साइबर सुरक्षा, वित्तीय प्रबंधन, हिंदी में एआई मशीन लर्निंग का उपयोग और अट्टाराइ स्वदेशी ऐप का उपयोग एवं वर्तमान जनगणना प्रक्रिया में डिजिटल टूल्स का उपयोग शामिल था. इस पूर्ण दिवसीय कार्यशाला को श्री सूजल जे मयात्रा, आईएएस, निदेशक जनगणना कार्य निदेशालय,श्री एस ओ जूनारे, निदेशक राष्ट्रीय न्यायालयिक विज्ञान विश्व विद्यालय और श्री सुनील सिन्हा महाप्रबंधक बैंक ऑफ बड़ौदा एवं अध्यक्ष नराकास गांधीनगर द्वारा संबोधित किया गया.

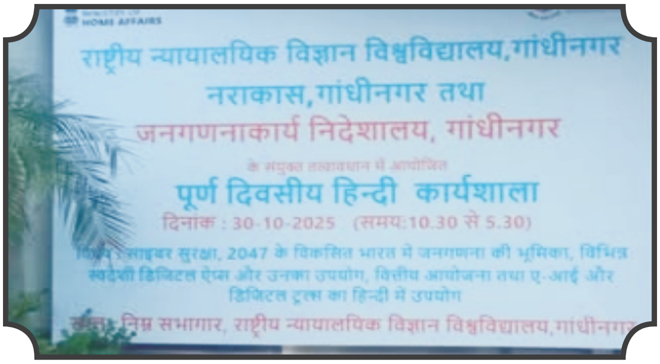

भारत के समावेशी और सतत विकास में सहकारी समितियों की भूमिका

राकेश सिंह
मुख्य प्रबंधक
बैंक ऑफ़ बड़ौदा

1. **प्रस्तावना:** विकास का बदलता प्रतिमान : भारत आज विश्व पटल पर एक तीव्र गति से बढ़ती हुई आर्थिक महाशक्ति के रूप में स्थापित हो रहा है। हम 'विश्व की पाँचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था' होने का गौरव प्राप्त कर चुके हैं और 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर हैं। किंतु इस भव्य विकास गाथा के मध्य एक गहन प्रश्न निहित है – क्या यह विकास सर्व-समावेशी है? क्या यह प्रगति पर्यावरणीय रूप से सतत है? क्या आर्थिक विकास का प्रकाश 'अंत्योदय' की भावना से समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुँच रहा है?

जलवायु परिवर्तन के बढ़ते संकटों और वैश्विक आर्थिक असमानता के इस युग में, विकास का पुराना 'टॉप-डाउन' मॉडल अपर्याप्त सिद्ध हो रहा है। आज आवश्यकता एक ऐसे आर्थिक प्रतिमान की है जो केवल 'मुनाफे' पर नहीं, बल्कि 'मनुष्य' और 'पर्यावरण' पर भी समान रूप से केंद्रित हो। इन दोहरे लक्ष्यों – समावेशी विकास (सभी वर्गों की समान भागीदारी) और सतत विकास (भविष्य की पीढ़ियों से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताएँ पूरी करना) – की प्राप्ति के लिए कोई भी कॉर्पोरेट या विशुद्ध सरकारी मॉडल उतना प्रभावी नहीं हो सकता, जितना कि सहकारी समितियाँ हो सकती हैं।

2. सहकारिता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : भारत में सहकारिता कोई नवीन अवधारणा नहीं है। यह हमारी 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' की प्राचीन दार्शनिक विरासत का ही आधुनिक आर्थिक स्वरूप है। भारत में इसका औपचारिक सूत्रपात ब्रिटिश काल में किसानों को साहूकारों के कर्ज के दुष्चक्र से बचाने के लिए 1904 के सहकारी ऋण समिति अधिनियम के साथ हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात, नेहरू ने इसे 'लोकतांत्रिक समाजवाद' का एक प्रमुख स्तंभ मानते हुए पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से इसे बढ़ावा दिया। इसके महत्व को स्वीकारते हुए, 97वें संविधान संशोधन (2011) द्वारा सहकारी समिति बनाना अनुच्छेद 19(1)(c) के तहत एक मौलिक अधिकार का दर्जा दिया गया।

वित्तीय समावेशन: बैंकिंग को आम जन तक पहुँचाना : भारत में वित्तीय समावेशन की क्रांति का वास्तविक श्रेय सहकारी बैंकों और साख समितियों को जाता है। वाणिज्यिक बैंकों की पहुँच से दूर, देश के गाँवों और कस्बों में 1 लाख से अधिक प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (PACS) का विशाल नेटवर्क फैला हुआ है। इन समितियों ने किसानों को बीज, खाद और कृषि उपकरणों के लिए समय पर और सस्ता ऋण उपलब्ध कराकर उन्हें सूदखोर महाजनों के चंगुल से मुक्त किया है। शहरी सहकारी बैंकों (UCBs) और जिला केंद्रीय सहकारी बैंकों (DCCBs) ने छोटे व्यापारियों और निम्न-मध्यम वर्ग में बचत की आदत को प्रोत्साहित किया। जहाँ एक बड़ा

वाणिज्यिक बैंक लाभप्रदता के कारण ग्रामीण शाखा खोलने में संकोच करता है, वहीं PACS प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) और सरकारी योजनाओं को 'अंतिम मील' तक पहुँचाने का सबसे प्रभावी माध्यम बन रहे हैं।

3.2 **कृषि एवं ग्रामीण विकास: अमूल क्रांति :** यदि भारत में सहकारिता की सफलता का एक पर्याय है, तो वह है 'अमूल'। डॉ. वर्गीज कुरियन के नेतृत्व में गुजरात में शुरू हुए इस आंदोलन ने ग्राम स्तर पर डेयरी समिति, जिला स्तर पर दुग्ध संघ और राज्य स्तर पर महासंघ की त्रि-स्तरीय सहकारी संरचना का निर्माण किया। इसने भारत को दूध की कमी वाले देश से विश्व के सबसे बड़े दुग्ध उत्पादक देश में बदल दिया। इस मॉडल ने दूध के व्यापार से बिचौलियों को समाप्त कर दिया और किसानों – विशेषकर महिलाओं – को उनका पारिश्रमिक मूल्य सीधे बैंक खातों में मिलने लगा। आज GCMMF से 36 लाख से अधिक किसान परिवार जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त, इफको (IFFCO) और कृभको (KRIBHCO) जैसी उर्वरक सहकारी समितियाँ किसानों को उचित मूल्य पर उच्च गुणवत्ता वाले उर्वरक सुनिश्चित करती हैं, जबकि नेफेड (NAFED) उनकी उपज का बेहतर बाज़ार दिलाने में सहायक है।

3.3 **सामाजिक समावेशन और महिला सशक्तीकरण :** सहकारिता ने समाज के सबसे वंचित वर्गों को संगठित होने और अपनी आवाज़ बुलंद करने का मंच दिया है। 'लिज्जत पापड़' इसका जीवंत प्रमाण है – मात्र 80 के ऋण से शुरू हुआ यह उद्यम आज 1500 करोड़ से अधिक का कारोबार करता है और 45,000 से अधिक महिलाओं को सह-स्वामी के रूप में रोज़गार देता है। SEWA (सेल्फ-एम्प्लॉयड वीमेन्स एसोसिएशन) ने अनौपचारिक क्षेत्र की लाखों गरीब महिलाओं को संगठित कर वित्तीय स्थिरता के साथ-साथ स्वास्थ्य और बीमा जैसी सुविधाएँ भी प्रदान कीं। ट्राइफेड (TRIFED) आदिवासी समुदायों के वन उत्पादों और हस्तशिल्प को 'ट्राइब्स इंडिया' ब्रांड के तहत विपणन कर उनकी आय में वृद्धि कर रहा है। इसी प्रकार, बुनकरों और कारीगरों की सहकारी समितियाँ उन्हें कच्चा माल, आधुनिक डिज़ाइन और संगठित बाज़ार उपलब्ध कराकर उनकी पारंपरिक कला को जीवित रखती हैं।

4. **सतत विकास की नींव :** आर्थिक स्थिरता – सहकारी समितियाँ 'धैर्यवान पूंजी' का निर्माण करती हैं – इनका उद्देश्य रातोरात अमीर बनना नहीं, बल्कि सदस्यों के लिए एक स्थिर और दीर्घकालिक आर्थिक आधार बनाना है। 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट में यह स्पष्ट हुआ – जहाँ बड़े निजी बैंक दिवालिया हो गए, वहीं सहकारी बैंक अपनी मजबूत सामुदायिक जड़ों और सट्टा बाज़ारों से दूरी के कारण अपेक्षाकृत स्थिर रहे। इनका लाभ कुछ शेयरधारकों की जेब में जाने के बजाय – किसानों को उच्च मूल्य, उपभोक्ताओं को सस्ती सेवाएँ, और स्कूल-अस्पताल जैसे सामाजिक बुनियादी ढाँचे के रूप में – वापस समुदाय में ही निवेश होता है। कई किसान सहकारी समितियाँ और किसान उत्पादक संगठन (FPOs) अपने सदस्यों को जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं और सामूहिक रूप से जैविक प्रमाणीकरण प्राप्त कर बेहतर मूल्य पा रहे हैं। महाराष्ट्र में 'पानी पंचायत' जैसे सहकारी जल प्रबंधन मॉडल ने सामुदायिक जल संसाधनों के न्यायसंगत और सतत उपयोग का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। केरल में 'कुडुम्बश्री' ने सहकारी मॉडल के तहत अपशिष्ट प्रबंधन और रीसाइक्लिंग में अभूतपूर्व कार्य किया है, जो शहरी स्थिरता के लिए एक आदर्श मॉडल है।

सामाजिक स्थिरता : जब एक आम किसान या महिला सहकारी समिति की बैठक में 'एक सदस्य, एक वोट' के अपने अधिकार का प्रयोग करती है, तो वह जमीनी स्तर पर लोकतंत्र का प्रशिक्षण भी प्राप्त कर रही होती है – यह सामाजिक पूंजी और नागरिक जिम्मेदारी की भावना का निर्माण करता है। शहरी क्षेत्रों में सहकारी आवास समितियों (CGHS) ने लाखों मध्यम-वर्गीय परिवारों को 'अपना घर' का सपना पूरा करने में सहायता की है। केरल जैसे राज्यों में सहकारी क्षेत्र ने उच्च गुणवत्ता के अस्पताल और शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए हैं जो निजी क्षेत्र के महंगे विकल्पों के बीच आम आदमी को एक किफायती विकल्प प्रदान करते हैं।

भविष्य की राह: 'सहकार से समृद्धि' का विज़न : चुनौतियाँ गंभीर हैं, लेकिन असाध्य नहीं। भविष्य का मार्ग इन कदमों से प्रशस्त होगा – सभी PACS का डिजिटलीकरण और कोर बैंकिंग सॉल्यूशंस (CBS) को अपनाना; VAMNICOM[2] जैसे संस्थानों के माध्यम से पेशेवर प्रशिक्षण; सहकारी कानूनों में सुधार कर राजनीतिक हस्तक्षेप को न्यूनतम करना; तथा 'प्लेटफॉर्म कोऑपरेटिव्स', नवीकरणीय ऊर्जा समितियाँ, और स्वास्थ्य सहकारी समितियों जैसे नए युग के क्षेत्रों में विस्तार। किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) को सहकारी अधिनियम के तहत सशक्त कर उन्हें कृषि-प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन की श्रृंखला में अग्रणी खिलाड़ी बनाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष : सहकारी समितियाँ वह पुल हैं जो 'इंडिया' और 'भारत' के बीच की खाई को पाट सकती हैं। वे महात्मा गांधी के 'ग्राम स्वराज्य' और 'ट्रस्टीशिप' के दर्शन का मूर्त रूप हैं। जब एक किसान को उपज का सही मूल्य मिलता है, जब एक महिला उद्यमी बनकर सम्मान का जीवन जीती है, जब एक समुदाय मिलकर अपने जल स्रोत बचाता है, और जब लाभ कुछ हाथों में केंद्रित होने के बजाय हज़ारों सदस्यों में वितरित होता है – तब 'सहकार से समृद्धि' का मंत्र साकार होता है। भारत का समावेशी और सतत भविष्य का सपना, सहकारिता के मजबूत कंधों पर ही टिका हुआ है।

प्रकृति सिखाती है...

रजनीकांत भटासणा
वैज्ञानिक सहायक-सी
प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान

प्रकृति ने सिखाया है - मायने बदलते हैं, मौसम बदलते हैं,
जो ख़्वाब थे कल तलक, वो हक़ीक़त भी बन सकते हैं।
कोंपलें भी पत्थर चीर निकलती हैं, जब कोई धैर्य साधता है,
प्रकृति सिखाती है - बंजर सोच में भी उपवन खिल सकता है।

नदी ने दिखाया है - जीवन का सार है निरंतर बहना,
पहाड़ों से बिछड़कर भी, बिना शिकायत राह को गढ़ना।
ठहरती नहीं, रुकती नहीं, आख़िर मिल ही जाती सागर से,
प्रकृति सिखाती है -जो राह की परवाह न करे, वही मंज़िल पाता है।

बीज ने दिखाया है - सिमटना भी ज़रूरी है खिलने से पहले,
अंधेरे की गोद से ही जीवन जन्म लेता है सहजते हुए।
संघर्ष की ज़मीन पर ही सपनों की फसलें उगती हैं,
प्रकृति सिखाती है - जो ज़मीन से जुड़ा है, वही पनपता है।

आकाश ने बताया है - सीमाएँ होती हैं बस दृष्टि की,
जो उड़ता है विश्वास से, सारा आसमाँ उसका होता है।
भ्रम के बादल हटा दो, तो भीतर ही सूरज चमकता है,
प्रकृति सिखाती है -भीतर हो जिसके उजाला, वही सब पाता है।

नज़रिया सही हो तो पतझड़ में भी दिखेगी आने वाली बसंत,
सूखे पत्ते खाद बन कहें, आरंभ ही है असल में हर एक अंत।
खुद को न्योछावर करके पत्ते मिट्टी को फिर सजीव बनाते,
प्रकृति सिखाती है - त्याग ही जीवन को अमरत्व दे जाता है।

वृक्ष ने सिखाया है -जब फल लगे, तब झुकना लचीलापन है,
झुक भी गए जो प्रेम के खातिर, वो दासता नहीं, अपनापन है।
तपिश सहकर भी न टूटे, वह सुवर्ण-अलंकार बन जाता है,
प्रकृति सिखाती है - जो नहीं लचकता, वही अक्सर टूट जाता है।

बारिश की रिमझिम राग, पत्तों की सिहरती सरसराहट,
बहते झरने की छल-छल, और पंछियों की चहचहाहट।
धड़कनों की धीमी थिरकन, और बेवजह की मुस्कुराहट,
प्रकृति सिखाती है - हर श्वास से निकला संगीत ही तो सजीवता है।

प्रकृति के हर कण में छुपा है जीवन का कोई संदेश,
प्रकृति हर रोज़ देती है शुरुआत की एक नई आश्वेष।
जागृत हो अंतर्मन, तो हर क्षण में जीवन झलकता है,
प्रकृति सिखाती है - उत्तर वहीं मिलता है, जहाँ प्रश्न पलता है।

नवाचार से आत्मनिर्भर भारत

डॉ. पार्थकुमार पी. दवे
प्रधान सहयोगी
राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत

आदि-अनादि भक्ति-रस से की थी परिपूर्ण,
समृद्ध, गौरवान्वित, सब साम्राज्य सम्पूर्ण।
क्षमादान, पुण्य, पराकाष्ठा और शौर्य सभर,
था भारत, नवाचार से आत्मनिर्भर।

कुर्बानी के बीज से पनपे वटवृक्ष ने स्वतंत्रनाद फूंका,
सशक्त हो कर भी, वसुधैव कुटुंबकम् हित में झुका।
जग-कल्याण में, संस्कृति-ज्ञान की अंजलि भर-भर,
बन रहा भारत, नवाचार से आत्मनिर्भर।

तेजस, अग्नि, अणु-शौर्य के प्रकाश से,
मंगल, चन्द्र के आत्मबल के आभास से।
रचनात्मक नवप्रवर्तन की उड़ानें भर,
बनेगा भारत, नवाचार से आत्मनिर्भर।

कालचक्र का सारांश निचोड़ कर,
निज संकल्प से, विश्वगुरु बन कर।
नन्ही-सी मुट्ठी में, प्रेरणा के स्वप्न जगभर,
रहेगा भारत, नवाचार से आत्मनिर्भर।

दो दिवसीय अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी

विषय: विकसित भारत–2047 में सरकारी कार्यालयों की भूमिका
दिनांक: 24 - 25 जुलाई, 2025

सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क (इन्फ्लिबनेट) केंद्र, गांधीनगर, गुजरात, गांधीनगर स्थित गांधीनगर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के सहयोग से 24 एवं 25 जुलाई 2025 को केंद्र में विकसित भारत–2047 में सरकारी कार्यालयों की भूमिका विषय पर, दो दिवसीय अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी का सफल आयोजन किया। इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार, साहित्यिक विमर्श तथा अकादमिक विचारों का आदान-प्रदान था। यह आयोजन समस्त गुजरात के राज्य और केंद्र सरकार के विभिन्न सरकारी कार्यालयों के 100 से अधिक प्रतिभागियों और इन्फ्लिबनेट केंद्र के कर्मचारियों की सक्रिय सहभागिता से सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ, इसके पश्चात, अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी के संयोजक, श्री हरीश चंद्र जी, प्रशासनिक अधिकारी (कार्मिक एवं प्रशासन), इन्फ्लिबनेट केंद्र ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और अपना स्वागत भाषण दिया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में संगोष्ठी के विषय विकसित भारत–2047 की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस लक्ष्य की प्राप्ति में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है और हिंदी संपर्क भाषा के रूप में सभी को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। उद्घाटन सत्र के गणमान्य अतिथियों में माननीय प्रोफेसर शैलेन्द्र सराफ, निदेशक, नाईपर अहमदाबाद (मुख्य अतिथि); माननीय श्री सुनील सिन्हा जी, महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, गांधीनगर (सम्मानित अतिथि); माननीय श्री हरीश सिंह चौहान जी, उपनिदेशक, राजभाषा कार्यान्वयन; एवं माननीय प्रोफेसर देविका पी मडाल्ली, निदेशक, इन्फ्लिबनेट केंद्र उपस्थित थे।

हिन्दी संगोष्ठी के प्रथम दिवस का समापन एक मनमोहक सांस्कृतिक संध्या के साथ हुआ। कार्यक्रम में शास्त्रीय नृत्यों की एक शानदार श्रृंखला देखने को मिली, जिसमें ओडिसी, मोहिनीअट्टम और भरतनाट्यम की भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी 2025 का समापन समारोह बड़े ही उत्साह और भव्यता के साथ संपन्न हुआ। समारोह का आरंभ मुख्य अतिथि, श्री रणजीत कुमार झा, महाप्रबंधक एवं आंचलिक प्रमुख, केनरा बैंक, गुजरात, तथा प्रोफेसर देविका मडाल्ली, निदेशिका, इनफ्लिबनेट केंद्र, गांधीनगर सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों के स्वागत के साथ हुआ। श्री सर्वेश कुमार तिवारी, सदस्य सचिव, नराकास गांधीनगर, ने संगोष्ठी की गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इनफ्लिबनेट केंद्र की निदेशिका प्रोफेसर देविका मडाल्ली ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में सभी प्रतिभागियों और प्रायोजकों को धन्यवाद दिया और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाने की उम्मीद जताई। मुख्य अतिथि श्री रणजीत कुमार झा ने अपने प्रभावशाली उद्बोधन में 2047 तक विकसित भारत के प्रधानमंत्री के सपने को साकार करने के लिए सामूहिक प्रयास का आह्वान किया। यह दो दिवसीय अखिल गुजरात हिंदी संगोष्ठी अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में पूर्णतः सफल रही। इस मंच ने न केवल हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार को एक नई दिशा प्रदान की बल्कि विकसित भारत–2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में विभिन्न सरकारी कार्यालयों,वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं की सामूहिक भूमिका को भी रेखांकित किया। संगोष्ठी में हुए विचार-मंथन से यह स्पष्ट हुआ कि प्रौद्योगिकी,पारंपरिक ज्ञान और भाषा का सामंजस्य ही भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने की कुंजी है। यह आयोजन भविष्य में इस तरह के और अधिक संवादों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बनेगा, जो नीति–निर्माण और जमीनी कार्यान्वयन के बीच की खाई को पाटने में सहायक सिद्ध होंगे।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गांधीनगर में कवि सम्मेलन का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गांधीनगर द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर संस्थान एवं नराकास गांधीनगर के सभी सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों के लिए दिनांक 21 फरवरी, 2026 को संस्थान परिसर के जीबाबेन पटेल(कनिसा) ऑडिटोरीयम में एक भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य हिन्दी के साथ - साथ प्रादेशिक भाषाओं में साहित्य के प्रति रुचि जागृत करना तथा मातृभाषा के संवर्धन एवं साहित्यिक चेतना को प्रोत्साहित करना था। इस कार्यक्रम में संस्थान के छात्र, संकाय सदस्य, अधिकारी एवं कर्मचारी एवं उनके परिवारजनों के साथ-साथ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गांधीनगर के सदस्य कार्यालयों के कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि प्रोफेसर सूर्य प्रताप मेहरोत्रा, अधिष्ठाता, संकाय मामले एवं आमंत्रित कवियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के पठन के साथ किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा आमंत्रित कवियों को शॉल, श्रीफल एवं पुष्प देकर उनका औपचारिक स्वागत किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में श्री विपुल कुमार चौधरी, प्रभारी, हिन्दी अधिकारी ने उपस्थित श्रोताओं से आमंत्रित कवियों का परिचय कराया।

इस कार्यक्रम में आमंत्रित कवियों के रूप में श्री दिनेश रघुवंशी, डॉ. प्रवीण शुक्ल, श्री महेंद्र अजनबी, सुश्री शशि श्रेया तथा श्री विनोद पाल उपस्थित थे। कवि सम्मेलन में उपस्थित इन राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। इन कवियों ने देशभक्ति, हास्य-व्यंग्य, श्रृंगार, सामाजिक मुद्दों एवं मानवीय संवेदनाओं पर आधारित अपनी उत्कृष्ट कविताओं का पाठ किया। उनकी प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को जीवंत एवं प्रेरणादायी बना दिया। कवियों द्वारा प्रस्तुत रचनाओं को श्रोताओं ने अत्यंत सराहा। हास्य-व्यंग्य कविताओं ने उपस्थित जनसमूह को आनंदित किया, जबकि भावपूर्ण कविताओं ने सभी को गहराई से प्रभावित किया। कुल मिलाकर कवि सम्मेलन का आयोजन अत्यंत सफल एवं प्रभावशाली रहा।

कार्यक्रम के समापन में मुख्य अतिथि द्वारा आमंत्रित कवियों को स्मृति - चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। श्री विपुल कुमार चौधरी, प्रभारी, हिन्दी अधिकारी द्वारा सभी कवियों, मुख्य-अतिथि, उपस्थित श्रोताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

खुशी

राकेश मीना
आशुलिपिक
भारतीय खान ब्यूरो,
गांधीनगर

आज का युग अत्यंत तेज़ गति से बदलने वाला युग है। विज्ञान, तकनीक और आधुनिक जीवनशैली ने मनुष्य के जीवन को सुविधाजनक तो बनाया है, परंतु इसके साथ-साथ मानसिक तनाव, प्रतिस्पर्धा और असंतोष भी बढ़ा है। ऐसे परिवेश में खुश रहना एक चुनौती के रूप में उभरकर सामने आया है। इसलिए यह आवश्यक हो गया है कि हम खुश रहने के सही अर्थ और उपायों को समझें।

खुश रहने का अर्थ

खुश रहना केवल हँसने या बाहरी सुख-सुविधाओं तक सीमित नहीं है। यह एक मानसिक स्थिति है, जिसमें व्यक्ति संतुष्टि, शांति और सकारात्मकता महसूस करता है। सच्ची खुशी भीतर से आती है, न कि केवल बाहरी परिस्थितियों से।

सकारात्मक सोच का महत्व

आज के युग में हमारा मन अनेक नकारात्मक विचारों से घिरा रहता है। इसलिए सकारात्मक सोच विकसित करना बेहद ज़रूरी है। जब हम हर परिस्थिति में अच्छा देखने की कोशिश करते हैं, तो समस्याएँ भी अवसर लगने लगती हैं।

- ❖ नकारात्मक विचारों को पहचानें और उन्हें सकारात्मक में बदलें
- ❖ खुद पर विश्वास रखें
- ❖ असफलताओं को सीख के रूप में स्वीकार करें

सोशल मीडिया का प्रभाव

सोशल मीडिया ने हमारी ज़िंदगी को आसान तो बनाया है, लेकिन इसके साथ तुलना और असंतोष भी बढ़ा है। दूसरों की परफेक्ट लाइफ देखकर हम अपनी ज़िंदगी से असंतुष्ट हो जाते हैं।

- ❖ सोशल मीडिया का सीमित उपयोग करें
- ❖ वास्तविक जीवन के रिश्तों को प्राथमिकता दें
- ❖ खुद की तुलना दूसरों से न करें

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य

खुश रहने के लिए शरीर और मन दोनों का स्वस्थ होना ज़रूरी है।

- ❖ नियमित व्यायाम करें
- ❖ योग और ध्यान (Meditation) अपनाएँ
- ❖ पर्याप्त नींद लें
- ❖ संतुलित आहार लें

रिश्तों का महत्व

अच्छे रिश्ते हमारी खुशी का सबसे बड़ा स्रोत होते हैं। परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताना हमें मानसिक रूप से मजबूत बनाता है।

- ❖ अपने प्रियजनों के साथ खुलकर बात करें
- ❖ दूसरों की भावनाओं को समझें
- ❖ क्षमा करना सीखें

लक्ष्य और संतुष्टि

जीवन में लक्ष्य होना ज़रूरी है, लेकिन उससे भी ज़्यादा ज़रूरी है संतुष्टि।

- ❖ छोटे-छोटे लक्ष्य बनाएं और उन्हें पूरा करें
- ❖ अपनी उपलब्धियों की सराहना करें
- ❖ हमेशा और चाहिए की भावना से बचें

वर्तमान में जीना सीखें

अक्सर हम या तो अतीत में फँसे रहते हैं या भविष्य की चिंता में खो जाते हैं। जबकि सच्ची खुशी वर्तमान में जीने में है।

- ❖ हर पल को महसूस करें
- ❖ अनावश्यक चिंता से दूर रहें
- ❖ आज पर ध्यान केंद्रित करें

निष्कर्ष

आज के युग में खुश रहना चुनौतीपूर्ण जरूर है, लेकिन असंभव नहीं। यदि हम अपने विचारों, आदतों और जीवनशैली में थोड़े बदलाव करें, तो हम एक संतुलित और खुशहाल जीवन जी सकते हैं। सच्ची खुशी बाहरी चीजों में नहीं, बल्कि हमारे अंदर छिपी होती है-बस उसे पहचानने की जरूरत है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित ई-गवर्नेंस: भारत में डिजिटल प्रशासन का उभरता मॉडल

कुणाल देराश्री
वैज्ञानिक-सी एवं उप निदेशक (सू.प्रो.)
राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र
गुजरात राज्य केन्द्र - गांधीनगर

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस): एक परिचय

21वीं सदी की सबसे परिवर्तनकारी तकनीकों में से एक कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-एआई) है। यह कंप्यूटर विज्ञान की उन्नत तकनीक है जिसके माध्यम से मशीनों को इस प्रकार विकसित किया जाता है कि वे मानव की तरह सोचने, सीखने, विश्लेषण करने तथा निर्णय लेने में सक्षम हो सकें।

सरल शब्दों में कहें तो-एआई एक ऐसी तकनीक है जो कंप्यूटर को इंसानों की तरह सोचने, समझने और सीखने की शक्ति देती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रमुख घटकों में मशीन लर्निंग (ML), नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP), कंप्यूटर विज़न, और डीप लर्निंग सम्मिलित हैं। ये तकनीकें मिलकर एक ऐसी प्रणाली का निर्माण करती हैं जो न केवल डेटा का विश्लेषण करती है बल्कि पिछले अनुभवों से सीखकर भविष्य के निर्णयों को भी अधिक सटीक बनाती है। जब यही क्षमता सरकारी सेवाओं और प्रशासनिक कार्यों में लागू की जाती है, तो उसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-संचालित ई-गवर्नेंस कहा जाता है।

ई-गवर्नेंस में एआई का उपयोग सरकारी सेवाओं को अधिक पारदर्शी, तेज, सटीक तथा नागरिक-केंद्रित बनाने के लिए किया जा रहा है। भारत में डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी मिशन तथा राज्य स्तरीय डिजिटल पहल के अंतर्गत एआई आधारित समाधान तेजी से अपनाए जा रहे हैं। प्रशासनिक सेवाओं में एआई आधारित विश्लेषण, नागरिक सेवाओं का स्वचालन, ट्रैफिक प्रबंधन, शिकायत निवारण प्रणाली तथा कृषि सहायता जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं।

यह लेख कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विभिन्न प्रकारों, ई-गवर्नेंस में इसके अनुप्रयोगों, लाभ-हानियों तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषणात्मक अवलोकन प्रस्तुत करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की विविधता को समझने के लिए उसे तीन प्रमुख आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है - क्षमता के आधार पर, कार्यप्रणाली के आधार पर और अनुप्रयोग के आधार पर।

क्षमता के आधार पर - यह वर्गीकरण इस बात पर केंद्रित है कि कोई आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रणाली कितनी बुद्धिमान हो सकती है।

1) संकीर्ण कृत्रिम बुद्धिमत्ता - विशेष कार्य के लिए विकसित एआई। जैसे - सिरी, एलेक्सा जैसे वॉयस असिस्टेंट
2) सामान्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता - मानव जैसी बुद्धिमत्ता (सैद्धांतिक)।
3) सुपर कृत्रिम बुद्धिमत्ता - यह पूर्णतः सैद्धांतिक और भविष्योन्मुखी अवधारणा है।

कार्यप्रणाली के आधार पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार - यह वर्गीकरण इस बात पर आधारित है कि एआई किस प्रकार डेटा को संसाधित करता है, स्मृति का उपयोग करता है और निर्णय लेता है।

1) **प्रतिक्रियाशील मशीनें** - वर्तमान डेटा के आधार पर प्रतिक्रिया देने वाली मशीनें। जैसे - आईबीएम का डीप ब्लू शतरंज कार्यक्रम इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।
2) **सीमित स्मृति कृत्रिम बुद्धिमत्ता** -अतीत के डेटा का उपयोग कर बेहतर निर्णय लेना। जैसे-स्वचालित वाहन (Self-Driving Cars)
3) **मन का सिद्धांत** - एआई जो मानवीय भावनाओं, विश्वासों और इरादों को समझने का प्रयास करती है।

4) **स्व–जागरूक कृत्रिम बुद्धिमत्ता** – एआई का सर्वोच्च सैद्धांतिक स्तर, जहाँ मशीन में चेतना, आत्म–जागरूकता और स्वयं की भावनाएँ होंगी।

अनुप्रयोग के आधार पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार – परंपरागत वर्गीकरण से परे, आज के व्यावहारिक परिदृश्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को इस आधार पर भी समझा जाता है कि वह वास्तविक जीवन में क्या करता है।

1) जनरेटिव कृत्रिम बुद्धिमत्ता – डेटा के पैटर्न से सीखकर नई सामग्री जैसे – पाठ, चित्र, ऑडियो या कोड तैयार करने वाला एआई ।

2) एजेंटिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता – स्वायत्त रूप से बिना निरंतर मानवीय हस्तक्षेप के निर्णय लेने वाला एआई ।

   नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) - एनएलपी मशीनों को मानव भाषा लिखित और मौखिक को समझने, व्याख्यायित करने और उसमें संवाद करने में सक्षम बनाता है। जैसे – चैटबॉट, भाषा अनुवाद प्रणालियाँ

3) कंप्यूटर विज़न – कंप्यूटर विज़न मशीनों को चित्रों और वीडियो का विश्लेषण, पहचान और व्याख्या करने में सक्षम बनाता है। जैसे – चेहरा पहचान, चिकित्सा छवि विश्लेषण, स्वचालित वाहनों की दृष्टि प्रणाली ।

_ई–गवर्नेंस में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग के प्रमुख क्षेत्र

ई–गवर्नेंस का अर्थ है – इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से नागरिकों को सरकारी सेवाएँ प्रदान करना। जब इन सेवाओं में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का समावेश होता है, तो प्रशासन अधिक पारदर्शी, तीव्र और प्रभावशाली बन जाता है। नीचे उन प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख है जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है:

कृषि एवं ग्रामीण विकास: एआई–आधारित मॉडल मौसम के पूर्वानुमान, फसल रोग पहचान, मिट्टी परीक्षण और उत्पादन अनुमान में किसानों की सहायता कर रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवाएँ: एआई की सहायता से रोगों की शीघ्र पहचान, टेलीमेडिसिन सेवाएँ और अस्पतालों में रोगी प्रबंधन को अत्यंत प्रभावी बनाया जा सकता है।

शिक्षा: एआई–संचालित व्यक्तिगत शिक्षण प्रणाली (Personalized Learning System) प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की गति के अनुसार पाठ्यक्रम प्रस्तुत करती है। सरकारी विद्यालयों में एआई चैटबॉट सहायक शिक्षण उपकरण के रूप में कार्य कर शिक्षकों की कमी को आंशिक रूप से कम कर सकते हैं।

राजस्व एवं कर प्रशासन (GST/Tax Fraud Detection): एआई और मशीन लर्निंग मॉडल जीएसटी में होने वाली कर–चोरी, फर्जी इनपुट टैक्स क्रेडिट (ITC) और संदिग्ध लेन–देन की पहचान स्वचालित रूप से कर सकते हैं।

नागरिक सेवा एवं शिकायत निवारण (एआई चैटबॉट): एआई–चालित वार्तालाप प्रणालियाँ (Conversational Agents) ग्रामीण नागरिकों को उनकी स्थानीय भाषा में सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान कर सकती हैं।

यातायात एवं स्मार्ट सिटी प्रबंधन: एआई–आधारित सीसीटीवी विश्लेषण, यातायात प्रवाह नियंत्रण और दुर्घटना पूर्वानुमान प्रणालियाँ शहरी प्रशासन को अत्यधिक कुशल बनाती हैं।

भूमि अभिलेख एवं संपत्ति प्रबंधन: एआई–ओसीआर तकनीक से पुराने भूमि अभिलेखों को डिजिटल रूप में परिवर्तित करना और मशीन लर्निंग मॉडल से भू–संपत्ति विवादों की पहचान करना संभव हो गया है।

साइबर सुरक्षा: सरकारी पोर्टलों पर होने वाले साइबर हमलों की पहचान और उनकी रोकथाम में एआई–आधारित थ्रेट पहचान प्रणालियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

नीति निर्माण एवं डेटा विश्लेषण: बड़े पैमाने पर जन–डेटा का विश्लेषण करके सरकार बेहतर नीतियाँ बना सकती है। भविष्यसूचक विश्लेषण से योजनाओं के परिणाम पहले से अनुमानित किए जा सकते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ और हानियाँ

लाभ (Advantages)

- **गति और दक्षता:** एआई आधारित प्रणालियाँ हजारों आवेदनों को कुछ ही सेकंड में संसाधित कर सकती हैं, जिससे प्रशासनिक दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।
- **पारदर्शिता:** स्वचालित प्रणाली में मानवीय हस्तक्षेप कम होने से भ्रष्टाचार की संभावना घटती है।
- **24x7 सेवा उपलब्धता:** एआई चैटबॉट दिन–रात नागरिकों की सेवा में उपलब्ध रहते हैं।
- **सटीक निर्णय:** बड़े डेटा के विश्लेषण से निर्णय अधिक तथ्य–आधारित और सटीक होते हैं।
- **लागत में कमी:** दीर्घकाल में मानव संसाधन पर व्यय घटता है।
- **भाषाई समावेश:** एनएलपी की सहायता से स्थानीय भाषाओं में सेवाएँ प्रदान करना संभव है।
- **मानवीय त्रुटि में कमी:** दोहराए जाने वाले प्रशासनिक कार्यों में एआई मानवीय भूल की संभावना को न्यूनतम करता है, जिससे सेवाओं की विश्वसनीयता बढ़ती है।

हानियाँ (Disadvantages)

- **डेटा गोपनीयता का खतरा:** नागरिकों के व्यक्तिगत डेटा के दुरुपयोग की संभावना बनी रहती है।
- **पक्षपातपूर्ण निर्णय (Algorithmic Bias):** यदि प्रशिक्षण डेटा में भेदभाव है, तो एआई भी भेदभावपूर्ण निर्णय ले सकता है।
- **डिजिटल विभाजन:** ग्रामीण और कम-साक्षर नागरिक एआई सेवाओं से वंचित रह सकते हैं।
- **तकनीकी निर्भरता:** अत्यधिक एआई-निर्भरता से तकनीकी विफलता की स्थिति में प्रशासन ठप हो सकता है।
- **रोजगार पर प्रभाव:** कुछ प्रशासनिक पदों पर एआई के आने से मानव रोजगार प्रभावित हो सकता है।
- **नैतिक प्रश्न:** एआई के निर्णयों की जवाबदेही निर्धारित करना एक जटिल समस्या है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपयोग में सावधानियाँ एवं ध्यान रखने योग्य बिंदु

एआई को ई-गवर्नेंस में लागू करते समय निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं का ध्यान रखना अत्यावश्यक है:

डेटा सुरक्षा अधिनियम का पालन: नागरिकों के व्यक्तिगत डेटा को डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम (DPDP Act 2023) के अनुसार संग्रहीत और उपयोग करें।

नैतिक एआई (नैतिक एआई (Ethical -I)) का पालन: एआई प्रणाली के निर्णयों में पारदर्शिता, जवाबदेही और निष्पक्षता सुनिश्चित करें।

मानव निगरानी (Human Oversight) अनिवार्य: पूर्णतः स्वचालित निर्णय प्रणाली से बचें; महत्वपूर्ण निर्णयों में मानव अधिकारी की भूमिका अनिवार्य रखें।

नियमित ऑडिट: एआई मॉडलों का समय-समय पर तकनीकी और नैतिक ऑडिट करवाएँ।

डेटा की गुणवत्ता: एआई केवल उतना ही सटीक होगा जितना उसका प्रशिक्षण डेटा - अतः डेटा शुद्धता पर विशेष ध्यान दें।

साइबर सुरक्षा: एआई प्रणालियों को साइबर हमलों से सुरक्षित रखने के लिए बहुस्तरीय सुरक्षा तंत्र अपनाएँ।

डिजिटल साक्षरता: नागरिकों और सरकारी कर्मचारियों को एआई प्रणालियों के उपयोग का पर्याप्त प्रशिक्षण दें।

स्थानीयकरण: भारत की विविध भाषाओं और संस्कृतियों को ध्यान में रखते हुए एआई का स्थानीयकरण (Localization) करें।

समावेशिता सुनिश्चित करें: एआई सेवाएँ केवल शहरी या उच्च-साक्षर वर्ग तक सीमित न रहें - ग्रामीण, वंचित एवं दिव्यांग नागरिकों तक पहुँच सुनिश्चित करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य: शासन की अगली पीढ़ी

भारत की India AI Mission और विभिन्न राज्यों की एआई नीतियाँ इस तथ्य की पुष्टि करती हैं कि आने वाले वर्षों में एआई-संचालित शासन एक विकल्प नहीं, बल्कि एक अपरिहार्य वास्तविकता बन जाएगा। तकनीकी विकास की गति को देखते हुए यह स्पष्ट है कि ई-गवर्नेंस का स्वरूप अगले एक दशक में आमूलचूल रूप से बदल जाएगा।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित ई-गवर्नेंस प्रशासन को पारंपरिक ढाँचे से बाहर लाकर स्मार्ट, पारदर्शी और नागरिक-केंद्रित मॉडल की ओर ले जा रहा है। भारत में विभिन्न राज्यों के साथ-साथ डिजिटल शासन के क्षेत्र में एआई का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है। आने वाले समय में एआई आधारित निर्णय प्रणाली, भविष्यसूचक प्रशासन और स्वचालित सेवाएँ ई-गवर्नेंस को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाएँगी। यदि तकनीकी विकास के साथ डेटा सुरक्षा, नैतिकता और डिजिटल समावेशन पर विशेष ध्यान दिया जाए, तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता डिजिटल भारत के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाएगी।

एआई के कुछ रोचक तथ्य आपको हैरान कर सकते हैं:

1. **एआई सीख सकता है : एआई सिस्टम खुद डेटा से सीखते हैं। इसे** Machine Learning **कहा जाता है, जिससे बिना हर चीज़ प्रोग्राम किए भी सिस्टम बेहतर होता जाता है।**
2. **एआई इंसानों से बेहतर काम भी कर सकता है : कुछ क्षेत्रों में एआई इंसानों से आगे निकल चुका है, जैसे शतरंज और गो जैसे खेलों में (उदाहरण:** IBM **का** Deep Blue **और** Google **का** AlphaGo)।
3. **एआई हर जगह मौजूद है : आपके फोन में** voice assistant, Netflix **की** recommendations, Google Maps **की** traffic prediction-**सब एआई का ही उपयोग हैं।**
4. **एआई भावनाओं को भी समझने लगा है : अब एआई चेहरे के हाव-भाव और आवाज़ से भावनाओं को पहचानने की कोशिश करता है, जिसे** Emotion AI **कहा जाता है।**
5. **एआई खुद कंटेंट बना सकता है : आज एआई कविता, कहानी, संगीत, और पेंटिंग भी बना सकता है-जैसे** ChatGPT **और** DALL E।
6. **भविष्य में एआई और शक्तिशाली होगा : आने वाले समय में** self-driving cars, **स्मार्ट शहर और रोबोटिक असिस्टेंट आम हो सकते हैं।**

नराकास गांधीनगर की छमाही गतिविधियाँ

भारतीय खान ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय गांधीनगर द्वारा दिनांक 22 सितंबर 2026 को एनपीएस बनाम यूपीएस एवं योग और जीवन शैली पर व्याख्यान का आयोजन भौतिक माध्यम से किया गया।

बैंक ऑफ इंडिया द्वारा दिनांक 23 सितंबर 2025 को मेरा हिन्दी कार्यक्षेत्र प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

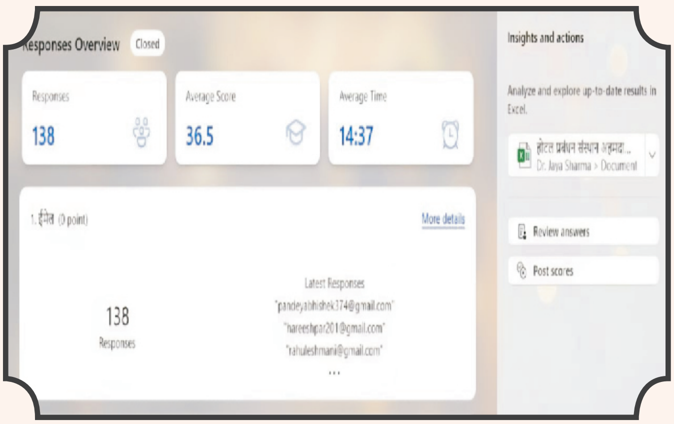

होटल प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद द्वारा दिनांक 30 सितंबर 2025 को हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

बड़ौदा एपेक्स अकादमी द्वारा दिनांक 01 नवंबर 2025 को केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-1, सेक्टर 30 गांधीनगर में भ्रष्टाचार विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री आलोक तिवारी, श्री रंजन पाठक, मुख्य प्रबंधक बैंक ऑफ बड़ौदा और सदस्य सचिव श्री सर्वेश तिवारी की सहभागिता रही।

उदयभाण सिंह जी क्षेत्रीय प्रबंधन संस्थान, गांधीनगर द्वारा दिनांक 28 नवंबर 2025 को कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

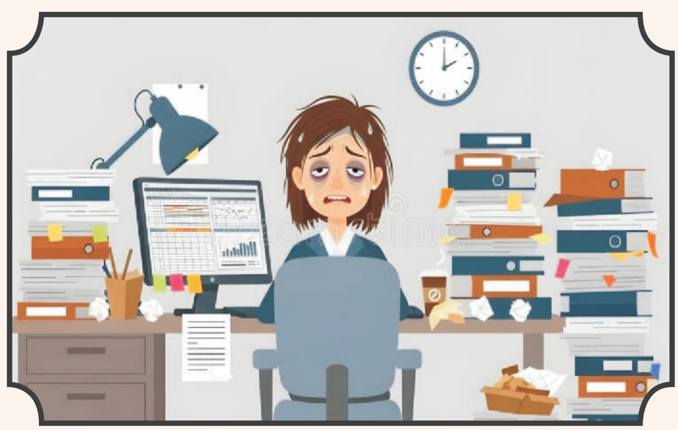

इंडियन ओवरसीज बैंक, गांधीनगर मुख्य शाखा द्वारा दिनांक 03 दिसंबर 2026 को नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

नराकास गांधीनगर की छमाही गतिविधियाँ

नराकास गांधीनगर द्वारा दिनांक 28 से 30 दिसंबर, 2025 तक ऑनलाइन राजभाषा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें रिकॉर्ड 1191 स्टाफ सदस्यों ने सहभागिता की।

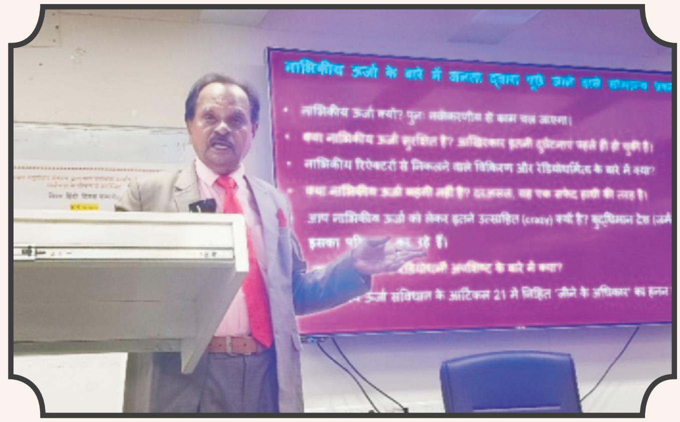

प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान द्वारा दिनांक 12 जनवरी, 2026 को नेट ज़ीरो उत्सर्जन में नाभिकीय ऊर्जा का योगदान विषय पर भौतिक माध्यम से व्याख्यान का आयोजन किया गया।

सुर संध्या 3.0 स्टेज-1 का आयोजन दिनांक 13 जनवरी, 2026 को बड़ौदा एपेक्स अकादमी में किया गया। इसमें 28 गायक स्टाफ सदस्यों की सहभागिता रही।

होटल प्रबंधन संस्थान द्वारा दिनांक 17 जनवरी, 2026 को प्रसिद्ध शेफ परविंदर सिंह बाली के साथ पाक कला पर मास्टर क्लास का आयोजन भौतिक माध्यम से किया गया।

दिनांक 08 फरवरी 2026 को बाइसेग एवं आईईटीई के संयुक्त तत्त्वावधान में हिंदी माध्यम से राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थान के महानिदेशक श्री टी पी सिंह सर ने और भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आए इलेक्ट्रोनिक एवं टेलिकम्यूनिकेशन से जुड़े इंजीनियरों, पेशेवरों को विकसित भारत 2047 के भारत सरकार के विज़न से जुडने का आग्रह किया।

केंद्रीय विद्यालय संगठन द्वारा दिनांक 16 फरवरी, 2026 को भौतिक माध्यम से कविता पाठ का आयोजन किया गया।

नराकास गांधीनगर की छमाही गतिविधियाँ

उदयभाण सिंह जी क्षेत्रीय प्रबंधन संस्थान द्वारा दिनांक 20 फरवरी 2026 को भौतिक माध्यम से कार्य जीवन संतुलन पर हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान द्वारा दिनांक 27 फरवरी, 2026 को ऑनलाइन एवं भौतिक माध्यम से बेहतर जीवन के लिए समझदारी से वस्तुओं का प्रयोग विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

माही एवं तापी बेसिन संगठन द्वारा दिनांक 23 मार्च, 2026 को लैंगिक समानता के लिए जल विषय पर भौतिक माध्यम से व्याख्यान का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, राज्य इकाई–गुजरात द्वारा दिनांक 24 मार्च, 2026 को चित्र देखो और वर्णन करो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

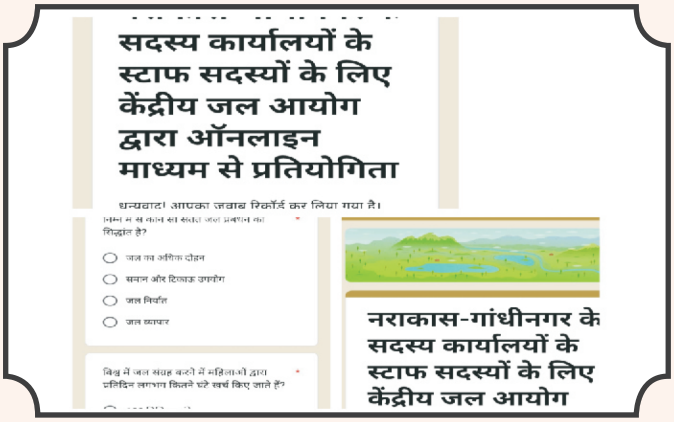

केंद्रीय जल आयोग द्वारा दिनांक 20 मार्च, 2026 को जल दिवस के अवसर पर ऑनलाइन माध्यम से हिंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 30 मार्च, 2026 को राष्ट्रीय न्यायालयिक विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा वर्तमान परिस्थितियों में वित्तीय प्रबंधन विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

जेनरेशन-Z
चुनौतियाँ, संभावनाएँ और समाधान का संतुलित दृष्टिकोण

डॉ प्रियंका कक्कड़
सह-प्राध्यापक
राष्ट्रीय फोरेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय,
गांधीनगर

वर्तमान युग में जेनरेशन-Z (लगभग 1997 के बाद जन्मी पीढ़ी) समाज का एक अत्यंत प्रभावशाली वर्ग बन चुकी है। यह पीढ़ी तकनीकी रूप से अत्यंत सक्षम, विचारों में स्वतंत्र और परिवर्तन के प्रति खुली है। परंतु इसके साथ-साथ कई गंभीर चिंताएँ भी उभर कर सामने आई हैं- मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएँ, शारीरिक निष्क्रियता, कार्य के प्रति बदलता दृष्टिकोण, और पारिवारिक मूल्यों से दूरी।

इस लेख में जेनरेशन-Z के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं का विश्लेषण किया गया है एवं प्रत्येक समस्या के व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत है।

1. मानसिक स्वास्थ्य: जागरूकता बनाम अस्थिरता

नकारात्मक पक्ष: Gen Z में चिंता, अवसाद और तनाव के मामलों में वृद्धि देखी जा रही है। सोशल मीडिया पर तुलना, परफेक्ट जीवन का दबाव और असफलता को सहन न कर पाने की प्रवृत्ति उन्हें मानसिक रूप से अस्थिर बना रही है।

सकारात्मक पक्ष: यह पीढ़ी मानसिक स्वास्थ्य के प्रति पहले से अधिक जागरूक है। वे खुलकर अपनी समस्याएँ व्यक्त करते हैं, सहायता लेने के लिए तैयार रहते हैं और मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देते हैं।

समाधान:

- ✓ स्कूल और कॉलेज स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाए।
- ✓ डिजिटल डिटॉक्स और माइंडफुलनेस जैसी तकनीकों को बढ़ावा दिया जाए।
- ✓ परिवारों में खुला संवाद और भावनात्मक समर्थन सुनिश्चित किया जाए।

2. शारीरिक स्वास्थ्य: निष्क्रियता बनाम फिटनेस जागरूकता

नकारात्मक पक्ष: स्क्रीन टाइम की अधिकता के कारण शारीरिक गतिविधियाँ कम हो गई हैं, जिससे मोटापा, थकान और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ रही हैं।

सकारात्मक पक्ष: फिटनेस ट्रेंड्स, जिम संस्कृति और हेल्थ डाइट के प्रति जागरूकता भी इसी पीढ़ी में तेजी से बढ़ी है।

समाधान:

- ✓ दैनिक जीवन में अनिवार्य शारीरिक गतिविधि (जैसे योग, खेल) को शामिल किया जाए।
- ✓ संस्थानों में फिटनेस प्रोग्राम्स को बढ़ावा दिया जाए।
- ✓ स्क्रीन टाइम को सीमित करने के लिए व्यक्तिगत अनुशासन विकसित किया जाए।

3. कार्य के प्रति दृष्टिकोण: आलस्य बनाम स्मार्ट वर्क

नकारात्मक पक्ष: Gen Z पर आरोप है कि वे कठिन परिश्रम से बचते हैं और त्वरित सफलता चाहते हैं। धैर्य और निरंतरता की कमी उनके करियर को प्रभावित कर सकती है।

सकारात्मक पक्ष: यह पीढ़ी स्मार्ट वर्क में विश्वास रखती है और तकनीक का उपयोग करके कार्य को अधिक कुशल बनाती है। वे वर्क-लाइफ बैलेंस को भी महत्व देते हैं।

समाधान:

- ✓ युवाओं को वास्तविक जीवन के अनुभव और संघर्ष का महत्व सिखाया जाए।
- ✓ कौशल आधारित शिक्षा और इंटर्नशिप को बढ़ावा दिया जाए।
- ✓ कार्य के प्रति अनुशासन और दीर्घकालिक लक्ष्य निर्धारण पर जोर दिया जाए।

4. करियर अपेक्षाएँ: अवास्तविकता बनाम आत्म-मूल्य की समझ

नकारात्मक पक्ष: कई युवा शुरुआत में ही उच्च वेतन और आरामदायक जीवन की अपेक्षा करते हैं, जिससे निराशा और अस्थिरता बढ़ती है।

सकारात्मक पक्ष: यह पीढ़ी अपने कौशल और समय का मूल्य समझती है और शोषण के खिलाफ खड़ी होती है।

समाधान:

- ✓ करियर काउंसलिंग और वास्तविक बाजार की जानकारी दी जाए।
- ✓ सीखते हुए कमाना (learning while earning) की मानसिकता विकसित की जाए।
- ✓ प्रारंभिक संघर्ष को करियर का हिस्सा मानने के लिए प्रेरित किया जाए।

5. **विवाह और परिवार: स्वतंत्रता बनाम सामाजिक संतुलन**

नकारात्मक पक्ष: विवाह और बच्चों से दूरी समाज की पारंपरिक संरचना को प्रभावित कर सकती है, जिससे अकेलापन और सामाजिक असंतुलन बढ़ सकता है।

सकारात्मक पक्ष: Gen Z व्यक्तिगत स्वतंत्रता, करियर और आत्म-विकास को प्राथमिकता देती है। वे संबंधों में गुणवत्ता और समानता चाहते हैं।

समाधान:

- ✓ परिवार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाने की शिक्षा दी जाए।
- ✓ विवाह को एक जिम्मेदारी के बजाय साझेदारी के रूप में प्रस्तुत किया जाए।
- ✓ भावनात्मक बुद्धिमत्ता (emotional intelligence) का विकास किया जाए।

6. तकनीकी निर्भरता: नवाचार बनाम लत

नकारात्मक पक्ष: सोशल मीडिया और डिजिटल उपकरणों की लत वास्तविक जीवन के संबंधों और सामाजिक कौशल को कमजोर कर रही है।

सकारात्मक पक्ष: यह पीढ़ी तकनीकी रूप से अत्यधिक दक्ष है और नवाचार, स्टार्टअप और डिजिटल विकास में अग्रणी भूमिका निभा रही है।

समाधान:

- ✓ डिजिटल बैलेंस की अवधारणा को बढ़ावा दिया जाए।
- ✓ ऑफलाइन गतिविधियों और सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित किया जाए।
- ✓ तकनीक का उपयोग सीखने और रचनात्मक कार्यों के लिए किया जाए।

7. अधिकार बनाम कर्तव्य: असंतुलन से संतुलन की ओर

नकारात्मक पक्ष: Gen Z अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, लेकिन कई बार कर्तव्यों की अनदेखी करती है, जिससे सामाजिक संतुलन बिगड़ सकता है।

सकारात्मक पक्ष: यह पीढ़ी अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने में सक्षम है और सामाजिक मुद्दों के प्रति सजग है।

समाधान:

- ✓ शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों और जिम्मेदारियों पर जोर दिया जाए।
- ✓ समाज और परिवार में कर्तव्यबोध को विकसित किया जाए।
- ✓ नेतृत्व और सामाजिक सेवा के अवसर प्रदान किए जाएँ।

निष्कर्ष: जेनरेशन न न तो पूरी तरह खतरा है और न ही पूरी तरह आदर्श-यह एक परिवर्तनशील युग की जटिल और बहुआयामी पीढ़ी है। इसके भीतर अपार संभावनाएँ हैं, लेकिन साथ ही गंभीर चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। समस्या तब उत्पन्न होती है जब हम केवल आलोचना करते हैं या केवल प्रशंसा। वास्तविक समाधान संतुलन में है-समझ, मार्गदर्शन और सहयोग में। यदि इस पीढ़ी को सही दिशा, समर्थन और मूल्य दिए जाएँ, तो यही ऋक्षाप न मानवता के भविष्य को अधिक जागरूक, संवेदनशील और प्रगतिशील बना सकती है।

अतः आवश्यकता है कि हम इस पीढ़ी को दोष देने के बजाय उसके साथ मिलकर समाधान खोजें-तभी एक स्वस्थ, संतुलित और समृद्ध समाज का निर्माण संभव है।

कार्यस्थल पर महिला: चुनौतियाँ, संतुलन और सफलता

किरण कुमारी
मुख्य प्रबंधक एव संकाय
बड़ौदा एपेक्स अकादमी

सूरज की पहली किरण से पहले, वो चुपके से जग जाती है,
नींद अधूरी आँखों में ले, बच्चों को प्यार से जगाती है।
रसोई का ध्यान, टिफिन की फ़िक्र और घर का सारा काम,
खुद को भूलकर चलती है वो, लेने को दफ़्तर का नाम।

दफ़्तर की उन फाइलों में, हर दिन नए ताने सुनती है,
ज़हरीली उन बातों से, वो अपना धीरज बुनती है।
कोई कहता 'आरक्षण' है, कोई कहता 'किस्मत वाली' है,
तुम तो आगे बढ़ोगी ही, तुम्हारी राह खाली है।

काबिलियत को दरकिनार कर, 'महिला' का ठप्पा लगता है,
पद मिले तो लोग कहें- ये तो कोटे का रास्ता है।
पर कोई न देखे वो रातें, जब वो फाइलों संग जागती है,
घर और दफ़्तर के बीच, वो सांस-सांस को हाँफती है।

अपनी खुशियाँ, अपनी हसरत, उसने अपनों पर वार दी,
परिवार और करियर की खातिर, अपनी हस्ती मार दी।
पर जो तपता है विषम आग में, वही तो कुंदन बनता है,
वही तो हर बाधा को चीर, सफलता का आकाश चुनता है।

जब हार नहीं मानी उसने, तो वक़्त ने भी घुटने टेक दिए,
दुनिया के सारे तानों को, उसने पीछे फेंक दिए।
वो आरक्षण से नहीं, अपनी तपिश और मेहनत से जीती है,
वो आज की नारी है, जो संघर्षों का अमृत पीती है।

तृणमूल नवप्रवर्तन और रोजगार: समृद्धि की ओर कदम

डॉ. पंचशीला नोगिया
अनुसंधान सहयोगी-III
राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान–भारत

रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए और गरीबी ख़त्म करने के प्रयास के लिए तृणमूल नवप्रवर्तन बहुत महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। तृणमूल नवप्रवर्तन नियमित जीवन शैली के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर उत्पादों और तकनीकों के निर्माण में योगदान देता है, साथ ही कम विशेषाधिकार प्राप्त क्षेत्र को आगे बढ़ने का मौका देता है। नवाचारों ने ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं को काफी हद तक हल किया है क्योंकि अधिकांश नवप्रवर्तक कम औपचारिक शिक्षा वाले पारंपरिक समुदायों से संबंधित हैं। कई सरकारी और निजी संगठन न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर नवप्रवर्तन की उपयोगिता विकसित करने की दिशा में काम कर रहे हैं। तृणमूल नवप्रवर्तन विचारों को प्रायोगिक अनुसंधान के साथ मान्य करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें और बेहतर बनाया जा सके। कई वैज्ञानिक संगठन नवप्रवर्तकों के दावों को मान्य करने की दिशा में काम कर रहे हैं जो अंततः नवप्रवर्तनों से अधिक मूल्यवान उत्पाद बनाने में मदद करेंगे। उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार उपयोगिता बढ़ाने के लिए नवाचारों को और अधिक निखारने एवं आधुनिकीकरण की जरूरत है। तृणमूल नवप्रवर्तन को इस तरह से उन्नत करने की आवश्यकता है ताकि समाज की भलाई के लिए प्रभावकारी और विपणन योग्य प्रौद्योगिकियों को विकसित किया जा सके। नवप्रवर्तन आधारित प्रौद्योगिकी विकास से न केवल उद्योगों और उपयोगकर्ताओं को लाभ होगा बल्कि यदि उचित नीतियों का अनुपालन किया जाए तो नवाचार धारक को भी उचित लाभ मिल सकता है।

विभिन्न प्रकार के सामाजिक लाभ प्राप्त करने के लिए, औपचारिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार नीतियों में तृणमूल नवप्रवर्तन को बुनियादी हिस्से के रूप में शामिल किया जाना चाहिए। वर्तमान में तृणमूल नवप्रवर्तन से केवल छोटे स्तर पर स्थानीय रोजगार पैदा हो रहे हैं, जिन्हें सरकार की मदद से राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर बढ़ाने की जरूरत है। पारंपरिक ज्ञान धारकों के लिए एकस्व (पेटेंट) संरक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि उनके विचारों को संरक्षित किया जा सके जिससे प्रौद्योगिकी विकास में मदद मिलेगी। उनकी क्षमता को अधिकतम करने के लिए तृणमूल नवप्रवर्तन को स्टार्ट अप में परिवर्तित करने की दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए। वर्तमान में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने, तृणमूल स्तर के नवाचारों को कई राष्ट्रीय स्तर की योजनाओं के साथ जोड़ दिया है, ताकि उनका आसान या सुगम विकास किया जा सके। भारत जैसा देश पारंपरिक ज्ञान और नवाचारों में बेहद समृद्ध है, लेकिन अधिकांश नवाचारों को सामने आने का मौका नहीं मिलता है।

ग्रामीण नवप्रवर्तकों को व्यापक दर्शकों के बीच अपना ज्ञान प्रदर्शित करने के लिए एक मंच दिए जाने की आवश्यकता है। तभी नवप्रवर्तक समुदाय आय बढ़ाने, सामाजिक आवश्यकताओं को संबोधित करने और पर्यावरण के संरक्षण के साधनों की दिशा में कार्य कर सकते हैं। पर्याप्त रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए उल्लेखनीय क्षमता वाले तृणमूल नवाचार का बड़े पैमाने पर कार्यान्वयन ही दीर्घकालिक लक्ष्य होना चाहिए। हमें अधिक से अधिक नवप्रवर्तन का व्यावसायीकरण करने की आवश्यकता है ताकि पीढ़ी के साथ-साथ उन्हें लुप्त होने से बचाया जा सके। पारंपरिक ज्ञान एवं तृणमूल नवाचारों से लाभकारी उत्पाद बनाने के लिए विभिन्न देशों में बड़ी संख्या में कार्यक्रम चल रहे हैं। तृणमूल नवप्रवर्तन की वृद्धि और विकास को बनाए रखने के लिए अभी भी निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। यदि तृणमूल नवप्रवर्तन का सही ढंग से उपयोग और प्रचार किया जाए तो वे निश्चित रूप से भारत में प्रगति और गंभीर समस्याओं के समाधान में योगदान करेंगे। अनौपचारिक क्षेत्र से उभरने वाले नवाचारों के व्यावसायीकरण तंत्र को निश्चित रूप से उचित मान्यता की आवश्यकता है, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को भी फायदा हो सके जो निश्चित रूप से व्यापक स्तर पर नागरिकों की प्रगति और समृद्धि में सहायक होगा।

डाटा सेंटर का महत्व

सोनल भाटवडेकर
निदेशक
एस. टी. पी. आई-गांधीनगर
गिफ्ट सिटी, गांधीनगर, गुजरात

मुझे विश्वास है कि डाटा सेंटर का बढ़ता महत्व और उसके तकनीकी तथा औद्योगीकरण के बारे में जानकारी पढ़कर आप को हमारे तकनीकी क्षेत्र में हो रहे विकास को देखकर प्रसन्नता होगी।

डाटा सेंटर डिजिटल दुनिया के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये ऑनलाइन सेवाओं, एप्लिकेशनों और व्यवसायों को संचालित करने वाले विशाल मात्रा में डाटा को संग्रहित, संसाधित और वितरित करने वाली रीढ़ की हड्डी (Backbone) के रूप में कार्य करते हैं। डाटा सेंटर डाटा स्टोरेज, बैकअप, रिकवरी और सुरक्षा जैसी आवश्यक सेवाएं प्रदान करते हैं, जिससे व्यवसाय कुशलतापूर्वक संचालित हो सकें और बदलती डिजिटल आवश्यकताओं के अनुसार त्वरित प्रतिक्रिया दे सकें।

निम्नलिखित मुद्दों पर संकलित जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

1) **डाटा सेंटर के महत्व पर विस्तृत दृष्टिकोण**
2) **आज कल के डाटा सेंटर की भूमिका**
3) **डाटा सेंटर की भूमिका में परिवर्तन**
4) **डाटा सुरक्षा और साइबर ख़तरों की चुनौती**
5) **डाटा सेंटर कैसे काम करते हैं?**
6) **डाटा सेंटर के मुख्य घटक क्या हैं?**

1. डिजिटल दुनिया की आधारशिला और उसका महत्व

1) **डाटा सेंटर उन विशाल मात्राओं में डाटा को संग्रहित और प्रबंधित** करते हैं, जिन पर संगठन अपनी **दैनिक गतिविधियों** के लिए निर्भर रहते हैं। ये डाटा सेंटर उन आवश्यक हार्डवेयर को होस्ट करते हैं, जो व्यवसायों को उनके आईटी वातावरण को सुचारू रूप से संचालित करने में मदद करते हैं, जैसे:

- **नेटवर्क्स**
- **एप्लिकेशन**
- **सुरक्षा**
- **वर्चुअल मशीनें**

यदि डाटा सेंटर मौजूद न हो, तो किसी भी संगठन के पास अपनी हार्डवेयर-आधारित तकनीक को संचालित करने और व्यवसाय चलाने के लिए कोई आधार नहीं होता।

2) **व्यवसाय संचालन का समर्थन:**

- डाटा सेंटर व्यावसायिक अनुप्रयोगों और महत्वपूर्ण डाटा के लिए एक सुरक्षित और नियंत्रित वातावरण प्रदान करते हैं।
- ये व्यवसायों को उनका डाटा प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने, संग्रहित करने और एक्सेस करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे ईमेल, फ़ाइल साझा करना, ई-कॉमर्स लेन-देन जैसी गतिविधियाँ सुचारू रूप से चल सकें।
- डाटा पर अत्यधिक निर्भर व्यवसायों के लिए ये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये डाउनटाइम को न्यूनतम करने हेतु रेडंडेंसी और डिजास्टर रिकवरी जैसी क्षमताएँ प्रदान करते हैं।

3) **नवाचार और विकास को प्रोत्साहन देना: (Driving Innovation and Growth):**

- डाटा सेंटर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), बिग डाटा और मशीन लर्निंग जैसे क्षेत्रों में प्रगति के लिए अत्यावश्यक हैं, क्योंकि ये तकनीकें विशाल डाटा सेट और उच्च कंप्यूटिंग शक्ति पर निर्भर होती हैं।
- ये व्यवसायों को अपने संचालन का विस्तार करने और बदलती आवश्यकताओं के अनुसार खुद को ढालने की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे संग्रहण और कंप्यूटिंग संसाधनों को आवश्यकतानुसार समायोजित किया जा सके।
- डाटा सेंटर डिजिटल दुनिया में नए उत्पादों और सेवाओं के विकास और वितरण के लिए आधारभूत संरचना प्रदान करके नवाचार को बढ़ावा देते हैं।

4) **सुरक्षा और विश्वसनीयता सुनिश्चित करना: (Ensuring Security and Reliability):**

- डाटा सेंटर संवेदनशील डाटा को खतरों से बचाने के लिए मजबूत सुरक्षा उपाय अपनाते हैं, जिनमें भौतिक सुरक्षा, फ़ायरवॉल और एन्क्रिप्शन शामिल हैं।
- रेडंडेंसी और बैकअप सिस्टम यह सुनिश्चित करते हैं कि हार्डवेयर विफलताओं या आपदाओं की स्थिति में भी डाटा उपलब्ध रहे।

- डाटा प्रबंधन के केंद्रीकरण के माध्यम से ये कार्यकुशलता में सुधार लाते हैं और डाटा हानि या डुप्लिकेशन के जोखिम को कम करते हैं।

5) कनेक्टिविटी और सहयोग को सुगम बनाना:

- डाटा सेंटर दूरसंचार और नेटवर्क सेवाओं की रीढ़ हैं, जो फोन कॉल, टेक्स्ट संदेश और इंटरनेट कनेक्शन को सक्षम बनाते हैं।
- ये रियल-टाइम सहयोग उपकरणों और ऑनलाइन संचार प्लेटफ़ॉर्म का समर्थन करते हैं, जिससे निर्बाध संवाद और टीमवर्क संभव होता है।

सार रूप में, डाटा सेंटर केवल भौतिक स्थान नहीं हैं, बल्कि वे एक महत्वपूर्ण अवसंरचना हैं जो डिजिटल अर्थव्यवस्था को सक्षम बनाते हैं और आधुनिक समाज की नींव हैं।

ये व्यवसायों, सरकारों और व्यक्तियों - सभी के लिए आवश्यक हैं, क्योंकि ये न केवल ऑनलाइन सेवाओं के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करते हैं, बल्कि तकनीकी नवाचार की प्रगति और हमारे डिजिटल जीवन की सुरक्षा को भी सुदृढ़ करते हैं।

2. आज कल के डाटा सेंटर की भूमिका: डाटा सेंटर इस प्रकार डिज़ाइन किए जाते हैं कि वे व्यवसायों को डाटा को संग्रहित करने, वितरित करने और उसका विश्लेषण करने में सहायता करें। इसमें विभिन्न हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर उपकरणों का उपयोग किया जाता है, जो आईटी विभागों को डाटा प्रबंधन और आईटी अवसंरचना को बनाए रखने में मदद करते हैं। पहले के डाटा सेंटर निजी स्वामित्व वाले(Privately owned), ऑन-प्रिमाइसेस (स्थानीय) सुविधाओं से लैस होते थे, जिनमें पारंपरिक आईटी अवसंरचना (Traditional IT infrastructure) के अनेक घटक रखे जाते थे। लेकिन आज, क्लाउड टेक्नोलॉजी ने डाटा सेंटर की भूमिका को पूरी तरह से बदल दिया है। अब आधुनिक संगठनों को ऐसे एप्लिकेशन, वर्कलोड्स और अन्य वर्चुअल संसाधनों तक पहुंच मिलती है, जो तीसरे पक्ष के डाटा सेंटरों में दूरस्थ रूप (Remote form) से होस्ट किए जाते हैं। इन तीसरे पक्षों में प्रमुख पब्लिक क्लाउड प्रदाता जैसे कि amazon Web Services (AWS), Google Cloud, और MicrosoftAzure शामिल हैं।

ऑन-प्रिमाइसेस डाटा सेंटर से क्लाउड-नेटिव सेवाओं की ओर यह बदलाव, कई संगठनों के कार्य करने के तरीकों में महत्वपूर्ण परिवर्तन लेकर आया है। अब वे अपनी आईटी संसाधनों को आवश्यकता के अनुसार स्केल कर सकते हैं - यानी बढ़ा या घटा सकते हैं - और केवल उन्हीं संसाधनों के लिए भुगतान करते हैं जिनका वे उपयोग करते हैं। इससे उन्हें अपने स्वयं के डाटा सेंटर बनाने और बनाए रखने में आने वाले बड़े प्रारंभिक खर्चों से बचाव मिलता है।

इसके अतिरिक्त, क्लाउड प्रदाता (cloud providers) उन्नत सुरक्षा उपाय (advanced security measures) और आपदा पुनर्प्राप्ति (disaster recovery) समाधान भी प्रदान करते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि व्यवसायों का डाटा हर समय सुरक्षित और सुलभ रहा है।

ऑन-प्रिमाइसेस डाटा सेंटर से क्लाउड-नेटिव सेवाओं की ओर हुआ इस बदलाव ने कई संगठनों के कार्य संचालन के तरीके में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला दिया है। अब वे अपनी आईटी संसाधनों को आवश्यकतानुसार बढ़ा या घटा सकते हैं, केवल उन्हीं संसाधनों के लिए भुगतान करते हैं जिनका वे वास्तव में उपयोग करते हैं, और अपने स्वयं के डाटा सेंटर के निर्माण एवं रखरखाव से जुड़े भारी प्रारंभिक खर्चों से भी बच सकते हैं।

इसके अलावा, क्लाउड सेवा प्रदाता उन्नत सुरक्षा उपाय और आपदा पुनर्प्राप्ति समाधान (disaster recovery solutions) भी प्रदान करते हैं,जिससे यह सुनिश्चित होता है कि व्यवसायों का डाटा हर समय सुरक्षित और सुलभ बना रहे।

3. डाटा सेंटर की भूमिका में परिवर्तन : आज के दौर में डाटा सेंटर की भूमिका पहले से काफी बदल गई है। रिमोट वर्क (दूरस्थ कार्य) और मोबिलिटी के बढ़ते चलन ने संगठनों के लिए डाटा तक पहुँचने और उसका उपयोग करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है, जिससे पारंपरिक डाटा सेंटरों के लिए इन आवश्यकताओं को पूरा कर पाना चुनौतीपूर्ण हो गया है।

रिमोट और हाइब्रिड वर्क मॉडल सामान्य होने के कारण, डाटा की सुरक्षित और विश्वसनीय पहुँच की मांग तेजी से बढ़ी है। ऐसे में, संगठनों को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनके डाटा सेंटर सुरक्षित रिमोट एक्सेस प्रदान कर सकें। इसके लिए एक मजबूत और लचीले (Flexible) डाटा सेंटर इंफ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकता होती है, जो बैंडविड्थ सीमाएं, कनेक्टिविटी समस्याएं और साइबर खतरों जैसी रिमोट कार्य से जुड़ी चुनौतियों को संभाल सके।

4. **डाटा सुरक्षा और साइबर ख़तरों की चुनौती :** आज साइबर खतरों का स्तर पहले की तुलना में कहीं अधिक बढ़ गया है। रिमोट और हाइब्रिड कार्य प्रणाली के कारण डाटा व्यापक रूप से वितरित हो गया है और उपयोगकर्ता इंटरनेट के माध्यम से डाटा तक पहुँच बना रहे हैं, जिससे वह अधिक कमज़ोर और असुरक्षित हो गया है।

ऐसे में, पुराने हार्डवेयर-आधारित डाटा सेंटर सुरक्षा उपाय अब पर्याप्त नहीं रह गए हैं। डाटा की सुरक्षा अब कोई बाद की सोच नहीं होनी चाहिए, बल्कि प्राथमिकता होनी चाहिए।

इस दिशा में, कई व्यवसाय अब क्लाउड-आधारित जीरो ट्रस्ट आर्किटेक्चर अपना रहे हैं - यह एक ऐसी रणनीति है जो न केवल सुरक्षा जोखिम को कम करती है, बल्कि डाउनटाइम घटाने और आईटी संचालन को बेहतर बनाने में भी मदद करती है।

5. डाटा सेंटर कैसे काम करते हैं? डाटा सेंटर में ऐसे तकनीकी उपकरण

लगाए जाते हैं जो डाटा को संग्रहित, संसाधित और वितरित करने के लिए एक साथ कार्य करते हैं। इनमें शामिल होते हैं:

- **सर्वर**
- **स्टोरेज डिवाइसेस**
- **नेटवर्किंग और नेटवर्क सुरक्षा उपकरण**

डाटा सेंटर ऐसी विशाल सुविधाएं होती हैं, जहां कंप्यूटर सिस्टम और संबंधित उपकरण रखे जाते हैं ताकि डाटा को कुशलतापूर्वक संग्रहित, संसाधित और प्रबंधित किया जा सके – और वह विभिन्न उपकरणों व स्थानों तक पहुँचाया जा सके।

डाटा सेंटर कैसे प्रबंधित (managed) किए जाते हैं?

डाटा सेंटर का प्रबंधन उन पेशेवर टीमों द्वारा किया जाता है जो इस अवसंरचना और उपकरणों के संचालन एवं रखरखाव की देखरेख करती हैं। ये टीमें आमतौर पर विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों से मिलकर बनी होती हैं, जैसे कि सर्वर मेंटेनेंस, डाटा सेंटर नेटवर्किंग, और सुरक्षा।

डाटा सेंटर प्रबंधन (management) में सुविधा के तापमान और आर्द्रता की निगरानी करना, नियमित डाटा बैकअप लेना, हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का रखरखाव करना, तथा साइबर हमलों से सुरक्षा सुनिश्चित करना शामिल है। इसके अलावा, डाटा सेंटर का प्रबंधन यह सुनिश्चित करता है कि सुविधा कुशलतापूर्वक और लागत प्रभावी तरीके से संचालित हो, जिसमें ऊर्जा की खपत को कम करना और अपटाइम को अधिकतम करना शामिल है।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, डाटा सेंटर प्रबंधक उन्नत उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करते हैं, जैसे कि वर्चुअलाइजेशन, ऑटोमेशन, और मशीन लर्निंग (ML), ताकि संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जा सके और संचालन को सुचारू बनाया जा सके। प्रभावी प्रबंधन इस बात के लिए बेहद आवश्यक है कि उपयोगकर्ता आवश्यकतानुसार डाटा तक पहुँच सकें, और संगठन आज के डिजिटल युग में कुशलतापूर्वक काम करते हुए प्रतिस्पर्धात्मक बने रहें।

६. डाटा सेंटर के मुख्य घटक क्या हैं?

डाटा सेंटर के मुख्य घटक निम्नलिखित होते हैं:

सर्वर – ये प्रमुख कंप्यूटिंग डिवाइस होते हैं जो डाटा को प्रोसेस (संसाधित) और प्रबंधित करते हैं।

स्टोरेज डिवाइसेस – ये डाटा के बड़े भंडारण के लिए उपयोग में लाई जाती हैं।

नेटवर्किंग उपकरण – जैसे राउटर, स्विच, और अन्य घटक जो डाटा सेंटर के भीतर विभिन्न उपकरणों को आपस में जोड़ते हैं और संचार को सक्षम बनाते हैं।

डाटा सेंटर तकनीकें उन भौतिक और वर्चुअल घटकों की एक विस्तृत श्रृंखला को शामिल करती हैं, जो डाटा के संग्रहण, संसाधन और वितरण को संभव बनाती हैं। इनमें शामिल हैं:

- **सर्वर**
- **नेटवर्किंग उपकरण**
- **स्टोरेज सिस्टम**
- **वर्चुअलाइजेशन सॉफ्टवेयर**

सहायक अवसंरचना, जैसे बिजली आपूर्ति और शीतलन प्रणाली/कूलिंग सिस्टम – जिसमें एयर कंडीशनिंग, वेंटिलेशन, और कुछ मामलों में लिक्विड कूलिंग भी शामिल होती है, ताकि तापमान और आर्द्रता के स्तर को नियंत्रित रखा जा सके और उपकरणों को अधिक गर्म होने या खराब होने से बचाया जा सके।

आधुनिक डाटा सेंटर (Modern data centers) प्रदर्शन, विस्तार क्षमता और कार्यकुशलता को अनुकूलित करने के लिए क्लाउड कंप्यूटिंग, ऑटोमेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग जैसी उन्नत तकनीकों का भी उपयोग करते हैं।

इनके अलावा, डाटा सेंटरों में बैकअप पावर स्रोतों की भी आवश्यकता होती है, जैसे कि जेनरेटर या अनइंटरप्टिबल पावर सप्लाई (UPS), ताकि बिजली गुल होने की स्थिति में भी संचालन बाधित न हो और निरंतरता बनी रहे।

अंत में, मैं डेटा सेंटर व्यवसाय की प्रगति के बारे में मेरे पढ़ने में आई हुई प्रेरक जानकारी साझा करना चाहूंगा।

भारत में डाटा सेंटर उद्योग तेजी से बढ़ रहा है। डाटा सेंटर का उपयोग राष्ट्रीय सुरक्षा, इंटरनेट अवसंरचना (Internet infrastructure) और आर्थिक विकास जैसे क्षेत्रों में किया जाता है। वर्ष 2024 तक भारत की डाटा सेंटर क्षमता 950 मेगावॉट (MW) है, जो 2026 तक 1800 मेगावॉट तक पहुँचने की उम्मीद है। मार्च 2022 तक भारत में कुल 138 डाटा सेंटर हैं। वैश्विक स्तर पर भारत डाटा सेंटर की संख्या के लिहाज़ से 13वें स्थान पर है।

आपको यह भी जानकर प्रसन्नतता होगी के एस . टी . पी.आय. भी डाटा सेंटर की और क्लाउड की सेवांए /सर्विसेज़ शासकीय विभागों को, कंपनी को तथा स्टार्ट-अप को देती है।

इस Techade में, भारत के विकास पथ को देखकर आपको एक भारतीय होने पर गर्व महसूस होता है।

प्राचीन पारंपरिक ज्ञान द्वारा रोगाणुरोधी प्रतिरोध का समाधान

सुश्री स्मिता रामकुमार
कनिष्ठ सहयोगी
राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत

पुराने समय में अस्पताल के निर्माण या प्रतिजैविक (एंटीबायोटिक) की खोज से बहुत पहले, हमारे पूर्वजों के पास बीमारियों को दूर रखने और बीमारियों का इलाज करने का अपना तरीका था। भूमि के करीब रहते हुए, उन्होंने प्रकृति को ध्यान से देखा, धैर्यपूर्वक प्रयोग किया, और अपने निष्कर्षों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया। सदियों से उन्होंने पाया कि कुछ पौधे बुखार को ठंडा कर सकते हैं, अन्य घावों को साफ कर सकते हैं, और कुछ बीमारी शुरू होने से पहले भी रोक सकते हैं। इलाज और उपचार विधियों का यह जीवित भंडार, जिसे हम आज स्वदेशी पारंपरिक ज्ञान कहते हैं, लोगों के दैनिक अनुभवों से निर्मित एक अनमोल खजाना है। यह अक्सर लिखित रूप में नहीं होता, लेकिन परिवारों और समुदायों की स्मृति एवं अभ्यास में सुरक्षित और जीवंत रूप से संजोया जाता है।

जमीनी स्तर के उपचारक केवल ग्राम उपचारक से कहीं अधिक हैं। वे वनस्पतिशास्त्री, फार्मासिस्ट और सामुदायिक अभिभावक भी होते हैं। एक पारंपरिक उपचारक न केवल जानता है कि किस पत्ती या जड़ का उपयोग करना है, बल्कि वह यह भी समझता है कि उसे कब इकट्ठा करना है, कैसे तैयार करना है, और यह क्यों असर करता है। उन्होंने अनुभव किया है कि एक ही पौधा मौसम, मिट्टी या काटने के तरीके के अनुसार अलग-अलग प्रभाव दिखा सकता है। इस सावधानीपूर्वक अवलोकन का मतलब यह है कि पारंपरिक चिकित्सा प्रकृति के चक्रों और इसे उपयोग करने वाले लोगों की संस्कृति से गहरे रूप से जुड़ी हुई है।

आज दुनिया एक बड़े संकट का सामना कर रही है, जिसे हम रोगाणुरोधी प्रतिरोध कहते हैं। इसमें कई आधुनिक दवाएं अब रोगाणुओं के खिलाफ प्रभावी नहीं रह जातीं। मनुष्यों और जानवरों में एंटीबायोटिक्स का अधिक और गलत इस्तेमाल इस समस्या को और भी जटिल बना रहा है। अगर हम इसी तरह दवाओं का दुरुपयोग करते रहे, तो कई सामान्य संक्रमण भी इलाज के बिना रह जाएंगे। वैज्ञानिक अब समझ रहे हैं कि पारंपरिक ज्ञान प्रणाली इस समस्या का समाधान हो सकती हैं। ऐसा इसलिए नहीं कि वे जादुई हैं, बल्कि इसलिए कि ये चिकित्सा के अलग दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती हैं। पारंपरिक उपचार में उपयोग होने वाले औषधीय पौधों में सक्रिय फाइटोकेमिकल्स पाए जाते हैं, जो अकेले एक रासायनिक तत्व की तरह नहीं होते, बल्कि कई तरह से रोगाणुओं पर हमला करते हैं। इस बहु-आयामी हमला के कारण कीटाणुओं के लिए प्रतिरोध विकसित करना मुश्किल होता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये उपाय समय के साथ मानव शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बेहतर बनाते हैं।

उदाहरण के लिए, घावों की सफाई और त्वचा के संक्रमण के इलाज के लिए हमारी परंपराओं में नीम के पत्ते जाने जाते हैं। आधुनिक अध्ययनों से पता चला है कि नीम में निम्बिडिन और आज़ादिरचिन जैसे फाइटोकेमिकल्स होते हैं, जो विभिन्न तरीकों से बैक्टीरिया और कवक को मार सकते हैं। हल्दी, जिसे अक्सर गोल्डन मेडिसिन कहा जाता है, में करक्यूमिन होता है, जो न केवल बैक्टीरिया से लड़ता है, बल्कि सूजन को भी कम करता है और शीघ्र उपचार में मदद करता है। तुलसी, रोग प्रतिरक्षा को बढ़ावा देते हुए, वायरस, बैक्टीरिया और यहां तक कि कुछ परजीवियों के खिलाफ भी काम करती है। जब ऐसे कई पौधों को एक साथ औषधि के तौर पर उपयोग किया जाता है - जैसा कि कई पारंपरिक सूत्रीकरण (हर्बल फॉर्मूलेशनस) में होता है तो उनके प्रभाव और भी मजबूत हो जाते हैं।

पारंपरिक उपचार रोगाणुरोधी प्रतिरोध को कम करने में एक और कारण से मददगार हो सकते हैं कि वे अक्सर हमारे शरीर की अपनी रक्षा प्रणाली के साथ काम करते हैं। सभी रोगाणुओं (जो प्रतिरोध को प्रोत्साहित करते हैं) को पूरी तरह से मिटाने की कोशिश करने के बजाय, ये उपाय शरीर को मजबूत करते हुए, हानिकारक रोगाणुओं की संख्या को कम कर सकते हैं। आयुर्वेद और अन्य स्वास्थ्य प्रणालियों में प्रचलित यह संतुलित दृष्टिकोण, हल्की बीमारियों के लिए प्रतिजैविक दवाओं के अत्यधिक उपयोग को रोक सकता है। पारंपरिक ज्ञान को आज उपयोगी बनाने के लिए हमें इसे आधुनिक विज्ञान से जोड़ने की आवश्यकता है। इसका मतलब है कि हमारे बुजुर्गों और चिकित्सकों के उपचार का दस्तावेजीकरण करना, उनकी औषधियों की प्रभावशीलता और सुरक्षित उपयोग की पुष्टि करने के लिए प्रयोगशालाओं में उनका परीक्षण करना, और उन्हें मानक, आसानी से उपयोग करने वाले रूपों में उत्पादन करना आदि। यदि ये औषधीय पौधे-आधारित उपचार, स्वास्थ्य केंद्रों में उपलब्ध कराए जा सके, तो लोग उन्हें ठंड, खांसी, त्वचा संक्रमण और पेट की गड़बड़ी जैसी सामान्य समस्याओं के लिए उपयोग कर सकते हैं,

ऐसी स्थितियां जहां एंटीबायोटिक दवाओं को अक्सर अनावश्यक रूप से उपयोग किया जाता है। इस तरह के अनावश्यक उपयोग को कम करना रोगाणुरोधी प्रतिरोध को धीमा करने के सबसे महत्वपूर्ण तरीकों में से एक है।

राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत, विविध क्षेत्रों के जमीनी स्तर के नवप्रवर्तकों के साथ काम कर रहा है और पारंपरिक औषधीय उपायों की पहचान करने और उन्हें मान्य करने के लिए लगातार कार्यरत है। महत्वपूर्ण रूप से, रानप्र सुनिश्चित करता है कि समुदाय के ज्ञान को संरक्षित किया जाए और व्यावसायिक सफलता के लिए समर्थन दिया जाए।

पारंपरिक चिकित्सा में भी एक बड़ा सबक है – यह हमें अपने स्वास्थ्य के स्रोतों का सम्मान करना और उनकी रक्षा करना सिखाता है। यदि हम पारंपरिक औषधीय पौधों का ज्ञान खो देते हैं, तो हम कई लाभकारक औषधियों के निर्माण की संभावनाओं को भी खो देते हैं। यही कारण है कि सामुदायिक औषधीय उद्यान, पवित्र उपवन और जंगली पौधों का संरक्षण कितना महत्वपूर्ण है। वे न केवल उपचारों को आसानी से उपलब्ध कराते हैं, बल्कि वे जैव विविधता की भी रक्षा करते हैं, जो सीधे नए उपचार खोजने से जुड़ा हुआ है।

आज की वैज्ञानिक तकनीकों के साथ हमारे पूर्वजों के समय-परीक्षित ज्ञान को जोड़कर, भारत एक नयी रक्षा प्रणाली का निर्माण कर रहा है – जो प्रतिजैविक पर हमारी निर्भरता को कम करने के लिए औषधीय पौधों का उपयोग करता है, रोगाणुओं को प्रतिरोधी बनने से रोकता है, और हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करता है। यह दृष्टिकोण सभी के लिए बेहतर स्वास्थ्य (सतत विकास लक्ष्य 3), संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग (सतत विकास लक्ष्य 12) और भूमि पर जीवन की रक्षा (सतत विकास लक्ष्य 17) जैसे वैश्विक लक्ष्यों का भी समर्थन करता है।

सुपरबग्स के खिलाफ लड़ाई अकेले प्रयोगशालाओं में नहीं जीती जाएगी। यह उन आंगनों में भी जीती जाएगी, जहां तुलसी उगती है, नीम के पेड़ों की छाया में, और जमीनी स्तर के उपचारकों के हाथों में जिन्होंने हमारे लोगों को सदियों से स्वस्थ रखा है। उनका ज्ञान केवल इतिहास नहीं है – यह भविष्य के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है। तो याद रखें – ये केवल पौधे नहीं हैं, बल्कि सदियों से संजोई गई कहानियों के जीवंत अध्याय हैं। ये उन अनगिनत जमीनी स्तर के उपचारकों, किसानों, माताओं और बुजुर्गों की स्मृति समेटे हुए हैं, जिन्होंने अनुभव किया, अवलोकन किया और अपना पारंपरिक ज्ञान साझा किया ताकि हम आज स्वस्थ रह सकें। वे हमें स्पष्ट रूप से बता रहे है कि भविष्य में बेहतर स्वास्थ्य के लिए हम जिन उत्तरों की तलाश कर रहे हैं, वे पहले से ही हमारे पारंपरिक ज्ञान में समाहित हैं।

नराकास गांधीनगर को वर्ष 2024-25 के लिए नराकास राजभाषा सम्मान से सम्मानित किया गया.

नराकास गांधीनगर को वर्ष 2024-25 के लिए ख भाषायी क्षेत्र में नराकास राजभाषा सम्मान द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया । यह सम्मान दिनांक 14 सितंबर 2025 को महात्मा गांधी कन्वेन्शन सेंटर में आयोजित पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन एवं हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल के कर कमलों से नराकास गांधीनगर के अध्यक्ष श्री सुनील सिन्हा, महाप्रबंधक एवं मुख्य शिक्षण अधिकारी बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने ग्रहण किया । साथ ही दिनांक 15 सितंबर 2025 को नराकास गांधीनगर को सर्वश्रेष्ठ नराकास से भी सम्मानित किया गया। यह सम्मान श्रीमती अंशुलि आर्या, सचिव राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा श्री देबदत्त चांद, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, बैंक ऑफ बड़ौदा एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में श्री सुनील सिन्हा, अध्यक्ष नराकास एवं श्री सर्वेश तिवारी, सदस्य सचिव नराकास गांधीनगर एवं मुख्य प्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा प्राप्त किया गया. सभी सदस्य कार्यालयों को हार्दिक बधाई।

मानव गति का विज्ञान:
जिज्ञासा से 'गैट' और रोबोटिक्स के युग तक

मनीष शर्मा
सहायक प्राध्यापक
फैशन एवं जीवनशैली विभाग,
निफ़्ट गांधीनगर, गुजरात

मनुष्य का यह स्वभाव रहा है कि वह हर उस पहेली को सुलझाना चाहता है जो उसके अस्तित्व से जुड़ी है। सदियों से हम इस बात से हैरान थे कि हमारा शरीर दो पैरों पर इतना सटीक संतुलन कैसे बना लेता है। इसी जिज्ञासा ने जन्म दिया 'गैट एनालिसिस' (Gait Analysis) को–यानी मनुष्य के चलने की प्रक्रिया का वैज्ञानिक अध्ययन।

1.1 किंतु गैट (Gait) क्या है? शरीर की एक अनकही भाषा

सरल शब्दों में कहें तो, 'गैट' हमारे चलने का तरीका है। यह एक चक्रीय प्रक्रिया है, जिसे विज्ञान की भाषा में 'गैट साइकिल' भी कहते हैं। इसमें एक पैर के जमीन को छूने (Heel Strike) से लेकर दोबारा उसी पैर के जमीन को छूने तक की पूरी यात्रा शामिल होती है। हमारा दिमाग, हड्डियाँ और मांसपेशियां मिलकर एक सेकंड से भी कम समय में यह तय करती हैं कि कब शरीर का पूरा वजन एक पैर पर डालना है और कब दूसरे को आगे बढ़ाना है।

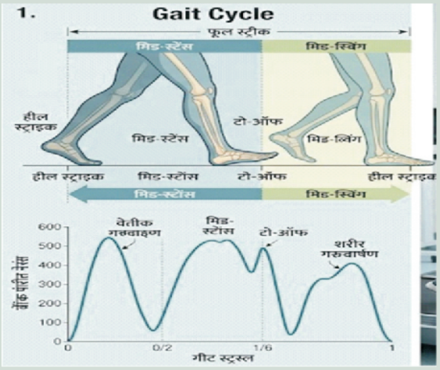

चित्र 1. गैट चक्र (GAIT Cycle) (जेमिनी से उत्पन्न)

इसे मुख्य रूप से दो चरणों में बांटा जाता है (चित्र 1):

1. स्टेंस फेज (Stance Phase): यह लगभग 60% समय होता है, जब पैर जमीन पर टिका होता है और शरीर का वजन संभालता है।
2. स्विंग फेज (Swing Phase): यह लगभग 40% समय होता है, जब पैर हवा में होता है और अगले कदम के लिए आगे बढ़ता है।

1.2 गैट एनालिसिस के मुख्य पैरामीटर्स (मापदंड)

गैट एनालिसिस केवल आँखों से देखना नहीं है; इसमें वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग करके कई माप लिए जाते हैं:

स्पेशियल–टेम्पोरल: इसमें गति, कदम की लंबाई और चलने की लय का अध्ययन किया जाता है।

काइनेमैटिक्स: यह जोड़ के कोणों–जैसे घुटने, टखने और कूल्हे–की गति को मापता है।

काइनेटिक्स: यह चलते समय जमीन पर लगने वाले बल, दबाव और टॉर्क का विश्लेषण करता है।

1.3 आर्म रोबोट से 'गैट' को समझने तक का सफर

शुरुआत में हमने मशीनों को अपने हाथों की तरह काम करना सिखाया। जिन्हें हम 'आर्म रोबोट' कहते हैं। इनका लक्ष्य पिक–एंड–प्लेस जैसे काम करना था। लेकिन असली चुनौती तब आई जब हमने मशीनों को इंसानों की तरह 'गैट' (चाल) देने की कोशिश की। हाथों को चलाना आसान था क्योंकि वे एक जगह स्थिर रहते हैं, लेकिन पैरों को चलाने के लिए पूरे शरीर का संतुलन और गुरुत्वाकर्षण केंद्र को हर पल बदलना पड़ता है।

चित्र 2. आर्म रोबोट से मानव चाल को समझने की यात्रा (जेमिनी से उत्पन्न)

1.4 तकनीकी संगम: गैट को कौन बना रहा है बेहतर?

2026 के इस दौर में, गैट एनालिसिस केवल डॉक्टरों तक सीमित नहीं है। इसे कई आधुनिक विधाएं मिलकर नई ऊंचाइयों पर ले जा रही हैं:

- **विजुअल ऑब्जर्वेशन:** यह सबसे प्रारंभिक विधि है, जहाँ फिजियोथेरेपिस्ट या न्यूरोलॉजिस्ट मरीज की चाल को ध्यान से देखते हैं ताकि किसी भी प्रकार की असामान्यता की पहचान की जा सके।
- **ऑप्टिकल सिस्टम:** ये बहुत सटीक प्रणालियां हैं। इसमें शरीर के जोड़ों पर छोटे 'मार्कर्स' लगाकर हाई–स्पीड 3D कैमरे गति को ट्रैक करते हैं। आजकल मार्कर–लेस सिस्टम भी आ गए हैं, जो एआई और कैमरे की मदद से बिना किसी सेंसर के सटीक एनालिसिस करते हैं।

- बायोमैकेनिक्स और इलेक्ट्रॉनिक्स: अब हम 'स्मार्ट वियरेबल सेंसर्स' का अपने दैनिक जीवन में भी उपयोग करते हैं। जड़त्व माप इकाइयाँ (Intertia Measurement Units, या आईएमयू) में एक एक्सेलेरोमीटर और एक जायरोस्कोप होता है जो अंतरिक्ष में 3 समन्वय अक्षों के साथ रैखिक और कोणीय त्वरण पर डेटा प्रदान करता है। विकृति मापी (Strain Gauges या स्ट्रेन गेज) सेंसर इस सिद्धांत के आधार पर बलों को मापते हैं कि जब बाहरी बल किसी पदार्थ पर लगता हैं, तो उसमे तनाव उत्पन्न होता है। ये सेंसर हमारे स्मार्टफ़ोन, स्मार्ट घड़ियों और फिटनेस बैंड में भी मौजूद हैं। स्मार्ट टेक्सटाइल्स में अंतर्निर्मित इन सेन्सरों जैसे पैरों में लगे आईएमयू और कपड़ों में लगे स्ट्रेन गेज, यह डेटा देते हैं कि चलते समय घुटने का कोण (Angle) क्या है, कितना बल लग रहा हैं, किस दिशा मे कितना मोशन हो रहा हैं।

चित्र 3 मानव शरीर का बायोमेकेनिक्स (जेमिनी से उत्पन्न)

- **प्रेशर मैपिंग:** यह तकनीक पैर के दबाव का विश्लेषण करती है। इसके लिए आधुनिक उपकरणों जैसे स्ट्राइडेवे' सिस्टम (टेस्कैन) का उपयोग किया जाता है, जो पैर के पंजों, दबाव और समय को मापकर यह बताते हैं कि चलते समय पैर का फंक्शन कैसा है।
- **आईटी और प्रोग्रामिंग:** सेंसर से मिलने वाला लाखों लाइनों का डेटा क्लाउड पर जाता है, जहाँ जटिल प्रोग्रामिंग के जरिए उसे एक विजुअल ग्राफ में बदला जाता है।
- **मशीन लर्निंग (ML):** हर इंसान का गैट अलग होता है। मशीन लर्निंग अल्गोरिदम इस डेटा को पढ़कर यह पहचान लेते हैं कि क्या किसी व्यक्ति की चाल में कोई असामान्यता है जो भविष्य में घुटने के दर्द का कारण बन सकती है।

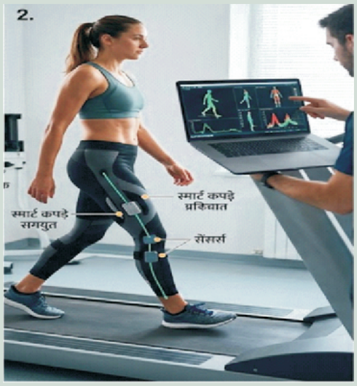

चित्र 4 - ट्रेड्मिल पर सेंसर्स से उतपन्न गैट डेटा को क्लाउड पर भेज कर विश्लेषण करके ग्राफ मे बदला जा रहा हैं। (जेमिनी से उत्पन्न)

1.4 रियल लाइफ उदाहरण: जब विज्ञान जीवन में उतरता है

1. **डायबिटीज के मरीज:** गैट एनालिसिस के जरिए यह पता लगाया जा रहा है कि मरीज के पैर के किस हिस्से पर ज्यादा दबाव पड़ रहा है, ताकि अल्सर (घाव) होने से पहले ही स्पेशल जूते डिजाइन किए जा सकें।
2. **स्पोर्ट्स ट्रेनिंग:** विराट कोहली जैसे एथलीट गैट एनालिसिस का उपयोग करते हैं ताकि दौड़ते समय उनकी ऊर्जा कम बर्बाद हो और वे इंजरी-फ्री रह सकें।
3. ह्यूमनॉइड रोबोट (जैसे 'Tesla Optimus'): ये रोबोट आज इंसानी गैट की नकल कर रहे हैं। अगर इन्हें सीढ़ियां चढ़नी हैं, तो ये ठीक उसी तरह अपने टखने को मोड़ते हैं जैसे हम और आप।

चित्र 5 -ह्यूमनॉइड रोबोट (जेमिनी से उत्पन्न)

निष्कर्ष

आर्म रोबोट से शुरू हुई यह यात्रा, आज मानव की सबसे जटिल क्रिया 'गैट' को डिकोड करने तक पहुँच गई है। आज रोबोटिक्स, एआई और इलेक्ट्रॉनिक्स मिलकर एक ऐसी दुनिया का निर्माण कर रहे हैं, जहाँ मशीनें न केवल हमसे मिल कर हमारे जैसे काम करेंगी, बल्कि हमारी तरह सहजता से चल भी सकेंगी। अंततः, गैट एनालिसिस हमें यह अहसास कराता है, कि जिसे हम एक साधारण सी 'चाल' समझते हैं, वह प्रकृति द्वारा बनाई सबसे बेहतरीन इंजीनियरिंग है।

जीवन में अनुशासन का महत्व

श्रीमती छालिनी छापडिया
सहायक प्रबन्धक
क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद,
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

प्रस्तावना

मानव जीवन की सफलता, शांति और प्रगति का आधार अनुशासन है। यदि जीवन को एक बहती हुई धारा माना जाए तो अनुशासन उस धारा के दोनों किनारे हैं जो उसे सही दिशा में बहने का मार्ग देते हैं। बिना अनुशासन के जीवन अव्यवस्थित, अराजक और निष्फल हो जाता है। वास्तव में अनुशासन केवल किसी बाहरी नियम या बंधन का नाम नहीं, बल्कि यह हमारे भीतर की वह सजगता है जो हमें सही और गलत का बोध कराती है तथा हमारे आचरण, व्यवहार और विचारों को मर्यादा में रखती है।

आज की प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीकी युग में अनुशासन का महत्व और भी बढ़ गया है। व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक या व्यावसायिक-हर क्षेत्र में अनुशासन के बिना न तो व्यवस्था संभव है और न ही प्रगति। इसीलिए कहा गया है-

अनुशासन ही जीवन है, अनुशासनहीनता मृत्यु।

अनुशासन का अर्थ और स्वरूप

'अनुशासन' शब्द का तात्पर्य है-'नियत नियमों का पालन'। इसका अर्थ है स्वयं को किसी व्यवस्था, मर्यादा या नियम के अधीन रखना। अनुशासन दो प्रकार का हो सकता है-

1. बाह्य अनुशासन : जो समाज, संस्था, विद्यालय, परिवार या संगठन द्वारा बनाए गए नियमों के पालन से जुड़ा है।
2. आंतरिक अनुशासन : जो व्यक्ति के आत्मनियंत्रण, आत्मसंयम और आत्मजागरण से उत्पन्न होता है।

सच्चा अनुशासन तभी संभव है जब बाहरी नियम और भीतर की आत्मजागृति मिलकर कार्य करें।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अनुशासन का महत्व

1. **व्यक्तिगत जीवन में :** अनुशासन व्यक्ति को नियमित और संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है। समय पर सोना-जागना, नियमित व्यायाम करना, भोजन में संयम रखना, पढ़ाई-लिखाई या कार्य में ध्यान लगाना- ये सब व्यक्तिगत अनुशासन के रूप हैं। एक अनुशासित व्यक्ति कभी भी अपने लक्ष्य से भटकता नहीं।
2. **पारिवारिक जीवन में :** परिवार किसी भी समाज की इकाई है। यदि परिवार में अनुशासन नहीं होगा तो वहाँ कलह, अशांति और असंतोष का माहौल होगा। माता-पिता यदि बच्चों के लिए मर्यादाएँ और नियम निर्धारित करें और स्वयं भी उनका पालन करें तो परिवार सौहार्दपूर्ण और संस्कारित बनेगा।
3. **शैक्षिक जीवन में :** विद्यालय और विश्वविद्यालय में अनुशासन का महत्व सर्वाधिक है। विद्यार्थी यदि अनुशासित होगा तो वह न केवल अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त करेगा, बल्कि भविष्य में भी जिम्मेदार नागरिक बनेगा। अनुशासनहीन छात्र न केवल अपना भविष्य बिगाड़ता है, बल्कि संस्था की गरिमा भी धूमिल करता है।
4. **सामाजिक जीवन में :** समाज तभी सुव्यवस्थित रह सकता है जब नागरिक अनुशासन का पालन करें। यातायात के नियमों का पालन, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, समय पर कर चुकाना, दूसरों के अधिकारों का सम्मान करना-ये सामाजिक अनुशासन के उदाहरण हैं। यदि समाज का प्रत्येक सदस्य अनुशासित हो तो अपराध, हिंसा और अराजकता स्वतः ही समाप्त हो जाए।
5. **व्यावसायिक और संस्थागत जीवन में :** कार्यालय, बैंक, उद्योग, सेना, पुलिस, न्यायपालिका या किसी भी संगठन का संचालन अनुशासन के बिना असंभव है। अनुशासनहीन कर्मचारी न केवल अपने लिए कठिनाई उत्पन्न करता है बल्कि संस्था की उत्पादकता और प्रतिष्ठा को भी हानि पहुँचाता है। इसी कारण कार्यस्थलों पर समयपालन, नियमपालन और कार्य-निष्ठा पर विशेष बल दिया जाता है।
6. **राष्ट्रीय जीवन में :** राष्ट्र का उत्थान उसके नागरिकों के अनुशासन पर निर्भर करता है। जापान इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद नष्टप्राय जापान ने अनुशासन, परिश्रम और समर्पण के बल पर

कुछ ही दशकों में विश्व की आर्थिक महाशक्ति का दर्जा प्राप्त किया। भारत जैसे विशाल लोकतंत्र में भी यदि नागरिक और नेता अनुशासित हों तो विकास की राह और तेज़ हो सकती है।

अनुशासन और सफलता का संबंध

- सफलता और अनुशासन का सीधा संबंध है। विश्व के सभी महा व्यक्तियों के जीवन में अनुशासन का विशेष स्थान रहा है।
- महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का कठोर अनुशासन से पालन कर स्वतंत्रता आंदोलन को सफल बनाया।
- स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को आत्मानुशासन और संयम को सफलता की कुंजी बताया।
- वैज्ञानिक, खिलाड़ी, लेखक, कलाकार–सभी अपनी–अपनी सफलता का श्रेय अनुशासित दिनचर्या को ही देते हैं।

बिना अनुशासन के प्रतिभा भी निष्फल सिद्ध होती है।

अनुशासन की कमी और उसके दुष्परिणाम

- आज की उपभोक्तावादी और सुविधाभोगी संस्कृति में अनुशासन का ह्रास देखा जा रहा है।
- विद्यार्थी समय पर अध्ययन नहीं करते, परीक्षा में नकल का सहारा लेते हैं।
- कार्यक्षेत्र में लापरवाही, देर से आना और कर्तव्य से विमुख होना आम हो गया है।
- सड़क पर यातायात नियमों की अवहेलना से प्रतिदिन हजारों लोग दुर्घटनाओं का शिकार हो रहे हैं।
- राजनीति में भी अनुशासनहीनता और अवसरवादिता ने भ्रष्टाचार और अव्यवस्था को बढ़ावा दिया है।
- अनुशासन का अभाव व्यक्ति और समाज दोनों को पतन की ओर ले जाता है।

अनुशासन विकसित करने के उपाय

अनुशासन जन्मजात नहीं होता, यह अभ्यास और शिक्षा से विकसित होता है।

1. **बाल्यावस्था से प्रशिक्षण :** बच्चों में नियमों का पालन, समयबद्धता और आत्मसंयम की आदत डाली जानी चाहिए।
2. **शिक्षा में मूल्याधारित दृष्टिकोण :** विद्यालयों में केवल अंक नहीं, बल्कि अनुशासन और नैतिक शिक्षा पर भी बल होना चाहिए।
3. **आत्मचिंतन और आत्मनियंत्रण :** व्यक्ति को अपने व्यवहार का नियमित मूल्यांकन करना चाहिए।
4. **आदर्श प्रस्तुत करना :** माता–पिता, शिक्षक और नेता स्वयं अनुशासित रहकर दूसरों के लिए प्रेरणा बनें।
5. **कानून और दंड :** जहाँ आवश्यक हो, अनुशासन बनाए रखने के लिए उचित दंड या कठोर कदम उठाए जाएँ।

आधुनिक संदर्भ में अनुशासन

आज का युग डिजिटल और वैश्वीकरण का युग है। सूचना की तीव्रता और प्रतिस्पर्धा के दबाव ने अनुशासन को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है।

- **सोशल मीडिया का विवेकपूर्ण प्रयोग,**
- **मोबाइल और इंटरनेट पर समय का नियमन,**
- **ऑनलाइन कार्य या वर्क फ्रॉम होम में समयपालन,**
- **ये सब आधुनिक जीवन में अनुशासन की नई परिभाषाएँ हैं।**

यदि हम डिजिटल सुविधाओं का अनुशासनपूर्वक उपयोग करें तो ये वरदान सिद्ध होंगी, अन्यथा अभिशाप बन जाएँगी।

अनुशासन और स्वतंत्रता का संतुलन

कुछ लोग मानते हैं कि अनुशासन स्वतंत्रता को सीमित कर देता है। परंतु वास्तविकता यह है कि अनुशासन स्वतंत्रता का शत्रु नहीं, बल्कि उसका संरक्षक है। जैसे सड़क पर ट्रैफिक नियम हमारी स्वतंत्रता को सीमित नहीं करते, बल्कि हमें सुरक्षित और व्यवस्थित ढंग से गंतव्य तक पहुँचाते हैं, उसी प्रकार अनुशासन जीवन को सुरक्षित और सार्थक बनाता है।

उपसंहार

जीवन को सुगठित, सुव्यवस्थित और सार्थक बनाने के लिए अनुशासन अनिवार्य है। यह केवल नियमों का पालन भर नहीं, बल्कि आत्मसंयम, आत्मजागरण और आत्मनियंत्रण की प्रक्रिया है। अनुशासन से ही व्यक्ति अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सकता है, परिवार और समाज को आदर्श बना सकता है तथा राष्ट्र को महानता की ओर ले जा सकता है।

आज की पीढ़ी के लिए आवश्यक है कि वे अनुशासन को किसी बंधन के रूप में न देखें, बल्कि इसे आत्मविकास और सफलता की कुंजी मानें। जिस समाज के नागरिक अनुशासित होते हैं, वहाँ सद्भाव, प्रगति और शांति स्वतः स्थापित हो जाती है।

इसलिए–

अनुशासन जीवन की वह धुरी है, जिस पर सफलता और सुख–शांति का चक्र घूमता है।

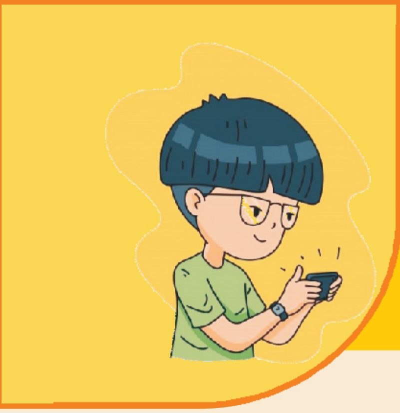

पढ़ने की घटती आदत

श्री आशुतोष सिंह राठौर
सहायक प्रबन्धक
क्षेत्रीय कंप्यूटर केंद्र(अहमदाबाद),
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

मनुष्य के जीवन में पढ़ने की आदत सदियों से ज्ञान, विवेक और संस्कारों का स्रोत रही है। किताबें केवल शब्दों का संग्रह मात्र नहीं होतीं, वे जीवन के अनुभवों, समाज के उत्थान और मानवता के विकास की सबसे बड़ी धरोहर हैं। किंतु विडम्बना यह है कि आज के युग में, जहाँ ज्ञानार्जन के असंख्य साधन उपलब्ध हैं, वहीं पारंपरिक अर्थों में 'पढ़ने की आदत' तेज़ी से कम होती जा रही है। यह केवल भारत की समस्या नहीं है, बल्कि पूरे विश्व में एक गंभीर चिंता का विषय है।

पढ़ने की आदत का महत्व

पढ़ना केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के सोचने की क्षमता, कल्पनाशक्ति और व्यक्तित्व निर्माण का आधार है। जो व्यक्ति नियमित पढ़ने की आदत विकसित करता है, वह जीवन की परिस्थितियों का गहन विश्लेषण कर पाता है। पढ़ने से व्यक्ति के भीतर संवेदनशीलता, धैर्य और रचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

साहित्यकारों का मानना है कि किताबें व्यक्ति को अकेलेपन में सबसे सच्चा साथी देती हैं। वे मनोरंजन भी करती हैं और मार्गदर्शन भी। एक अच्छी पुस्तक मनुष्य को वह सिखा सकती है, जो शायद अनुभवों से वर्षों में भी न सीखा जा सके।

बदलते परिवेश में पढ़ाई का स्वरूप

यदि हम पिछले दो-तीन दशकों को देखें तो पाएँगे कि पढ़ने की आदत धीरे-धीरे इलेक्ट्रॉनिक साधनों और डिजिटल माध्यमों के सामने कमज़ोर पड़ती गई है। जहाँ पहले लोग समाचारपत्र, पत्रिकाएँ और उपन्यास नियमित पढ़ते थे, वहीं आज अधिकांश लोग मोबाइल फ़ोन की स्क्रीन पर छोटी-छोटी ख़बरें या सोशल मीडिया की पोस्ट पढ़कर ही संतुष्ट हो जाते हैं।

आज का पाठक धैर्य खो चुका है। लंबा लेख या गहन पुस्तक पढ़ने की बजाय, वह 'दो मिनट' में जानकारी पाने की प्रवृत्ति का शिकार हो गया है। यही कारण है कि 'रीडिंग कल्चर' की जगह अब 'स्क्रॉलिंग कल्चर' ने ले ली है।

घटने के प्रमुख कारण

पढ़ने की आदत में आई गिरावट के पीछे कई कारण ज़िम्मेदार हैं-

1. **तकनीकी युग का प्रभाव :** स्मार्टफ़ोन, टैबलेट और इंटरनेट ने जहाँ सुविधाएँ दी हैं, वहीं किताबों से दूरी भी बढ़ाई है। ऑनलाइन वीडियो, वेब सीरीज़ और गेम्स ने युवाओं का समय और ध्यान खींच लिया है।

2. **तेज़ जीवनशैली :** आज की भागदौड़ भरी ज़िंदगी में लोगों के पास अपने लिए समय निकालना कठिन हो गया है। कामकाज और परिवार की ज़िम्मेदारियों के बीच किताबें पढ़ना गौण हो गया है।

3. **क्षणिक संतुष्टि की आदत :** सोशल मीडिया ने लोगों की रुचि को त्वरित और सतही सामग्री की ओर मोड़ दिया है। पाँच मिनट के छोटे-छोटे वीडियो और मीम संस्कृति ने गहरी और गंभीर सामग्री को पीछे धकेल दिया है।

4. **पुस्तकालयों और पुस्तक मेलों का अभाव** छोटे कस्बों और गाँवों में आज भी पुस्तकालय दुर्लभ हैं। पुस्तक मेलों और साहित्यिक आयोजनों की संख्या भी पहले की अपेक्षा कम हो गई है।

5. **पाठ्यपुस्तक-केंद्रित सोच :** बच्चों में पढ़ने की आदत केवल परीक्षा पास करने तक सीमित कर दी गई है। पढ़ने को आनंद और आत्मविकास का साधन मानने की बजाय, केवल 'अंक प्राप्त करने' का साधन बना दिया गया है।

इसके दुष्परिणाम

- ❖ पढ़ने की आदत का कम होना केवल एक सांस्कृतिक समस्या नहीं है, बल्कि यह समाज के भविष्य को प्रभावित करने वाला संकट है।
- ❖ भाषा पर असर – पढ़ने से भाषा समृद्ध होती है, शब्द-भंडार बढ़ता है। किताबों से दूरी ने युवाओं की भाषा को सीमित और संक्षिप्त बना दिया है।
- ❖ सोचने-समझने की क्षमता कम होना – लगातार सतही जानकारी लेने से गहन चिंतन और विश्लेषण की आदत कम हो गई है।
- ❖ रचनात्मकता पर प्रहार – साहित्य और पुस्तकों का गहरा अध्ययन व्यक्ति की कल्पनाशक्ति को प्रखर करता है। पढ़ने की कमी ने रचनात्मकता को बाधित किया है।
- ❖ सांस्कृतिक विरासत से दूरी – किताबें हमारी परंपरा, संस्कृति और इतिहास का संरक्षण करती हैं। नई पीढ़ी जब इन्हें नहीं पढ़ेगी, तो अपनी जड़ों से दूर होती जाएगी।

पुनर्जागरण की आवश्यकता

यदि हमें समाज को ज्ञान-आधारित और सशक्त बनाना है, तो पढ़ने की आदत को पुनर्जीवित करना अनिवार्य है। इसके लिए कुछ ठोस कदम उठाने होंगे-

1. **पारिवारिक माहौल** – बच्चों को बचपन से ही किताबों से जोड़ना ज़रूरी है। माता-पिता यदि स्वयं पढ़ने की आदत अपनाएँगे, तो बच्चे भी स्वाभाविक रूप से उसका अनुकरण करेंगे।
2. **विद्यालय और महाविद्यालय की भूमिका** – शिक्षण संस्थानों में केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित रहने की बजाय, अतिरिक्त पठन सामग्री को प्रोत्साहित करना चाहिए। पुस्तकालयों को आकर्षक और जीवंत बनाना होगा।
3. **पुस्तकालय संस्कृति का विकास** – हर शहर, कस्बे और गाँव में सुलभ पुस्तकालय स्थापित किए जाने चाहिए। सरकारी और निजी संस्थाएँ मिलकर इस दिशा में काम कर सकती हैं।
4. **डिजिटल का सकारात्मक उपयोग** – यदि लोग मोबाइल और इंटरनेट से आकर्षित हैं, तो इस मंच का भी उपयोग पढ़ने की आदत बढ़ाने में किया जा सकता है। ई-बुक्स, ऑडियोबुक्स और ऑनलाइन साहित्यिक मंच लोगों को आकर्षित कर सकते हैं।
5. **साहित्यिक आयोजनों का विस्तार** – पुस्तक मेले, साहित्यिक सम्मेलन और पाठक-लेखक संवाद जैसे कार्यक्रम युवाओं को प्रेरित करेंगे। ऐसे आयोजनों में सहभागिता से पढ़ने का आनंद और रुचि दोनों बढ़ते हैं।
6. **सरकारी नीतियाँ** – सरकार को 'पढ़ो भारत' जैसे अभियानों को और सशक्त बनाना चाहिए। किताबों को सस्ती और सुलभ बनाना, प्रकाशन उद्योग को प्रोत्साहन देना भी आवश्यक है।

निष्कर्ष

पढ़ने की आदत का कम होना केवल व्यक्तिगत हानि नहीं है, यह सामाजिक और सांस्कृतिक क्षति भी है। किताबें हमें सोचने की गहराई, भाषा की सुंदरता और जीवन की सच्चाई से परिचित कराती हैं। यदि हम पुस्तकों से दूरी बना लेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ ज्ञान से अधिक सूचना-निर्भर होंगी। सूचना क्षणिक होती है, जबकि ज्ञान शाश्वत।

इसलिए हमें मिलकर यह प्रयास करना होगा कि पढ़ने की संस्कृति को पुनर्जीवित किया जाए। परिवार, विद्यालय, समाज और सरकार-सभी स्तरों पर पहल की आवश्यकता है। यदि हम आज बच्चों और युवाओं को किताबों से जोड़ पाएँ, तो कल का समाज अधिक विवेकशील, संवेदनशील और रचनात्मक होगा।

आइए, हम सब संकल्प लें कि चाहे तकनीक कितनी भी आगे बढ़ जाए, किताबों से हमारा रिश्ता कभी न टूटे। क्योंकि किताबें ही वे दीपक हैं, जिनकी रोशनी पीढ़ियों को मार्गदर्शन देती आई है और आगे भी देती रहेंगी।

कोहिनूर

फोरम ब्रह्मभट्ट
वरिष्ठ सहायक,
न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी लिमिटेड,
गांधीनगर मण्डल कार्यालय

इस दुनिया में कई तरह के लोग होते हैं। पर कौन किसको कितना महत्व देता है, यह हमें पता नहीं चलता, क्योंकि सबके चेहरे पर एक नकाब होता है। जो वक्त आने पर ही हमें पता चलता है। जब असली चेहरे का पता चलता है, तब सामने वाले पर क्या गुजरती है, किसीने सोचा है? सोचिए मत, क्योंकि मैं आज उसी से जुड़ी एक दिलचस्प कहानी बताती हूँ।

एक बड़ा राजमहल था। राजमहल में कई तरह के लोग काम करते थे। उसमें एक टिकु नाम की छोटी सी लड़की थी, जो सफाई का काम करती थी। रोज की तरह आज भी वह सफाई करने लगी। वहां उसे आज एक हीरो की माला मिली। वह कोई मामूली माला नहीं थी, असली कोहिनूर जड़ित हीरो की माला थी। उसने किसी को बताया नहीं, बल्कि वह माला अपने पास छुपा ली। और वह माला लेकर चल पड़ी।

रास्ते में एक सुनार की दुकान पर उसने वह हीरो की माला दी और बोली, क्या यह असली है? तो सुनार ने सोचा कि यह कहीं से चोरी करके लाई होगी, क्योंकि यह बहुत ही कीमती थी। और सुनार ने लेने से मना कर दिया और कहा, यह तो किसी काम की नहीं है क्योंकि यह नकली है। तब वह माला उसने फेंक दी।

वह सुनार देख रहा था। उसने जाकर वह माला ले ली और वह लेकर बड़े हीरो के व्यापारी के पास गया। बड़े व्यापारी ने भी लेने से मना कर दिया और कहा, यह तो किसी काम की नहीं है क्योंकि यह नकली है। और इसी तरह माला को नकली कहकर सुनार अपनी किस्मत से नाराज हो गया। वह माला एक नदी में फेंक दी और वहां से चला गया। तब वह माला टूट गई। क्योंकि जिस लड़की को मिली थी, वह उसे परख नहीं सकती थी, पर सुनार ने भी मना कर दिया, शायद वह भी लालच में था। पर जो उसका जानकार था, उसने मना कर दिया, क्योंकि उसे उसकी असली पहचान पता थी।

और क्या होना था? माला तो टूटनी ही थी, क्योंकि माला ने सभी के चेहरे से नकाब हटा हुआ चेहरा जो देखा था। इस कहानी में लालच नाम के नकाब की वजह से सभी लोगों ने उस हीरो की माला को नकली बताया और उसकी असली पहचान छुपा दी। वक्त आने पर, जब कोई आपको पहचान कर भी न पहचाने, उस वक्त जब आपको अपनी पहचान की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, तब बहुत दुख होता है। तब आपकी कोई पहचान ही नहीं रहती। आप भी हीरो की माला की तरह पूरी तरह टूट जाते हो।

जब कोई कोहिनूर को पहचान कर भी किसी लालच, झूठ, फरेब, बेईमानी जैसे कई नकाबों के कारण उसे ठुकरा देता है, तो आपकी असली पहचान छिपी ही रहेगी। इसलिए जरूरी है ऐसे नकाब को हटाने की, क्योंकि हर किसी में एक कोहिनूर छुपा होता है। क्या पता आपको भी कोई कोहिनूर मिल जाए।

मानकीकरण: गुणवत्ता–नियंत्रण और आधुनिक संगठनों में निरंतर सुधार की नींव

अशफाक खान
परियोजना विश्लेषक
बायसेग–एन

इक्कीसवीं सदी के गतिशील और जटिल व्यावसायिक वातावरण में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त बनाए रखने के लिए संगठनों को लगातार उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद और सेवाएँ प्रदान करना अपेक्षित है। साथ ही परिचालन दक्षता को अनुकूलित करना भी आवश्यक होता है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण है, विशेष रूप से बढ़ती बाज़ार प्रतिस्पर्धा, नियामक अनुपालन और नवाचार की आवश्यकता के संदर्भ में मानकीकरण इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। मानकीकरण व्यावसायिक प्रक्रियाओं के प्रबंधन के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि सम्पूर्ण संगठन में कार्य सुसंगत और कुशल पद्धति से किए जाएँ।

इस श्वेतपत्र का उद्देश्य मानकीकरण की व्यापक उपयोगिता को प्रस्तुत करना है। साथ ही मानकीकरण के विभिन्न आयामों की जाँच यह समझना है कि यह किसी संगठन की समग्र सफलता में मानकीकरण कैसे योगदान दे सकता है। इस श्वेतपत्र में मानकीकरण के रणनीतिक महत्व, कर्मचारी जुड़ाव पर इसके प्रभाव, त्रुटियों को कम करने में मानकीकृत प्रशिक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका तथा गुणवत्ता व संचार सुरक्षा संस्कृति के निर्माण में मानकीकरण की केंद्रीय भूमिका पर गहराई से विचार किया जाएगा। विभिन्न अंतर्दृष्टियों को एकीकृत करके, एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा कि कैसे मानकीकरण का लाभ उठाकर परिचालन उत्कृष्टता और सतत व्यावसायिक विकास को प्रेरित किया जा सकता है।

मानकीकरण का तात्पर्य किसी संगठन में उत्पादों, सेवाओं, प्रक्रियाओं एवं दिशानिर्देशों के एक सुसंगत समूह को विकसित करने, तथा स्थापित करने और बनाए रखने की प्रक्रिया से है। ये मानक व्यावसायिक संचालन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित हो सकते हैं, जिनमें उत्पाद डिज़ाइन, विनिर्माण प्रक्रियाएँ, गुणवत्ता नियंत्रण, सूचना सुरक्षा नियम और ग्राहक सेवा सम्मिलित हैं। मानकीकरण का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी गतिविधियाँ एक समान व्यवस्थित विधि से की जाएँ, जिससे पूर्वानुमानित और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त हों (आई.एस.ओ, 21001)।

अपने सबसे मूलभूत रूप में, मानकीकरण में सर्वोत्तम कार्यविधियों का अभिलेखन और ऐसे नियामक की स्थापना अपेक्षित है जो यह निर्धारित व नियंत्रित करने कि विशिष्ट कार्यों को कैसे निष्पादित किया जाना चाहिए। अभिलेखन सभी कर्मचारियों के लिए एक संदर्भ बिंदु के रूप में कार्य करता है और यह सुनिश्चित करता है की सभी एकसमान व उच्चस्तरीय प्रक्रियाओं का पालन करे। समय के साथ, जैसे–जैसे नई उच्चस्तरीय पद्धतियाँ विकसित होती हैं उनके अनुरूप ये मानक भी विकसित हो सकते हैं, परंतु इस प्रक्रिया में सुसंगतता का मूल सिद्धांत स्थिर रहता है।

अधिकांशतः या तो औसत स्तर पर कार्यशील रहते हैं अथवा सतत सुधार की दिशा में प्रयत्नशील रहते हैं। औसत स्तर के संगठनों में हर दिन एक नई, अप्रत्याशित समस्या लेकर आता है। अधिकतर समय त्रुटियों को रोकने की अपेक्षा उन्हें ठीक करने में व्यय हो जाता है । जब कोई परियोजना आरंभ होती है, कर्मचारियों को सब कुछ पूर्व से समझना पड़ता है, भले ही किसी अन्य समूह ने कुछ महीने पहले ही इसी तरह की परियोजना पूर्ण की हो। संगठन मे अनुभव व ज्ञान कहीं लुप्त हो जाता है।

ग्राहक का अनुभव अनुमानित नहीं होता। एक दिन यह उच्चस्तरीय होता है, अगले दिन यह निम्नस्तरीय भी हो। गुणवत्ता की विश्वसनीयता का कोई निश्चित स्तर नहीं रह जाता है।

उत्पाद व सेवाओं की सफलता कुछ प्रमुख व्यक्तियों पर निर्भर होती हैं। उनकी अनुपस्थिति मे सब कुछ स्थिर हो जाता है जो की अति भयावह स्थिति है। जब परिणाम विपरीत होते हैं, तो यह जानना कठिन होता है कि ऐसा क्यों हुआ। क्या यह किसी व्यक्ति विशेष की त्रुटि थी? क्या यह उपकरण की त्रुटि थी? क्या यह कार्य विधि अथवा प्रशिक्षण का आभाव था? इससे एक–दूसरे पर दोषारोपण की स्थिति बन जाती है और सभी का मनोबल गिर जाता है।

यह अवस्था तनावपूर्ण, महँगी, व्यर्थ और पूरी तरह से थका देने वाली होती है। सब कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन हमारे प्रयास का बड़ा हिस्सा बस बाजार में उपस्थित बनाये रखने में व्यर्थ हो जाता है। सतत विकासशील संगठनों में मानकीकरण को अपनाया है। इस विश्वास के साथ यदि किसी प्रक्रिया का समुचित पालन किया जाए तो उससे लगभग हर बार एक सुसंगत और उच्च गुणवत्ता वाले परिणाम प्राप्त होंगे।

प्रायः ऐसे संगठनों मे आधारभूत बातों को समझने में समय व्यय नहीं होता। एक नए सदस्य को समायोजित शीघ्रता से किया जा सकता है क्योंकि पालन करने के लिए स्पष्ट मार्गदर्शिकाएँ उपलब्ध होती हैं। स्थापित प्रपत्रों का उपयोग करके परियोजनाएँ तीव्रता से आरम्भ व पूर्ण होती हैं। सभी यह जानते हैं कि वे किसके लिए उत्तरदायी हैं और उनका काम सम्पूर्ण परिपेक्ष में कैसे स्थापित होता है। इससे भ्रम और संघर्ष कम होता है।

जब कोई उत्पाद व सेवा विकारपूर्ण होती है, तो संगठनों में व्यक्ति को दोष नहीं दिया जाता अपितु मानक प्रक्रिया का विश्लेषण किया जाता है। समझा जाता है, क्या मानक गलत है? क्या इनमें सुधार किया जा सकता है? इस प्रकार संस्थानों में ध्यान को दोषारोपण से हटाकर समाधान की ओर ले जाया जाता है। यह अवस्था शांत, कुशल और सशक्त बनाने वाली है। यह कर्मचारियों की मानसिक ऊर्जा को मूलभूत आवश्यकताओं की चिंताओं से मुक्त करती है और उन्हें उपयोगी व अधिक महत्वपूर्ण चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करने की ओर प्रेरित करती है।

कई संगठनों मे यह भय होता है की मानकीकरण रचनात्मकता का अंत है। परंतु यह विचार भ्रामक है। मानकीकरण से कर्मचारी दिन प्रतिदिन की चुनौतियों के कारण रहने वाली अत्यधिक व्यस्थताः से मुक्त हो जाते हैं और अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करके कार्य करने की उत्कृष्ट विधियाँ ढूंढ पाने का समय निकाल पाते हैं। प्रक्रिया में सुधार से यदि नए मानक बनाए जाते हैं और पूरे संगठन का प्रदर्शन एक नए उच्चतर स्तर पर पहुँच जाता है। तत्पश्चात' नए स्तर को स्थिर करने की यात्रा आरम्भ होती है।

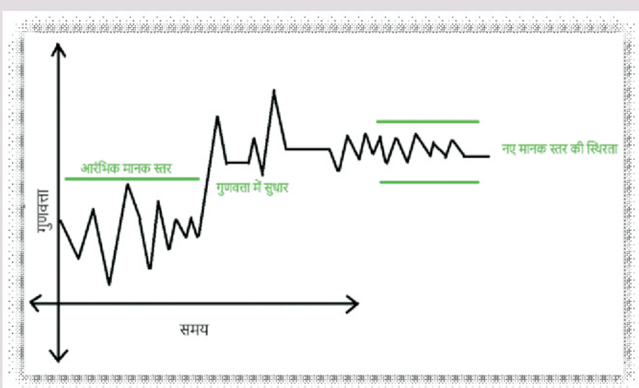

चित्र 1: सतत नवाचार द्वारा सुधार एवं मानकीकरण (जे एम जुरान की गुणवत्ता पुस्तिका से प्रेरित)

मानकीकरण की यात्रा में पहला पड़ाव यथास्थिति का विश्लेषण है। जिसमें की संगठन के उत्पादों एवं सेवा प्रदान करने से संबंधित प्रक्रियाओं की पर्याप्तता, अभिलेखन, प्रशिक्षण, समीक्षा, अनुपालन आदि विषयों पर गहनता से अनुसंधान किया जाता है। इसी प्रकार का विश्लेषण सहयोगी प्रक्रियों जैसे की मानव संसाधन प्रबंधन एवं संरचना विकास आदि का भी किया जाता है।

चित्र 2: मानकीकरण चक्र (डब्ल्यू. एडवर्ड्स डेमिंग के सिद्धांतों से प्रेरित)

इन विश्लेषणों के आधार पर समुचित सुधार के लक्ष्य व कार्यक्रमों की रूपरेखा बना कर उनका क्रियान्वयन किया जाता है।

समय समय पर समीक्षा के द्वारा क्रियान्वयन के स्तर को जान कर समुचित परिवर्तनों के द्वारा क्रियान्वयन को पूर्ण किया जाता है।

इस प्रकार मानकीकरण उत्पादों एवं सेवाओं की गुणवत्ता, समय पर उपलब्धता उचित मूल्य एवं वैधानिक व नैतिक नियमों के अनुपालन द्वारा संगठन उत्तरोत्तर प्रगति कर सकता है एवं राष्ट्र, समाज, ग्राहकों व कर्मचारियों को लाभान्वित कर सकता है। इस सिद्धि तक पहुँचने में कई वर्ष लग सकते हैं और ऐसे में निरंतर आतीयन्तीक प्रेरणा के द्वारा प्रयास करने की आवश्यकता होती है। एवं साथ-ही-साथ इस मानकीकरण नवाचार उद्धरव की यात्रा का आनंद भी लिया जाना चाहिए।

लैंगिक समानता का गीत

श्री रमनजीत सिंह
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद,
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

नारी-पुरुष न द्वन्द्व यहाँ है,दोनों मिलकर सृष्टि गढ़ें।
एक उजाले, एक उषा-सी,जीवन में रँग भरें।

नारी केवल कोमलता ही नहीं, बल, धैर्य और ज्ञान भी है।
पुरुष का हाथ थामे जब वह, तो हर संघर्ष आसान भी है।

न कोई ऊँच-नीच का अंतर,न कोई सीमाएँ कठोर रहें।
जहाँ अधिकार बराबर मिलें, वहीं सपनों के कोर रहें।

गाँव-शहर की गलियों में, अब नई धुन बजनी चाहिए।
कन्या-शिशु की हँसी से धरती फिर से सजनी चाहिए।

जब बेटी उड़ान भरे नभ में, और बेटा संवेदन सीखे,
तभी समाज के आँगन में बराबरी का सूरज दीखे।

आओ मिलकर यह दीप जलाएँ, समानता का संदेश कहे।
नारी-पुरुष दो ध्रुव नहीं हैं, एक दूजे के पूरक रहें।

आओ मिलकर संकल्प करें, सम्मान बने आधार हमारा।
नारी-पुरुष हों संग-संग सदा, जीवन हो समरस, उज्वल, प्यारा।

विद्यालयी शिक्षाः जीवन का अहम पड़ाव

दिनेश गहलोत
स्नातकोत्तर शिक्षक हिंदी
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय
क्रमांक ३ गांधीनगर छावनी

हमारे राष्ट्र भारत के बारे में प्राय: यह कहा जाता है कि प्राचीन समय में भारतवर्ष विश्व गुरु के पद को सुशोभित करता था। यदि हम इसके बारे में विचार करें तो एक प्रश्न प्रायः हमारे मन-मस्तिष्क में उठता है कि उस समय की व्यवस्था के वो कौन से सकारात्मक पक्ष रहे होंगे जिसके परिणाम स्वरूप इस देश को विश्व गुरु कहा गया। इस प्रश्न के पश्चात् हमे उत्तर प्राप्त होता है कि उस समय की शिक्षण व्यवस्था की सबसे आला विशेषता - गुरुकुल शिक्षा पद्धति । प्राचीन समय में इस देश में सैकड़ों-हज़ारों गुरुकुल हुआ करते थे जहाँ गुरु के सानिध्य में विद्यार्थी ज्ञानार्जन करते थे। गुरु विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास यथा-शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक में अपनी महनीय भूमिका का निर्वहन करते थे। धीरे-धीरे समय ने करवट ली और हमारे देश की शिक्षण व्यवस्था ने भी अपना रूप बदला । किसी भी देश की शिक्षण व्यवस्था पर उस देश के राजनैतिक एवं सामाजिक पक्षों का प्रभाव अवश्य पड़ता है।

वर्तमान समय में हमारे देश में शिक्षण व्यवस्था का जो स्वरूप हमारे सामने है उसको इस रूप में लाने वाली ब्रिटेन की सरकार थी। इस शिक्षण व्यवस्था को स्थापित करने के पीछे चाहे कैसी भी मानसिकता रही हो, लेकिन वर्तमान में इस देश के विद्यालय नई पौध को तैयार करने में काफ़ी हद तक सफल रहे हैं। हमारे देश के आगे बढ़ने में सरकारी विद्यालयों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस कृषि प्रधान भारत देश के सुदूर, दुर्गम व सीमांत क्षेत्रों में स्थित सरकारी विद्यालयों ने शिक्षा की ऐसी अलख जगाई है, जिससे इन विद्यालयों से निकली प्रतिभाओं ने प्रत्येक क्षेत्र - प्रशासनिक, सैन्य, बैंकिंग, राजनीति, खेल, विज्ञान, पत्रकारिता, साहित्य, चिकित्सा, व्यापार-वाणिज्य इत्यादि में अपनी सुदृढ़ पहचान बनाकर अपना लोहा मनवाया है।

पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश में कोचिंग कल्चर इस तरह विकसित हुआ है जैसे कि बरसात के मौसम कुकुरमुत्ता होते हैं। एक-दूसरे से आगे बढ़ने की इस अंधी दौड़ में माता-पिता आँख मूंदकर कोचिंग संस्थान पर विश्वास करते हैं तथा बच्चे की इच्छा के विपरीत उसको विद्यालय से निकालकर कोचिंग में पढ़ने को विवश किया जाता है। इस मनोवृत्ति के परिणाम अत्यंत घातक सिद्ध हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों के समाचार पत्रों के रक्तिम पन्ने हमें सोचने को विवश करते हैं कि हम किस दिशा की ओर बढ़ रहे है। विकास की अथवा विनाश की।

वर्ष 2005 से लेकर 2025 तक की घटनाएँ अत्यंत चौंकाने वाली तथा पुनः व्यवस्था को लेकर पुन: विचार करने के लिए विवश करने वाली है। इनमे से कुछ घटनाएं यथा- देश के नामचीन बिजनेस पर्सन का आत्महत्या करना, भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा सहित अखिल भारतीय सेना के अधिकारी का आत्महत्या करना, बहुराष्ट्रीय कंपनियों से लाखों का पैकेज लेने वाले कर्मचारियों का आत्महत्या करना; परीक्षा पास न करने के दबाव में आत्महत्या करना, चमक-दमक से भरपूर भारतीय फिल्म उधोग के प्रसिद्ध लोगों द्वारा आत्महत्या करना इत्यादि ।

उक्त सभी घटनाओं के पीछे यदि कोई कारण जानने की चेष्टा करे तो उत्तर प्राप्त होगा- मानसिक दबाव को सहन नहीं कर पाना। प्रतियोगी परीक्षा, कोचिंग संस्थानों की होड़ में विद्यार्थी को विद्यालय से अलग कर दिया जाता है। विद्यार्थी को विद्यालय में केवल पाठ्यपुस्तक का ज्ञान ही नहीं दिया आता बल्कि उसके व्यवहार में नैतिक मूल्यों के संरक्षण व संवर्धन का कार्य भी केवल विद्यालय के शिक्षकों द्वारा ही किया जाता है। विद्यालय में विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाता है। आज के युग में पाठ्यपुस्तकें तो कोई भी पढ़ा सकता है लेकिन प्रत्येक पाठ के साथ जो नैतिक मूल्य है, उससे विद्यार्थी को परिचित केवल विद्यालय का प्रांगण ही करा सकता ।

आज विद्यार्थी विद्यालय को छोड़कर कोचिंग संस्थानों में कोल्हू के बैल की तरह जुतकर अच्छे अंक अर्जित कर इच्छित संस्थान में प्रवेश प्राप्त कर लेते हैं, इच्छित नौकरी व पद प्राप्त कर लेते हैं, तो फिर वह कौनसा कारण है जिसकी वजह से वह अपना जीवन समाप्त कर लेते हैं। इसका एक ही उत्तर है- कि वे सभी लोग अपने जीवन में सफल तो हो गए लेकिन सुखी नहीं हो पाए, खुश नहीं रह पाए ।

एक विद्यार्थी विद्यालय के प्रांगण में लिखना, पढ़ना ही नहीं सीखते बल्कि इसके साथ-साथ खेल प्रतियोगिता, विज्ञान प्रतियोगिता एवं अनेक पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भागलेले हैं। वे संघर्ष करते है, लड़ते हैं, भिड़ते हैं, जीतते है, हारते हैं और सबसे अहम बात हार को तथा हार के दबाव को स्वीकार करना सीखते हैं, जहां अच्छे काम के लिए सराहना और पुरस्कार मिलता है वहीं गलती करने पर डांट-फटकार भी मिलती है।

विद्यालय प्रत्येक विद्यार्थी को ऐसा वातावरण प्रदान करता है कि वो अपनी सपनों की उड़ान भरना सीखता हैं। प्रत्येक विद्यार्थी को विद्यालय में सदैव सकारालक पुनर्बलन नहीं मिलता है बल्कि शिक्षकों से, सहपाठियों से मित्रों से नकारात्मक पुनर्बलन भी मिलता है जो उसे भविष्य में आने वाली मुसीबतों से लड़ने का अभ्यास कराता है। अपने परिवार से निकलकर जो बच्चा विवद्यालय के बहुरंगी वातावरण के संपर्क में आता है तथा सरलता से अथवा संघर्ष करके स्वयं को उस वातावरण में सहजता से स्थापित कर लेता है वह बच्चा भविष्य में बड़े से बड़े संकट, दुःख में भी अपने मानसिक दबाव की नियंत्रित कर लेगा तथा आत्महत्या जैसा कृत्य करने का विचार भी नहीं करेगा।

मेरा निवेदन सभी अभिभावकों से कि अपने बच्चे को किसी रेस का घोड़ा ना बनाएं तथा उसको स्कूली शिक्षा किसी न किसी विद्यालय से पूर्ण करने दें, ना कि दूसरे लोगों की नकल करते हुए उसे विद्यालय से दूर किसी कोचिंग संस्थान का जबरन हिस्सा बनाएं।

कोई भी विद्यार्थी कोचिंग संस्थानों के दमघोटू माहौल में भानसिक रूप से सुमृद्ध नहीं रह सकता, इसलिए आज आवश्यकता है कि विद्यार्थी को विद्यालय से जुड़ने का अवसर अवश्य प्रदान करें तथा उसको मानसिक रूप से परिपक्व होने दें।

हमारा सपना है कि हमारा देश वर्ष 2047 तक विकसित भारत बने लेकिन महत्त्वपूर्ण यह भी है कि हमारा देश विकसित भारत के साथ-साथ खुशहाल भारत भी बनें और देश की खुशहाली के रास्तें विद्यालयों के आँगन से प्रारम्भ होते हैं क्योंकि विद्यालय की कक्षाओं के श्यामपट्ट पर केवल अक्षर नहीं लिखे जाते बल्कि लिखे जाते हैं विद्यार्थियों के भविष्य।

सचेतना बनाम निर्णायकता: जीवन की रस्सी पर संतुलन

राकेश कुमार शर्मा
मुख्य प्रबन्धक
बड़ौदा एपेक्स अकादमी,गांधीनगर

पिछले हफ्ते, मैं अपनी छोटी बेटी के स्कूल में आयोजित ओपन हाउस टेस्ट में गया। यह एक ऐसा अवसर है जहाँ बच्चे अपने माता-पिता के सामने अपनी शैक्षणिक प्रगति प्रदर्शित करते हैं। यह परंपरा हर स्कूल में प्रचलित है, और अभिभावक भी इसे उत्साहपूर्वक स्वीकार करते हैं। लेकिन उस दिन, स्कूल जाते समय मेरी नज़र एक ऐसे दृश्य पर पड़ी जिसने मुझे ठहरने पर मजबूर कर दिया।

रास्ते में, सड़क किनारे एक नन्ही बच्ची दो बाँसों के बीच बंधी रस्सी पर संतुलन बनाए चल रही थी। उसके छोटे-छोटे कदम सावधानी से आगे बढ़ रहे थे। हल्की हवा, आसपास जमा लोग और उसके चेहरे पर चमकती मुस्कान। पास ही एक पात्र में कुछ 10-20 रुपये के नोट रखे थे। लोग पैसे दे रहे थे, लेकिन बच्ची का ध्यान केवल रस्सी पर था। वह अपने काम में पूरी तरह डूबी हुई थी, जैसे जीवन की हर मुश्किल को मुस्कान के साथ जीत रही हो। पास ही उसके पिता, पीली शर्ट में, आत्मविश्वास और सुरक्षा का भाव लिए खड़े थे। उनके चेहरे पर अपनी बेटी के कौशल पर अटूट भरोसा झलक रहा था, शायद उससे कहीं ज़्यादा, जितना किसी स्कूल में आए अभिभावक को अपने बच्चे पर होता है।

मेरी बेटी और मैंने यह दृश्य देखा। मेरी बेटी ने इसे देखा नहीं, बल्कि जिया।

दो नज़रिए, एक दृश्य – और दो दुनियाएँ

घर लौटकर मैंने एक प्रयोग किया। मैंने इस दृश्य को दो लोगों से लिखवाया – मेरे 35 वर्षीय चचेरे भाई और मेरी 9 वर्षीय बेटी से।

मेरे चचेरे भाई का उत्तर:

1. जीवन कठिन है, और यह बच्ची उसी संघर्ष का प्रतीक है।
2. यह हमारे देश की गरीबी की झलक है।
3. बच्चों को इससे लचीलापन और संघर्ष करना सीखना चाहिए।
4. समाज को इनकी मदद करनी चाहिए।
5. हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार है।

मेरी बेटी का उत्तर:

1. वह बच्ची मुस्कुरा रही थी।
2. उसने लाल कपड़े पहने थे।
3. उसके पापा ने पीली शर्ट पहनी थी।
4. पास में एक फलवाला बैठा था।
5. मुझे वह अच्छी लगी क्योंकि उसने मेरा मनोरंजन किया।

फिर उसने मासूमियत से पूछा, पापा, वो स्कूल जाती है क्या?

सचेतना बनाम निर्णायकता

दोनों प्रतिक्रियाएँ एक ही दृश्य पर थीं, लेकिन दोनों की दुनियाएँ बिल्कुल अलग थीं।

मेरे चचेरे भाई का उत्तर **निर्णायक** था। उन्होंने दृश्य को सामाजिक मुद्दों – गरीबी, संघर्ष और शिक्षा – से जोड़ा। उन्होंने क्षण को नहीं देखा, बल्कि उसका मतलब खोजा।

मेरी बेटी का उत्तर सचेतन था। उसने वही लिखा जो उसकी आँखों ने देखा और दिल ने महसूस किया – मुस्कान, रंग और माहौल। उसकी जिज्ञासा सरल थी, बिना किसी पूर्वाग्रह के।

आज का समय: सचेतना का अभाव, निर्णायकता की अधिकता

आज हमारी सबसे बड़ी चुनौती यही है – हम सचेतन कम, निर्णायक ज़्यादा हो गए हैं।

- किसी को देखते ही उसके हालात पर राय बना लेते हैं।
- किसी घटना को समझने से पहले ही उसे सही-गलत का लेबल दे देते हैं।
- किसी व्यवहार का कारण जाने बिना उसे अच्छा या बुरा मान लेते हैं।

हमारे दिमाग में एक पैटर्न बन गया है: पहले जज करो, फिर समझो। यही कारण है कि हम तनावग्रस्त, दुखी और रिश्तों में उलझे रहते हैं। हम हर क्षण को अनुभव करने से पहले उसे विश्लेषण की कसौटी पर कसने लगते हैं।

विक्टर फ्रांकल की सीख: वह स्पेस ही सबसे महत्वपूर्ण है

प्रसिद्ध मनोचिकित्सक विक्टर फ्रांकल ने कहा था:

Stimulus और Response के बीच एक स्पेस होता है। उसी स्पेस में हमारी आज़ादी और विकास की शक्ति छिपी है।

- Stimulus: कोई घटना, दृश्य या परिस्थिति जो हमें प्रभावित करती है।
- Response: हमारी प्रतिक्रिया – हम क्या सोचते, कहते या करते हैं।
- स्पेस: वह पल, जहाँ हम रुककर देख सकते हैं, महसूस कर सकते हैं, और सोच-समझकर जवाब दे सकते हैं।

यह स्पेस ही सचेतना है। लेकिन आज हम इस स्पेस को खत्म कर चुके हैं।

- घटना घटी नहीं और हमारी राय तैयार।
- कोई बोला नहीं और हमने निर्णय सुना दिया।
- परिस्थिति बनी नहीं और हमने अर्थ निकाल लिया।

यही कारण है कि हम बाद में पछताते हैं – काश मैं थोड़ा रुका होता काश मैंने पहले समझा होता

सचेतना: वर्तमान का सौंदर्य

सचेत होना यानी:

- वर्तमान क्षण में पूरी तरह उपस्थित रहना।
- बिना लेबल, बिना निष्कर्ष के, अनुभव को वैसे ही स्वीकार करना।
- उस पल में डूब जाना, जैसा वह है।

मेरी बेटी ने उस बच्ची को देखा तो कोई सामाजिक सिद्धांत नहीं गढ़ा। उसने बस मुस्कान, रंग और माहौल देखा। यही सचेतना है – यहाँ और अभी में जीने की कला।

निर्णायकता: ज़िम्मेदारी का मार्ग

लेकिन केवल सचेतना पर्याप्त नहीं। निर्णायकता भी ज़रूरी है।

- यह हमें समाज के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी याद दिलाती है।
- यह हमें समस्याओं के समाधान की दिशा दिखाती है।
- यह हमें कार्रवाई के लिए प्रेरित करती है।

अगर हम केवल सचेत रहें, तो शायद उस बच्ची की शिक्षा के लिए कुछ न करें। लेकिन सचेतन होकर निर्णय लें, तो हम संवेदनशील और संतुलित कदम उठा सकते हैं।

जीवन का सबसे बड़ा कौशल: संतुलन

रस्सी पर चलती उस बच्ची ने जीवन का सबसे बड़ा सबक दिया – संतुलन।

- एक तरफ बच्चे जैसी नज़र, जो बिना पूर्वाग्रह के देखे।
- दूसरी तरफ वयस्क का मस्तिष्क, जो अर्थ निकाले और ज़िम्मेदारी ले।

हमें भी यही करना है: पहले सचेत होना, फिर निर्णय लेना। पहले देखना, फिर समझना। पहले अनुभव करना, फिर प्रतिक्रिया देना।

समाज और रिश्तों में सचेतना

अगर हम अपने रिश्तों, काम और समाज में सचेतना को जगह दें, तो कई समस्याएँ खुद-ब-खुद हल हो जाएँगी।

- किसी की ग़लती पर तुरंत जज करने के बजाय, यह समझें कि उसने ऐसा क्यों किया।
- किसी की राय पर बहस शुरू करने से पहले, उसके अनुभव को समझें।
- परिस्थिति बदलने पर घबराने के बजाय, उसे पहले देखें और महसूस करें।

निष्कर्ष: सचेतना और निर्णायकता – दोनों ज़रूरी

जीवन हमें रोज़ वही सिखाता है जो उस बच्ची ने रस्सी पर चलकर सिखाया – संतुलन ही सबसे बड़ी कला है।

- सचेतना हमें शांत, धैर्यवान और संवेदनशील बनाती है।
- निर्णायकता हमें ज़िम्मेदार, सक्रिय और दूरदर्शी बनाती है।

सच्ची बुद्धिमत्ता इन दोनों के मेल में है – बच्चे की तरह देखना और बड़ो की तरह सोचना।

अंतिम विचार

जीवन एक तनी हुई रस्सी है और हम उस पर चलने वाले नन्हे पथिक। हर कदम पर हमें सचेतना की मुस्कान और निर्णायकता का भरोसा चाहिए। **विक्टर फ्रांकल का स्पेस वह जादुई क्षण है, जहाँ हम रुककर जीवन को न केवल देखते हैं, बल्कि उसे गले लगाते हैं।** यह स्पेस हमें नई आँखें देता है – जो सुंदरता को देखे और नया मस्तिष्क – जो समझदारी से कदम उठाए। यही वह संतुलन है जो हमें न केवल जीवित रखता है, बल्कि जीने की कला सिखाता है।

सदस्य कार्यालयों के प्रमुख एवं राजभाषा प्रभारी

क्रम सं .	कार्यालय का नाम	कार्यालय का पता	कार्यालय प्रमुख का नाम	राजभाषा अधिकारी का नाम एवं मोबाइल नं.
	बड़ौदा एपेक्स अकादमी,गांधीनगर	सेक्टर 11, गांधीनगर	श्री सुनील सिन्हा महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, नराकास गांधीनगर (23973200/221)	श्री सर्वेश तिवारी मुख्य प्रबंधक एवं सदस्य सचिव नराकास 7303518927
1	जनगणना कार्य निदेशालय-गुजरात	जनगणना भवन, सेक्टर-10 ए, गांधीनगर, गुजरात	श्री सुजल जे. मयात्रा भा.प्र.से.	सुश्री नीलिमा चौरसिया सहायक निदेशक- 9687000613
2	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गांधीनगर	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, पालज, गांधीनगर,	प्रो. नितिन वी जॉर्ज प्रभारी - कुल सचिव	विपुल कुमार चौधरी उप कुल सचिव - 7879100734
3	राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, गांधीनगर	घ-0 रोड, गांधीनगर-382007 गुजरात	प्रो.(डॉ.) समीर सूद निदेशक	श्री मनीष शर्मा, सहायक प्राध्यापक 9899807140
4	राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान-भारत, गांधीनगर	ग्रामभारती, अमरापुर,गांधीनगर	डॉ. अरविंद च. रानडे,निदेशक	डॉ. नितिन मौर्य, वैज्ञानिक-ई
5	प्लाज़्मा अनुसंधान संस्थान, गांधीनगर	भाट, इन्दीरा पुल के पास,गांधीनगर	डॉ. तापस गांगुली,निदेशक	डॉ. संध्या दवे, हिन्दी अधिकारी
6	राष्ट्रीय न्यायालयिक विज्ञान विश्व विद्यालय, गांधीनगर	सेक्टर-9, गांधीनगर	प्रो. (डॉ.) एस. ओ. जुनारे, निदेशक	श्री वी. के. पाण्डेय, राजभाषा अधिकारी 9426769066
7	केनरा बैंक, अंचल कार्यालय	7वीं मंजिल, गिफ्ट वन टावर, गिफ्ट सिटी, गांधीनगर	श्री रणजीत कुमार झा महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख	श्री पी.एस. नेगी, वरिष्ठ प्रबंधक 7986062183
8	भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, राज्य इकाई गुजरात	सेक्टर-10ए, गांधीनगर	श्री सुधांशु शेखर दत्ता उप महानिदेशक	श्री अमित श्रीवास्तव 8107010652
9	पावरग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, देहगाम उपकेंद्र	गणेशपुरा गाँव के पास, देहगाम, गांधीनगर,	श्री रतनकुमार वरिष्ठ उप महाप्रबंधक	श्री रवि पुरोहित 9660354958
10	होटल प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद	भाईजीपुरा पाटिया,कोबा गांधीनगर	श्री कल्याण मुखर्जी,प्राचार्य	डॉ. जया शर्मा - 9426366644
11	राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, अहमदाबाद	पालज, वायुसेना स्टेशन के सामने, गांधीनगर	प्रो. शैलेंद्र सराफ़ निदेशक	श्री राजू प्रसाद 8013224305
12	क्षेत्रीय कार्यालय, भारतीय खान ब्यूरो, गांधीनगर	सेक्टर 10 ए, गांधीनगर, गुजरात	डॉ. नरेश कटारिया क्षेत्रीय खान नियंत्रक	श्री मोहम्मद निमर,उप खान नियंत्रक 9177753493
13	राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, गुजरात राज्य एकक, गांधीनगर	ब्लॉक 13, दूसरी मंजील, नया सचिवालय, गांधीनगर	श्री प्रमोद कुमार सिंह वैज्ञानिक-जी एवं राज्य सूचना विज्ञान अधिकारी	श्री कुणाल देराश्री उप निदेशक (आई.टी) 9460010730
14	सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क्स ऑफ इंडिया, गांधीनगर	9वीं मंज़िल, गिफ्ट वन टावर, गिफ्ट सिटी,गांधीनगर-382355	श्रीमती सोनल भाटवडेकर निदेशक	श्री अभिषेक तिवारी 99999411001
15	भारतीय स्टेट बैंक प्रशासनिक कार्यालय, गांधीनगर	सेक्टर 10बी सचिवालय के सामने, गांधीनगर	श्री देवेन्द्र कुमार साहू उप महाप्रबंधक	सुश्री रोहिणी सिंह 9999159232
16	बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, गांधीनगर	सेक्टर-16, गांधीनगर	सुश्री दीप्ति अग्रवाल आंचलिक प्रबंधक	सुश्री रूमी देसवाल 7990266146
17	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय	क्षेत्रीय कार्यालय, द्वितीय तल, नवरंगपुरा, अहमदाबाद	श्री अश्विनी कुमार त्रिपाठी क्षेत्रीय प्रमुख	श्री देवेश वरिष्ठ प्रबंधक 7977841946
18	वाप्कोस लिमिटेड, जल शक्ति मंत्रालय	515, श्री उगती कॉर्पोरेट पार्क, कुडासन, गांधीनगर	श्री अशोक बहुगुणा मुख्य अभियंता	श्री राज कुमार 9925279578
19	भास्कराचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुप्रयोग और भू-सूचना विज्ञान संस्थान, भारत सरकार	च-० सर्कल के पास, इंदुलाल याग्निक मार्ग, गांधीनगर	श्री तेजपाल सिंह महा निदेशक	श्री अनिल कुमार त्रिपाठी 6394613064
20	कार्यालय मुख्य अभियंता, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, गांधीनगर	चतुर्थ तल,केंद्रीय निर्माण सदन, सेक्टर 10 ए, गांधीनगर	श्री अतुल वामनराव साधनकर मुख्य अभियंता	श्री मनीष कुमार बाजक 9408005121
21	अंतर राज्य पुलिस बेतार स्टेशन	सेक्टर 10 बी, गांधीनगर	श्री संजीव अग्रवाल,संचार अधिकारी	श्री संजीव कुमार 9033972622
22	केंद्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय	क्षे.कार्यालय,सेक्टर-30,गांधीनगर	श्री धर्मेंद्र पटले, उपायुक्त	श्री पवन कुमार शर्मा-9712143181
23	जवाहर नवोदय विद्यालय	देहगाम, गांधीनगर	श्री दिनेश कुमार गुप्ता,प्राचार्य	श्रीमती हर्षिदा परमार- 7436087355
24	केंद्रीय जल आयोग-गांधीनगर	नर्मदा तापी भवन,सेक्टर-10	श्री नित्यानंद राय,मुख्य अभियंता	श्री मयंक आचार्य-9825078963
25	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान	सेक्टर 11, गांधीनगर	डॉ.राम नारायण मीणा-क्षे.निदेशक	श्री खेमराज जांगिड़ -9408783565

सदस्य कार्यालयों के प्रमुख एवं राजभाषा प्रभारी

क्रम सं.	कार्यालय का नाम	कार्यालय का पता	कार्यालय प्रमुख का नाम	राजभाषा अधिकारी का नाम एवं मोबाइल नं.
26	कार्यालय पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केंद्र, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल, गांधीनगर	कार्यालय पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केंद्र,केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल,	श्री धमेंद्र सिंह विसेन, पुलिस उप महानिरीक्षक	श्री जे.पी. सिंह 9450500050
27	सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ़)	फ्रंटियर मुख्यालय, गांधीनगर	श्री अभिषेक पाठक, महानिरीक्षक भा.पु.से.	श्री अमल कुमार 0792320011
28	राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम	सेक्टर 16, गांधीनगर	श्री संजय कुमार,क्षेत्रीय निदेशक	श्री रोहित खत्री-7838787417
29	न्यू इंडिया इंश्योरेंस, मण्डल कार्यालय	कुडासन, गांधीनगर	श्री गौरांग दवे वरिष्ठ व्यवसाय प्रबंधक	श्रीमती ध्रुवी तैलवानी 8320500353
30	राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर	कोबा हाइवे, कूड़ासण, गांधीनगर	श्री प्रशांत शर्मा क्षेत्रीय प्रबन्धक	श्री अंकित शर्मा 7597459511
31	मुख्यालय तटरक्षक क्षेत्र (उ.प.)	सेक्टर,11, गांधीनगर	महानिरीक्षक टेकुर शशी कुमार त.प. कमांडर तटरक्षक क्षेत्र (उ.प.)	श्री इन्दु शेखर शर्मा 9408783565
32	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर	सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर	श्री अनंतप्रीत सिंह क्षेत्रीय प्रमुख	श्री जीबीत 7981938100
33	इंडियन बैंक, शाखा कार्यालय	इंडियन बैंक, शाखा सेक्टर-21 गांधीनगर	श्री अमित ठाकुर वरिष्ठ शाखा प्रबंधक	श्री भुपेश बारोट 8349660355
34	पंजाब नैशनल बैंक,शाखा कार्यालय	पंजाब नैशनल बैंक सेक्टर-16 शाखा	जागृती मीणा-शाखा प्रमुख	श्री लक्ष्मी मीणा-9205748660
35	यूको बैंक, शाखा कार्यालय	यूको बैंक, सेक्टर 16 शाखा	मुकेश कुमार मीणा, शाखा प्रमुख	श्री प्रकाश अग्रवाल
36	बैंक ऑफ महाराष्ट्र, शाखा कार्यालय	बैंक ऑफ महाराष्ट्र,सेक्टर 21 शाखा	श्री श्रीकांत शेखर,शाखा प्रमुख	श्री श्रीकांत शेखर-075 88843809
37	भारतीय खेल प्राधिकरण	नेताजी सुभाष पश्चिमी केंद्र , सेक्टर 15 गांधीनगर	श्री मणिकांत शर्मा क्षेत्रीय निदेशक	श्रीमती अदिती सिंह निदेशक - 9433006059
38	क्षेत्रीय कौशल विकास एवं उदयमशीलता निदेशालय	डॉ. जीवराज मेहता भवन, सेक्टर 10, गांधीनगर	श्री केतन पटेल क्षेत्रीय निदेशक	श्री सोहिल खलानी 7016650586
39	राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, गांधीनगर	क्षेत्रीय कार्यालय, सेक्टर 11, गांधीनगर	श्री प्रदीप अत्री क्षेत्रीय अधिकारी	श्री सौरभ गौतम 9149378130
40	राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद, गांधीनगर	जीआईडीसी सेक्टर 26 गांधीनगर	श्री राहुल किरकिरे क्षेत्रीय निदेशक	आशीष कुमार साहू 9638684109
41	उदयभाणसिंहजी क्षेत्रीय सहकारी प्रबंधन संस्थान, गांधीनगर	सेक्टर 30, गांधीनगर	श्रीमती नीलु पांडे निदेशक	श्री सवजी चावड़ा 9724696712
42	इंडियन ओवरसीज बैंक क्षेत्रीय कार्यालय	क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर	श्री कुमार प्रतीक क्षेत्रीय प्रबंधक	सुश्री प्रियंका दास 7827573527
44	पंजाब एंड सिंध बैंक आंचलिक कार्यालय	पंजाब एंड सिंध बैंक, आं.का.,गिफ्ट सिटी, गांधीनगर	श्री राजेश मल्होत्रा आंचलिक प्रबंधक	श्री सुनील गहलोत 7009914708
46	केंद्रीय विद्यालय, क्रमांक -2	केंद्रीय विद्यालय, सीआरपीएफ, गांधीनगर	डॉ. ममता सिंह प्राचार्य	श्री चैतन्य कुमार शुक्ला 942533126
47	केंद्रीय विद्यालय, क्रमांक -3	केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -3, गांधीनगर छावनी	श्री पवन सुथार प्राचार्य	श्री दिनेश गहलोत 8503016008
48	भारतीय जीवन बीमा निगम	भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय, गांधीनगर	श्री ललित गुप्ता	श्री मनीष पंडया 9904151862
49	केनरा बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, गांधीनगर	केनरा बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, सेक्टर 16 गांधीनगर	श्री विनोद विष्णु जोशी क्षेत्रीय प्रमुख	श्री विकास कुमार 7737221793
50	केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -1	केंद्रीय विद्यालय क्रमांक -1, सेक्टर 30, गांधीनगर	श्री आलोक तिवारी प्राचार्य	डॉ. विजय कुमार साव 9831652880
51	सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क केंद्र	इन्फ्लिबनेट केंद्र, इन्फोसिटी गांधीनगर	प्रो. देविका पी मदल्ली निदेशक	श्री हरीश चंद्र प्रशासनिक अधिकारी 8511615693

सुर संध्या-3.0 की झलकियां

प्यारे भारत देश

गगन-गगन तेरा यश फहरा
पवन-पवन तेरा बल गहरा
क्षिति-जल-नभ पर डाल हिंडोले
चरण-चरण संचरण सुनहरा
ओ ऋषियों के त्वेष
प्यारे भारत देश।।

वेदों से बलिदानों तक जो होड़ लगी
प्रथम प्रभात किरण से हिम में जोत जागी
उतर पड़ी गंगा खेतों खलिहानों तक
मानो आँसू आये बलि-महमानों तक
सुख कर जग के क्लेश
प्यारे भारत देश।।

तेंरे पर्वत शिखर कि नभ को भू के मौन इशारे
तेंरे वन जग उठे पवन से हरित इरादे प्यारे!
राम-कृष्ण के लीलालय में उठे बुद्ध की वाणी
काबा से कैलाश तलक उमड़ी कविता कल्याणी
बातें करे दिनेश
प्यारे भारत देश।।

जपी-तपी, संन्यासी, कर्षक कृष्ण रंग में डूबे
हम सब एक, अनेक रूप में, क्या उभरे क्या ऊबे
सजग एशिया की सीमा में रहता केद नहीं
काले गोरे रंग-बिरंगे हममें भेद नहीं
श्रम के भाग्य निवेश
प्यारे भारत देश।।

वह बज उठी बासुँरी यमुना तट से धीरे-धीरे
उठ आई यह भरत-मेदिनी, शीतल मन्द समीरे
बोल रहा इतिहास, देश सोये रहस्य है खोल रहा
जय प्रयत्न, जिन पर आन्दोलित-जग हँस-हँस जय बोल रहा,
जय-जय अमित अशेष
प्यारे भारत देश।।

-माखनलाल चतुर्वेदी